हर प्रकार की हिन्दी पुस्तकें हमसे मंगाइये

लहरी बुक डिपो

श्री दुर्गाप्रसाद खत्री मार्ग, रामकटोरा

वाराणसी

लाल पञ्जा

श्री दुर्गाप्रसाद खत्री

लहरी बुक डिपो

वाराणसी

॥ श्रीः ॥

लाल पञ्जा

(वैज्ञानिक क्रान्तिकारी उपन्यास)

श्री दुर्गाप्रसाद खत्री लिखित

लहरी बुक डिपो

वाराणसी

॥ श्रीः ॥

लाल-पञ्जा

क्रान्तिकारी वैज्ञानिक उपन्यास

लेखक—श्री दुर्गाप्रसाद खत्री

लहरी बुक डिपो,
श्री दुर्गाप्रसाद खत्री मार्ग
वाराणसी
१९८५

प्रकाशक—
श्री कमलापति खत्री
लहरी बुक डिपो,
वाराणसी

NOVEL

LAL-PANJA

DURGA PRASAD KHATRI

चौदहवां संस्करण

[सर्वाधिकार प्रकाशक के आधीन]

मुद्रक—
लहरी प्रेस,
वाराणसी

लाल-पञ्जा

वह विज्ञान की सहायता से डाका डालता है, पर दुश्मन वह अमीरों का है गरीबों का नहीं ! वह पुलिस से भिड़ता है भलेमानुसों से नहीं, और कह के, खबर दे कर, डाके मारता है—पर मजाल नहीं कि कोई उसके बदन पर हाथ तो रख दे !!

पर वह है कौन.....?

श्री दुर्गाप्रसाद खत्री रचित—

प्रतिशोध—
लाल-पञ्जा—
रक्त-मण्डल—
सुफेद शैतान—
सुवर्ण रेखा—
स्वर्ग-पुरी—
सागर सम्राट—
साकेत—
काला चोर—
बलिदान—
कलंक कालिमा—
संसारचक्र—
माया—

श्री दुर्गाप्रसाद खत्री मार्ग, बाराणसी।
प्रकाशक—लहरी बुक डिपो,

* श्रीः *

लाल-पञ्जा

(क्रान्तिकारी उपन्यास)

[१]

मोती की माला

(१)

आगरे की ग्राण्ट रोड पर मशहूर फतेहाबाद बंक का दफ्तर है। दफ्तर क्या इसे एक महल कहना उचित होगा, क्योंकि जिस समय का हाल हम लिख रहे हैं उस समय उत्तरी हिन्दुस्तान में फतेहाबाद बंक की टक्कर का मातबिर तथा पूँजीदार और कोई भी बंक न था। प्रायः सभी बड़े बड़े शहरों में इसकी शाखाएँ थीं, पर हेड आफिस आगरा होने के कारण इस जगह के कारबार का कुछ पूछना ही न था। बड़े हाल में सैकड़ों क्लर्क काम करते थे और रुपयों की खनखनाहट के मारे कान बहरे होते थे। रोज हजारों नहीं बल्कि लाखों रुपयों के लेन देन होते थे तथा बंक को मुनाफा भी भरपूर होता था, फिर शान शौकत और सजावट की कमी क्या हो सकती थी!

बंक के बड़े मैनेजर पण्डित रामनाथ निरमा काश्मीरी ब्राह्मण हैं। करेन्सी और फाइनेन्स के मामले में श्री रामनाथ प्रसिद्ध और विज्ञ पण्डित माने जाते थे और इसी से फतेहाबाद जैसे मशहूर बंक के जनरल मैनेजर बनने का इनका सौभाग्य हुआ था। इनकी उम्र लगभग पैंतालिस वर्ष के होगी। चेहरा सुडौल और भरा हुआ, आँखें चमकदार और तेज, मूंछ दाढ़ी सफाचट, बदन मजबूत और भरा

हुआ था। हमेशा अंगरेजी पोशाक कोट पैन्ट हैट टाई आदि से ही सुसज्जित रहा करते थे और अपने घर में भी अंगरेजी फैशन से ही रहते थे।

इस समय पण्डित रामनाथ अपने दफ्तर में लम्बे टेबुल के सामने गद्दीदार कुर्सी पर बैठे हुए हैं। सामने दो क्लर्क खड़े और बहुत से कागजों का ढेर लगा हुआ है जिन पर वे दस्तखत कर रहे हैं और दोनों क्लर्क उठाते, सोखते से सुखाते, तथा सरियाते जाते हैं। इसी समय दरबान ने सामने आ सलाम कर कहा, "हुजूर, शम्साबाद के राजा साहब तशरीफ ला रहे हैं।"

शम्साबाद के राजा साहब इस बंक के सबसे अमीर और मालदार ग्राहक थे, साथ ही बंक के शेयर-होल्डर और डायरेक्टरों में भी थे। इस प्रान्त में इनके जैसा बड़ा अमीर और दौलतमन्द अन्य कोई जमींदार न था। प्रायः इनका काम नौकरों और गुमाश्तों के जरिये ही हुआ करता था, इसी से आज स्वयम् इनके आने की खबर सुन पण्डित रामनाथ को कुछ आश्चर्य हुआ। अभी वे कुरसी से उठ ही रहे थे कि दर्वाजे का रेशमी पर्दा हटा और राजा साहब अन्दर आ पहुंचे। पण्डितजी ने आगे बढ़ राजा साहब से हाथ मिलाया। दोनों क्लर्कों ने कुछ सकपकाते हुए लम्बी सलामें कीं, और एक ने मखमली कुर्सी आगे बढ़ाई। राजा साहब ने उस पर बैठते हुए कहा, "पंडितजी, मैं आपके कीमती वक्त का कुछ हिस्सा लेने आया हूं।" पण्डितजी ने कहा, "हां हां, फरमाइये, बेशक कोई जरूरी बात होगी जो आपने खुद ही तकलीफ की!"

राजा साहब यह सुन कर उन दोनों क्लर्कों की तरफ देखने लगे। पंडितजी ने उनका मतलब समझ दोनों को चले जाने का इशारा किया और उनके चले जाने के बाद राजा साहब ने गहरी निगाह से चारो तरफ देखा और किसी को भी उस कमरे में न पा अपनी कुरसी और पास घसीटे वे धीरे धीरे कहने लगे, "पण्डितजी, मैं एक बड़े भारी तरद्दुद में पड़ कर आपके पास आया हूं।"

पण्डितजी ताज्जुब के साथ राजा साहब का मुंह देखने लगे। भला राजा साहब को किस बात का तरद्दुद? उनके तो खुद लाखों रुपये इधर उधर लगे रहा करते हैं! पण्डितजी का सोचना विचारना चिन्ता फिक्र तरद्दुद सब कुछ रुपये ही के सम्बन्ध में होता था अस्तु राजा साहब के तरद्दुद को भी उन्होंने द्रव्य सम्बन्धी ही कोई तरद्दुद समझा और कहा, "मैं और यह बंक आपकी सेवा में हाजिर हैं, आप अब्दी कहें कि क्या बात है?"

राजा साहब ने शायद पण्डितजी की बात सुनी नहीं क्योंकि वे अपनी जेबों में कुछ ढूंढ़ रहे थे। आखिर भीतर की जेब से उन्होंने लाल रंग का एक लिफाफा निकाला और पण्डितजी के हाथ में देकर कहा, "यही मेरे तरद्दुद का सबब है।"

पण्डित रामनाथ ने सरसरी निगाह से उस लिफाफे को देखा। किसी तरह के मजबूत मोटे लाल कागज को चौफोर मोड़ के यह भद्दा लिफाफा बनाया गया था। उस पर पता या नाम तो किसी का भी न था, पर हां जोड़ पर बड़ी सी लाल रंग की एक मोहर जरूर की हुई थी। पण्डितजी की तेज निगाहों ने तुरन्त ही यह भी देख लिया कि इस मोहर पर किसी आदमी या कारखाने का नाम अथवा मोनोग्राम नहीं है बल्कि पाँजों उँगलियों और हथेली सहित दो छोटे पंजों का चिह्न बना हुआ है, पर इधर बहुत गौर न करके पण्डितजी ने उसके अन्दर रक्खी हुई चीठी निकाली और राजा साहब से पूछा, "क्या मैं इसे पढ़ूं?" राजा साहब के "जी हां" कहने पर उन्होंने उसे खोला और पढ़ा। टेढ़े मेढ़े कुढंगे और अजीब बदसूरत हरफों में यह मजमून था :—

"राजा साहब,

"आज से तीन दिन के अन्दर वह मशहूर मोती की माला जो आपको अपनी छोटी नानी साहिबा से मिली है जिनका हाल ही में इन्तकाल हुआ है, हमारे पास पहुंच जानी चाहिये। शहर के बाहर पंचपेड़वा के कुंए पर जो कूआं है, उसमें डाल देने से वह हमें मिल जायगी।

"खबरदार! खबरदार!! अगर तीन दिन के भीतर माला उस कूएं में नहीं डाल दी गई तो आपके लिए अच्छा न होगा! होशियार, होशियार!!"

उस चीठी का मजमून बस इतना ही था और इसके नीचे किसी के दस्तखत के बजाय लाल रंग की स्याही से वैसा ही दो पंजों का निशान बना हुआ था जैसा पण्डितजी मोहर के ऊपर देख चुके थे।

चीठी को पढ़ पण्डितजी ने राजा साहब की तरफ देखा जो बड़ी बेचैनी और घबराहट में डूबे हुए मालूम होते थे। पण्डितजी ने कहा, "किसी बदमाश की शैतानी है!" राजा साहब ने एक लम्बी सांस लेकर कहा, "आप इस माला का पूरा हाल नहीं जानते इसी से ऐसा कहते हैं। आप पहिले इस माला को देखिये और तब मुझसे इसका हाल सुनिये।"

राजा साहब ने मखमल का एक केस भीतरी जेब से निकाला और टेबुल पर

रख कर उसे खोल अन्दर से मोतियों की एक माला निकाल कर पण्डितजी के हाथ पर रख दी। पण्डितजी ने बड़ी मुश्किल से एक ताज्जुब की आवाज अपने मुँह से निकलने से रोकी। इतने बड़े बड़े सुडौल और चमकदार तथा एक ही नाप के मोतियों की माला अभी तक उनकी नजरों से कभी गुजरी न थी। उनकी विज्ञ आँखों से तुरन्त ही कह दिया कि यह बीस लाख रुपये से कम दाम की किसी तरह नहीं है। कुछ देर तक देख उन्होंने उसे केस में रख दिया और राजा साहब का मुँह देखने लगे। राजा साहब ने इस तरह कहना शुरू किया :—

"यह मोती की माला मेरे नाना की है या यों कहना चाहिये कि थी। जिस समय उनकी मौत हुई उस समय मेरी नानी की उम्र सिर्फ छब्बीस वर्ष की थी। इस डर से कि शायद दौलत के जाल में फँस कर वे राह कुराह पर पैर न रख दें या जिस किसी खयाल से भी हो, मेरे नाना साहब ने अपने सब जेवर और जवाहिरात (जिसमें मेरी परनानी के भी बहुत से थे) अपने छः दोस्तों की एक कमेटी बना उसके सुपुर्द कर दिये और कमेटी को हिदायत कर दी कि जब उनकी स्त्री अर्थात् मेरी नानी की उम्र पचास बरस्र की हो जाय तब वे जवाहिरात उन्हें वापस कर दिये जायें।

"चौबीस बरस तक वे चीजें उस कमेटी के कब्जे में रहीं और इस बीच में मेरी नानी बड़ी मुश्किल से अपना गुजर उन दो चार गाँवों की आमदनी से चलाती रहीं जो मेरे नाना साहब उनके लिए छोड़ गये थे। इधर कुछ ही दिन हुए उन्होंने अपनी जिन्दगी के पचास साल पूरे किये और उस कमेटी ने वे जवाहिरात और जेवर उन्हें सौंप दिये जिनमें यह माला भी थी। इन चीजों को वापस पाने के तीन दिन बाद उन्हें एक चीठी मिली जिसे मैं अभी आपको दिखाऊँगा और जिसके पाने के चौथे दिन सुबह को वे अपने पलंग पर मुर्दा पाई गइ !"

राजा साहब ने जेब के अन्दर से एक और चीठी निकाली और पण्डितजी के हाथ में दे दी। यह भी ठीक वैसे ही लिफाफे के अन्दर थी और इसकी मोहर पर भी ठीक उसी तरह का दो पंजों का लाल ठप्पा किया हुआ था। पण्डित रामनाथ ने लिफाफे के अन्दर से चीठी निकाली और पढ़ी, मोटे कागज पर वैसे ही टेढ़े तिरछे कुढंगे अक्षरों में लिखा हुआ था—

"रानी साहिबा,

"आपके खाविन्द के जो जवाहिरात आपको हाल ही में मिले हैं उनमें एक

मोतियों की माला भी है जो हम लोगों को बहुत पसन्द आई है। आपकी उम्र का काफी हिस्सा बीत चुका है और जो कुछ थोड़ी बहुत उम्र बाकी है वह आप जरूर ही खुदा की इबादत में बिताना चाहती होंगी न कि शौकीनी में।"

"इसलिये इत्तिला है कि आज के तीन दिन के अन्दर वह माला हमें दे दें। आज के तीसरे दिन खाल घाट के सामने जमुना के जल में फेंक देने से वह माला हम लोगों के पास पहुँच जायगी।"

"खबरदार, खबरदार ! इसमें जरा भी गफलत न हो, नहीं तो आपके लिये अच्छा न होगा ! होशियार, होशियार !!"

चीठी पढ़ पण्डित रामनाथ कुछ सिहर से गये। राजा साहब ने फिर कहना शुरू किया—

"मेरी नानी बड़े सीधे और डरपोक मिजाज की थीं और बड़ी जल्दी ही घबड़ा जाया करती थीं। इस चीठी को पाते ही उन्होंने मुझे बुलाया और गहने की पिटारी तथा यह चीठी मेरे सामने रख कर बोलीं, "बेटा, मेरे मरने बाद भी तू ही मेरा वली वारिस है और जीते जी भी तू ही है। जब मेरे मालिक ने नहीं चाहा कि मैं इन गहनों को पहनूँ तो मेरी भी इन्हें पहिनने की इच्छा नहीं है। तू इन्हें ले जा और बहू को दे दे। इस चीठी को भी ले जा और जो मुनासिब समझ कर, मगर इन गहनों को अभी मेरी आँखों के सामने से हटा !"

"ताज्जुब करते हुए मैंने चीठी को पढ़ा और तब मेरे मुँह से भी ठीक वे ही शब्द निकले जो अभी आपने कहे, मानी मैंने भी नानी से कहा, "कुछ नहीं, यह सब किसी बदमाश की शैतानी है, आप कुछ डरिये नहीं !" मैंने उन्हें बहुत कुछ समझाया पर उन्होंने एक न सुनी, उसी समय गहनों की पिटारी मेरे सुपुर्द कर दी और तुरन्त ले जाने को कहा, लाचार मैं उन्हें और साथ ही साथ इस माला को भी अपने घर ले आया मगर सच तो यह है कि इस चीठी की बात को मैं एक मजाक ही समझता रहा।

"इस बात के चौथे दिन सुबह को मेरी नानी अपने पलंग पर मरी हुई पाई गईं। न जाने उनके मरने का क्या सबब हुआ। बूढ़ी तो वे हो ही गई थीं, डाक्टरों ने दिल की धड़कन बन्द हो जाना मौत का सबब बताया पर मेरे दिल ने कहा, "नहीं, असली सबब वही कम्बख्त चीठी है !"

"खैर, इस बात के तीसरे दिन यानी कल शाम को मुझे यह चीठी मिली।

इसे पाते ही न जाने क्यों मुझे एक तरह का हौल सा हो गया और मैं तरह तरह के तरद्दुद और सोच विचार में डूब गया। रात भर मैंने इसी फिक्र में काटी और सुबह से अभी तक इसी सोच में पड़ा रहा कि क्या करना चाहिये? कुछ न सूझने के ही सबब से इस समय मैं आपके पास आया हूं!"

(२)

यह अद्भुत और विचित्र हाल सुन पण्डित रामनाथ कुछ देर के लिए सकते की सी हालत में हो गये पर उनके दिमाग ने उनका साथ न छोड़ा और वे थोड़ी ही देर बाद बोले, "बेशक जो कुछ आपने कहा वह एक ताज्जुब की बात है, ताज्जुब की ही नहीं बल्कि डर की भी, अस्तु मैं यह बेहतर समझता हूं कि आप पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट मिस्टर कैमिल से मिलें और यह हाल उन्हें सुनावें।"

राजा साहब बोले, "यही मैंने भी सोचा है, इसके साथ ही यह भी सोचा है कि जब तक मेरा डर दूर नहीं होता और मैं अपने को खतरे के बाहर नहीं पाता, आप इस माला को तथा मेरे और भी जेवरात अपने स्ट्रांग-रूम वाले सेफ में रखवा दें!" पण्डितजी ने कहा, "कोई हर्ज नहीं, "बड़ी खुशी से रख दें! (हंस कर) वहां से किसी बदमाश की मजाल नहीं कि इन्हें निकाल ले!"

राजा साहब बोले, "जी हां, मुझे भी ऐसा ही विश्वास है। अच्छा मेरे नौकर के पास मेरा जो बेग है उसे मेहरबानी करके मंगवा लें और इस माला तथा उस बेग को हिफाजत से रखवा दें ताकि मेरा तरद्दुद दूर हो।"

पण्डितजी ने घण्टी बजाई और एक क्लर्क ने पर्दा उठा भीतर की तरफ देखा। राजा साहब ने उससे कहा, "बाहर मेरा नौकर है, उसके हाथ में जो बेग है वह मेहरबानी कर के मंगवा लें।"

थोड़ी ही देर में क्लर्क तथा बेग लिये हुए राजा साहब का नौकर आया। बुद्धिमान नौकर ने किसी गैर के हाथ में बेग देने से इन्कार किया था मगर इस समय अपने मालिक को सामने पा उसने बेशक्ल बेग सामने रख दिया और वापस चला गया। मैनेजर साहब ने तालियों का गुच्छा क्लर्क की तरफ बढ़ा कर कहा, "स्ट्रांग-रूम खोलो।"

मैनेजर के कमरे से सटा हुआ एक मजबूत कमरा था जिसमें चारों तरफ लोहे की मोटी चादरें जड़ी हुई थीं तथा दर्वाजा भी फौलादी छड़ों का और बड़ा ही मजबूत बना हुआ था। इस कमरे की पूरब और पश्चिम की दीवारों से सटी

हुई दोपट्टी लोहे की बड़ी बड़ी तिजोरियां रक्खी हुई थीं जिनमें बंक की तमाम दौलत रहती थी। बंक के कर्मचारियों का विश्वास था कि भूचाल और तो भी कोई बहुत भयंकर भूचाल को छोड़ और किसी तरह से भी इस कमरे और तिजोरियों के भीतर रक्खी हुई चीजें किसी दूसरे के हाथ नहीं लग सकतीं।

सामने की दीवार के साथ एक बहुत ही बड़ा और मजबूत सेफ रक्खा हुआ था जो छः इन्च मोटे फौलाद का बना हुआ था। इसका ताला भी बड़ा ही बेश-कीमत और मजबूत था जो तालियों से नहीं बल्कि खटकों और नम्बरों से खुलता बन्द होता था जिसका भेद सिर्फ इस बंक के मैनेजर और मैनेजिंग डाइरेक्टर को ही मालूम था। पंडित रामनाथ ने इस सेफ को खोला, राजा साहब साथ साथ आगे थे, उनके हाथ से बेग और मोती की माला का डिब्बा लेकर ऊपर के खाने में रख दिया, और तब सेफ बन्द कर दिया। राजा साहब के साथ साथ पण्डितजी स्ट्रांग-रूम के बाहर आ गये और क्लर्क ने उस कमरे का भारी दरवाजा बन्द कर दिया।

स्ट्रांग-रूम के बाहर निकल राजा साहब ने गहरी सांस खींची और कहा, "अब मुझे निश्चिन्ती हुई।" पण्डितजी ने कहा, "इस जगह से आप की माला कहीं जा नहीं सकती इसका आप विश्वास रक्खें, मगर यह मैं जरूर कहूंगा कि आप पुलिस में इस मामले की खबर जरूर कर दें।" राजा साहब ने जवाब दिया, "मैं अभी जाकर सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब से मिलता हूं।" और तब पण्डितजी से हाथ मिला के विदा हो गये।

(३)

उसी दिन शाम को पण्डित रामनाथ को राजा साहब का एक पुरजा मिला जिसमें यह लिखा था :—

"मैंने कैमिल साहब से सब हाल कहा। उन्हें भी ताज्जुब हुआ है और उन्होंने इस चोरी चीठियों के लिखने वाले का पता लगाने का वायदा किया है। मैंने दोनों चीठियां उन्हीं के पास छोड़ दी हैं। आज मैं कलकत्ता जा रहा हूं, एक जरूरी मुकद्दमा आ पड़ा है। उम्मीद है कि एक हफ्ते के अन्दर लौट आऊंगा तो आपसे मिलूंगा। इस बीच में माला और बेग हिफाजत से रहेगा यह मुझको यकीन है।"

पण्डितजी ने पुर्जा पढ़ मुस्कुरा कर कहा, "मालूम होता है राजा साहब को [illegible] ने डरा दिया!"

* * *

इस बात को तीन दिन बीत गए। काम की झंझटों में पण्डित रामनाथ को छींकने की भी फुरसत नहीं थी कि यकायक टेलीफोन की घण्टी बजी। चोंगा कान में लगाया। उनके बैंक के मैनेजिंग डाइरेक्टर मिस्टर गोवर्धनदास कह रहे थे—"बड़ी दुःखदाई खबर सुनाई दी है! कैमिल साहब के साथ मैं आफिस में आ रहा हूं। बात यह हुई है कि कल रात को कलकत्ते से इधर आने वाली मेल से गिर कर राजा साहब शम्साबाद की मौत हो गई है। कैमिल साहब को इसमें कुछ रहस्य मालूम होता है और वे उस मोती की माला को देखा चाहते हैं जो राजा शम्साबाद हमारे यहाँ रख गये हैं। उसे निकाल रक्खें, हम लोग अभी आये।"

न जाने क्यों पण्डित रामनाथ काँप गये और उनका ध्यान उन लाल पंजों वाली दोनों चीटियों की तरफ चला गया। उनके माथे पर पसीने की बूंदें चुपचुपा आईं।

थोड़ी देर बाद अपने को सम्हाल वे उठे। स्ट्रांग-रूम उस समय खुला हुआ था और कई क्लर्क रुपये के तोड़े सेफों में बन्द कर रहे थे। पण्डितजी ने अन्दर जाकर उस बीच वाले सेफ को खोला, मगर खोलते ही उनके मुंह से एक लम्बी चीख निकल गई। काँपते और डरते हुए उन्होंने देखा कि ऊपर वाले खाने में राजा साहब का बेग तो पड़ा हुआ है पर वह मोतियों की माला वाला केस गायब है।

कुछ देर तक तो पण्डितजी की यह हालत रही कि काटो तो उनके बदन से खून न निकले। आखिर अपने को सम्हाल उन्होंने उस सेफ को राई रत्ती खोज डाला पर उस मोती की माला का कहीं पता न लगा, हाँ एक कोने में पड़ा हुआ लाल कागज का टुकड़ा अवश्य मिला जिस पर कुछ लिखा हुआ न था, सिर्फ वो 'लाल पञ्जों' का निशान बना हुआ था।

काँपते हुए हाथों से सेफ को बन्द कर पण्डित रामनाथ अपनी कुर्सी पर आ बैठे। उनके होश हवास ठिकाने न थे। मालूम होता था वे पागल हो जायंगे। आँखें फाड़ कर वे उन 'लाल पंजों' को देखने लगे।

---

[२]

बेगम का खजाना

(१)

अँधेरी और सूनसान गली का यह एक छोटा तिमंजिला मकान है परन्तु छोटा होते हुए भी यह अच्छे किले का और मजबूत बना हुआ है। नीचे की मञ्जिल में केवल सदर दरवाजा ही है, और कोई खिड़की या रास्ता नहीं, और ऊपर की मञ्जिल में तीन बड़ी खिड़कियाँ हैं जो शायद उस कमरे में खुलती हैं जो गली की तरफ बना हुआ है। इसके ऊपर की यानी तीसरी मञ्जिल के आधे हिस्से में एक बँगला और बाकी आधे में खुली छत है। बस बाहर से तो उस मकान का यही ढंग दिखाई पड़ता है।

हम इस समय सब से ऊपर वाले बंगले में चलते हैं। लगभग आठ हाथ चौड़े और बारह हाथ लम्बे बँगले में चारों तरफ कई खिड़कियाँ हैं। चूंकि अगल बगल के मकान गरीबों के, नीचे, एक मञ्जिले और खपरैल के हैं, इसी सबब से चारों तरफ खिड़कियाँ रक्खी जा सकी हैं। बँगले में एक तरफ एक पलंग लगा हुआ है और दूसरी तरफ एक छोटी चौकी पर गालीचा बिछा है। इसके अलावा कुछ बरतन और पानी का घड़ा इत्यादि एक कोने में है। बस यही मुख्तसर सा सामान इस जगह में है।

इस समय इस जगह की सब खिड़कियाँ बन्द हैं केवल वह दरवाजा जो छत पर पड़ता और इस बँगले के भीतर आने का रास्ता है, खुला हुआ है। इस दरवाजे पर एक पैर बाहर और एक पैर भीतर रक्खे एक बूढ़ी औरत खड़ी है। इसकी उम्र लगभग सत्तर बरस के होगी। सिर के बाल एकदम सन की तरह सुफेद हो रहे हैं और कमर झुक कर टेढ़ी हो गई है, चेहरा भी झुर्रियाँ पड़ जाने के कारण भद्दा और बदसूरत हो रहा है। यह सिर्फ एक धोती पहने हुई

है पर वह साफ और सुथरी है। भीतर का पलंग और गालीचा आदि देखने से भी मालूम होता है कि यह गरीब नहीं है बल्कि अच्छी और आराम की जिन्दगी बिता रही है। इस बुढ़िया का नाम 'खुरशेद बानू बेगम' है और यह लखनऊ के नवाब घराने की है पर समय के फेर से इस तरह अकेले इस उजाड़ महल्ले में दिन बिताने पर मजबूर हुई है।

जिस जगह यह बुढ़िया खड़ी है वहाँ से चारो तरफ दूर दूर तक का दृश्य दिखाई पड़ रहा है। डूबते हुए सूरज की आखिरी किरणें जहाँ प्रेम के उस मूर्त्ति-स्वरूप तथा एक बादशाह के सुखों की समाधि 'ताजमहल' पर पड़ रही हैं वहीं दूसरी तरफ आगरे के किले की लाल दीवारों से भी टकरा रही हैं। एक मोटी लकीर की तरह जमुना की क्षीण धारा दिखाई दे रही है जिसके काले पानी पर सूर्य का लाल प्रतिबिम्ब कभी कभी चमक जाता है। शहर के बाहरी हिस्से में पड़ने के कारण दूसरी तरफ लहलहाते हुए खेत और मैदानों का भी मनोहर दृश्य आँखों के सामने आ जाता है।

मगर अपने बँगले की डयोढ़ी में खड़ी बुढ़िया इन दृश्यों को कुछ उदास निगाह से देख रही है। कभी कभी उसके मुँह से कुछ टूटे फूटे जुमले निकल जाते हैं और वह धीरे धीरे बुदबुदाने लगती है—

"आह! उस दिन भी सूरज इसी तरह डूब रहा था। लखनऊ शहर के छोर पर.....सिर्फ ताज की जगह पर मोती मसजिद का ऊँचा गुम्बज चमक रहा था, नहीं तो.....सब कुछ ऐसा ही था। आह! अगर 'वह' न होता तो आज भी मैं ऐश की जिन्दगी बिता सकती थी! मगर 'अफरोज'.....आह, आज भी उसकी याद तड़पा देती है!.....खुदा, क्या मरने के बाद तू सचमुच कोई और जिन्दगी देता है?.....क्या मरने के बाद पहली जिन्दगी में बिछुड़े हुए की प्यारी सूरत देखने को मिल सकती है?.....आह, अगर 'अफरोज' न होता तो आज मैं भी नवाब.....साहब के महलों में.....!"

जरा रुक कर बुढ़िया फिर कहने लगी—"खैर इन गड़े मुर्दों को उखाड़ने से अब फायदा ही क्या जिन्हें दफन हुए मुद्दतें गुजर गईं। हाँ, क्यों नहीं, पचास बरस.....सौ बरस का आधा! मुद्दत ही कहना चाहिये, फिर भी मुझे शुक्र अदा करना चाहिये.....कि मैं उस बद हालत को न पहुंची जिस पर और कितनी ही बेगमात हैं। मैंने सुना है कि बहुत सी इस समय बरतन माँज कर दिन काट

रही हैं। आह, इन मूजी अंगरेजों ने.....! अच्छा एक नजर जरा अपने खजाने को तो देख लूँ। मगर ऐसे नहीं, पहले नीचे के सब दरवाजे देख आऊँ कि बन्द तो है।"

बुढ़िया डयोढ़ी पार कर छत पर पहुंची, बगल से नीचे की मंजिल में उतरने की सीढ़ियाँ थीं। धीरे धीरे इन सीढ़ियों से उतर दूसरी मंजिल में पहुंची। इस जगह आमने सामने दो कोठरियाँ थीं जिनमें से एक गली की तरफ और दूसरी मकान के पिछवाड़े की तरफ पड़ती थी। दोनों के दरवाजों में ताले बन्द थे, फिर भी बुढ़िया ने दरवाजों को धक्का देकर और तालों को खींच कर देख लिया, इधर उधर कहीं किसी के छिपने लायक जगह न होने पर भी अच्छी तरह देख भाल की और पुनः सीढ़ियाँ उतर नीचे सहन में पहुंची। यहाँ एक तरफ दालान था और दूसरी तरफ गली में जाने का सदर दरवाजा। संध्या का मद्धिम प्रकाश यहाँ थोड़ा थोड़ा पहुंच रहा था। बुढ़िया ने सदर दरवाजे को देखा, मजबूती से बन्द था। इधर उधर आँख दौड़ा कर देख लिया, कहीं कोई छिपा हुआ नहीं था, छिपने की जगह ही कहाँ थी? अच्छी तरह सन्तोष करके बुढ़िया वापस लौटी, ऊपर की सीढ़ियों पर जो दरवाजा पड़ता था उसे बन्द किया और सांकल चढ़ा दी। और ऊपर चढ़ी, जीने में जो दरवाजा था उसकी भी सांकल लगाने बाद वह बँगले के अन्दर पहुँची। बँगले के दरवाजे को भी उसने भीतर से बन्द कर लिया।

सब तरफ की खिड़कियाँ और दरवाजे बन्द हो जाने तथा संध्या का समय होने के कारण कोठरी में अँधेरा हो गया। बुढ़िया ने एक झनादार बात इस अँधेरे को दूर किया और चारो तरफ देख खुशी भरे स्वर में बोली, "अब मैं बेखौफ अपनी जमा पूँजी देख सकती हूँ। इस जगह अब कोई दूसरी निगाह बेगम खुरशेद बानू का खजाना नहीं देख सकती!!"

(२)

दारोगा इरफानअली अपने थाने के सामने वाले चौतरे पर बैठे हजामत बना रहे हैं। मुबह कोई साढ़े छः बजे का समय होगा। केवल इक्का दुक्का आदमी ही आता जाता दिखाई पड़ता है क्योंकि इस समय की गुलाबी सर्दी लोगों को बाहर के बाहर मुँह निकालने की इजाजत अक्सर नहीं देती मगर दारोगा इरफानअली को बहुत सुबह उठने की आदत है और उन्हीं के सबब से कुछ और

कान्स्टेबल वगैरह का भी सुबह उठना मजबूरी हो जाता है, जो इस समय थाने के बाहर भीतर आते जाते दिखाई पड़ रहे हैं।

दारोगा साहब की आधी हजामत बन गई थी। दाहिने गाल को हटा उन्होंने बायाँ गाल अभी हजाम की तरफ घुमाया ही था कि यकायक एक सिपाही बड़े जोर से बेतहाशा उन्हीं की तरफ दौड़ता आता हुआ दिखाई पड़ा। वे चौंक कर उसकी तरफ देखने लगे, हजाम ने भी छुरे वाला हाथ नीचा कर लिया।

बात की बात में वह सिपाही पास आ पहुंचा और हाँफता हुआ बोला, "खून! दरोगाजी—खून!!"

दारोगाजी एकदम चिहुंक पड़े, हजाम के मुँह से भी कुछ आवाज निकल पड़ी जिसे उसने मुश्किल से रोका। इरफानअली ने भारी आवाज में पूछा, "अबे खून?" सिपाही बोला, "हाँ दारोगाजी खून! चलिये जल्दी चलिये!!"

दारोगाजी सकते की सी हालत में हो गये! बड़ी मुश्किल से उन्होंने पूछा, "कहाँ? किसका?"

सिपाही बोला, "नौरंगाबाद में खुरशेद बानू बेगम के मकान पर! बेगम साहब के बँगले की मोरी में से बहुत सा खून निकल कर नीचे गली में इकट्ठा हो गया है, बल्कि जम गया है। मालूम होता है रात ही को बहा है। बहुत आवाज दी लेकिन घर में कोई बोलता ही नहीं!!"

दारोगा०। दर्वाजा खुला है या बन्द?

सिपाही०। भीतर से बन्द है। बहुत धक्का दिया, चीखा चिल्लाया मगर न दर्वाजा ही खुलता है न भीतर से कोई आहट ही आती है। जरूर वहाँ कोई वारदात हुई है, आप जल्दी चलिये।

इरफानअली के हवास उड़ गये। पुलिस के दारोगा होने पर भी इन्हें खूनी से बड़ा डर लगता था। मगर क्या करें, नौकरी बुरी चीज है। सभी से वास्ता पड़ता रहता है। हजाम को जल्दी से अपना काम खतम करने को कहा और दस कान्स्टेबलों को फौरन तैयार होने का हुक्म दिया। पन्द्रह मिनट के अन्दर ही दस सिपाहियों के सिर पर दारोगा इरफानअली नौरंगाबाद मुहल्ले की तरफ जाते दिखाई देने लगे।

नौरंगाबाद गरीबों का मुहल्ला था। सिर्फ खुरशेद बानू बेगम का मकान छोड़ और कोई भी पक्का और तिमञ्जिला मकान उस मुहल्ले भर में न था, दुमञ्जिले या

पक्के भी शायद तीन चार होंगे, नहीं तो प्रायः सभी कच्चे और फूस या खपरैल के ही थे। वहाँ के बाशिन्दे भी प्रायः सभी मजदूर-पेशा और इसी से सुबह उठने वाले थे। सिपाही के चिल्लाने और आवाजें देने से बहुतों के कान खड़े हो चुके थे, अस्तु जिस समय दारोगा साहब वहाँ पहुंचे पचीसों आदमी बेगम साहबा के मकान के सामने मौजूद थे।

पुलिस को देखते ही सब अलग हो गये। दारोगा साहब के लिये मैदान खाली हो गया और उन्होंने देखा कि बीच गली में ढेर सा खून गिरा और जमा हुआ है। ऊपर की तरफ निगाह की तो बेगम के बँगले से आगे को निकली हुई पत्थर की मोरी उस जगह के ठीक ऊपर दिखाई पड़ी। मोरी में से कपड़े का कोई हाथ भर लम्बा एक टुकड़ा लटक रहा था। यह लत्ता भी खून से तर हो रहा था। इसमें कोई शक नहीं कि उसी मोरी की राह यह खून गिरा है।

दारोगा साहब ने मकान के किवाड़ को धक्का दिया। अन्दर से बन्द था। मुड़ कर एक महल्ले वाले से पूछा, "इस मकान में कौन रहता है?" उसने जवाब दिया, "एक बेगम साहब मय अपने भतीजे के रहती हैं।" एक दूसरा बोला, "मगर पन्द्रह बीस दिन से उनका भतीजा कहीं गया हुआ है, आज कल बेगम अकेली ही इसमें हैं।" दारोगा ने पूछा, "क्या कोई नौकर चाकर भी नहीं रहता?" जवाब मिला, "नहीं, सिर्फ एक मजदूरनी सुबह को आती है और दिन भर काम करके शाम को चली जाती है।"

और दो चार सवाल जवाब करने बाद दारोगा साहब ने एक सिपाही को किसी बढ़ई को पकड़ लाने को भेजा और दूसरा कोतवाल साहब को मामले की खबर देने के लिए। थोड़ी ही देर में बढ़ई आया और दारोगा साहब ने उसे दर-वाजा काटने का हुक्म दिया।

मकान का दरवाजा बड़ा ही मजबूत था अस्तु लगभग आधा घंटा उसके तोड़ने में लग गया और तब तक कोतवाल साहब भी अपने दल बल सहित वहाँ आ पहुंचे। दारोगा साहब ने उन्हें सब हाल सुना दिया। सबसे पहले कोतवाल और उनके पीछे पीछे दारोगा तथा कुछ सिपाहियों ने मकान के अन्दर पैर रक्खा। बाकी आदमी बाहर ही रोक दिये गये।

सहन और आस पास का दालान बिल्कुल साफ, कहीं किसी खून खराबे का [illegible] नहीं था, न कहीं कोई छिपने की जगह न कोई छिपा हुआ आदमी,

हाँ सीढ़ी का दरवाजा अलबत्ता ऊपर की तरफ से बन्द था। कोतवाल साहब ने उसे खोलने का हुक्म दिया।

यह दरवाजा सहज ही में टूट गया और पाँच सिपाहियों को सहन में छोड़ कोतवाल साहब सदलबल ऊपर की मंजिल में पहुंचे। वहाँ भी बिलकुल सन्नाटा और सफाई थी। आमने सामने की दोनों कोठरियों में ताले बन्द थे। ऊपर की सीढ़ी का दरवाजा वहाँ भी भीतर की तरफ से बन्द मिला। वह भी तोड़ा गया और दो सिपाहियों को बिचली मंजिल में छोड़ सब कोई ऊपर छत पर पहुंचे जहाँ वह बँगला था। अभी तक कहीं किसी आदमी की शक्ल दिखाई न पड़ी थी।

कोतवाल साहब ने बँगले के दरवाजे को धक्का दिया। उन्हें उम्मीद थी कि इसे खुला हुआ पावेंगे पर यह भी भीतर से बन्द पाया गया। कोतवाल के हुक्म से बढ़ई ने इसे भी तोड़ा।

आह! दरवाजा टूटते ही तो अन्दर खून की नदी सी बही हुई दिखाई पड़ी जिसके बीचोबीच में बुड्ढिया खुरशेदबानू बेगम की लाश पड़ी हुई थी।

कोतवाल साहब टूटे हुए दरवाजे के पास खड़े होकर अन्दर झाँकने लगे। सिवाय बेगम की लाश के वहाँ और कोई भी न था। आखिर वे भीतर घुसे। इधर उधर, पलंग के नीचे, चौकी के पीछे देखा, कहीं कोई नहीं, तब लाश की तरफ झुके।

बेगम की लाश कोठरी के बीचोबीच में पड़ी हुई थी। लाश का सिर फटा हुआ था जिसमें से बहुत सा खून निकल कर चारो तरफ फैला हुआ था तथा कुछ बह कर मोरी तक भी पहुंच गया था। सामने लोहे का एक सन्दूक खुला हुआ पड़ा था। कोतवाल साहब ने देखा कि सन्दूक में कुछ थैलियाँ रक्खी हुई हैं। उन्होंने एक थैली को उठाया, पुराने जमाने की बादशाही मोहरें उसमें भरी हुई थीं। एक थैली बेगम के हाथ में भी थी और उसमें से कुछ अशर्फियाँ निकल कर चारो तरफ गिरी हुई थीं। सन्दूक में तीन थैलियाँ और थीं।

मगर इनके अलावा भी और एक चीज वहाँ थी, और वह क्या? कागज का एक टुकड़ा जो सन्दूक के खुले हुए ढक्कने के ऊपर पड़ा था और जिस पर कुछ लिखा हुआ भी था। कोतवाल साहब ने इसे उठा कर पढ़ा, यह लिखा था :—

"बेगम साहब का पन्ने का कंठा लेकर मैं चला। अशर्फियाँ आप लोगों के लिये छोड़े जाता हूँ।"

कोतवाल साहब ने दारोगा के हाथ में वह कागज देते हुए ताज्जुब के साथ

चारो तरफ देखा और कहा, "इसमें कोई शक नहीं कि इस पुर्जे का लिखने वाला ही खूनी है पर ताज्जुब इस बात का है कि वह यहाँ पहुंचा कैसे और पहुंच कर भी भागा किस रास्ते से! क्योंकि नीचे से ऊपर तक के सब दरवाजे हम लोगों को अन्दर की तरफ से बन्द मिले, यहाँ तक कि यह कोठरी भी भीतर से बन्द थी। ये खिड़कियाँ भी सब बन्द दिखाई पड़ती हैं। तब क्या खून करके खूनी हवा में मिल गया!"

इसी समय दारोगा के मुँह से ताज्जुब की आवाज सुन कर कोतवाल साहब ने उनकी तरफ देखा और पूछा—"क्या बात है? क्या है?" दारोगा ने कागज उलट कर दिखाते हुए कहा—"इसे भी आपने देखा?"

कोतवाल साहब काँप गये क्योंकि उन्होंने देखा कि कागज की पीठ पर लाल रंग से किसी आदमी के दोनों पंजों का निशान बना हुआ है। उनके मुँह से ताज्जुब के साथ निकला, "हैं! लाल पञ्जों का निशान!! तो जिसने फतेहाबाद बैंक के सेफ में से बीस लाख की मोतियों की माला निकाल ली वही क्या यहाँ भी पहुंच गया?"

———

[३]

एक करोड़ की चोरी

(१)

आगरे के पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट मिस्टर केमिल का बंगला शहर के बाहरी हिस्से में एक बहुत बड़े अहाते के अन्दर है। बंगला यद्यपि ऊपरी निगाह में खपरैल का और मामूली जान पड़ता है पर भीतर से बहुत ही सुन्दर और सुफियाना तथा खुलासा बना हुआ है। केमिल साहब के इस बंगले में ही हम इस समय पाठकों को ले चलते हैं।

गुलाबी रंग से रंगे और गुलाबी ही पर्दों तथा सामानों से सजे हुए एक छोटे कमरे में मिस्टर केमिल की स्त्री और लड़की बैठी हुई हैं। ये दोनों एक खिड़की के सामने रक्खे टेबुल के दोनों तरफ कुरसियों पर बैठी हुई हैं और खिड़की की राह कभी कभी बाहर देखती हुई आपस में बातें भी करती जाती हैं। कुछ बुनाई का काम उनके हाथों में है जिन पर उनकी उंगलियाँ दौड़ रही है। खिड़की में से बाग का एक हिस्सा और उसके बाद की सड़क का भी कुछ अंश दिखाई पड़ रहा है।

रोज०। (मिस्टर केमिल की लड़की) पापा कल कहते थे कि उन्होंने कलकत्ते से दो मशहूर जासूस इस भेद का पता लगाने को बुलाये हैं।

विक्टोरिया०। (मिस्टर केमिल की पत्नी) हाँ मुझे मालूम है, और वे दोनों जासूस आज ही यहाँ पहुंचने वाले भी हैं।

रोज०। देखें वे आकर क्या जस लगाते हैं! यहाँ की पुलिस तो हार मान बैठी है। पापा भी इतने होशियार होकर इन मामलों में कुछ न कर सके। न मालूम यह 'लाल-पञ्जा' कैसी बला है जिसका कुछ भेद ही नहीं लगता!

कहना व्यर्थ है कि इन दोनों की बातचीत उसी मोती की माला और बेगम के खजाने की विचित्र चोरी के सम्बन्ध में हो रही थी।

रोज०। मेरी समझ में यह नहीं आता कि बंक के सब से मजबूत सेफ के अन्दर से ऐसी कीमती माला क्योंकर गायब हो गई!

विक्टोरिया०। और यह क्या कम ताज्जुब की बात है कि घर के सभी दरवाजे भीतर की तरफ से मजबूत बन्द रहें और चोर तीसरे मंजिल पर पहुंच कर खून और चोरी कर जाय!! मगर हैं! यह कौन आया!

एक सुन्दर जोड़ी अभी अभी आकर बाग के दर्वाजे पर खड़ी हुई थी। घोड़े गाड़ी और कोचवान साइसों से ठाट बाट से किसी बहुत ही बड़े रईस की वह सवारी मालूम होती थी। दोनों मां बेटियाँ ताज्जुब के साथ देख रही थीं कि गाड़ी में से एक नौजवान और सुन्दरी युवती उतरी और बंगले की तरफ बढ़ी। केमिल की स्त्री यह देख उठ खड़ी हुई और यह कहती हुई बाहर की तरफ चली, 'किसी रईस की लड़की मालूम पड़ती है! रोज, चाय की तैयारी कराओ तो!"

थोड़ी ही देर में विक्टोरिया उस युवती को लिए हुए उसी कमरे में आ पहुंची और उसे एक कुरसी पर बैठा कर आप उसके सामने बैठ गई। रोज भी संकोच के साथ पीछे की एक कुरसी पर बैठ गई और इस युवती की तरफ ताज्जुब से देखती हुई दोनों की बातें सुनने लगी।

इस युवती की चाल ढाल चेहरे मोहरे और खास कर आँखों से साफ प्रकट होता था कि यह नेपाल की रहने वाली है तथा इसकी पोशाक और जड़ाऊ जेवरों की तरफ देखने से यह भी मालूम होता था कि बहुत ही अमीर खानदान की है। नेपाल की स्त्रियाँ प्रायः अपने सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध हैं पर यह लड़की गजब की सुन्दर और खूबसूरत थी यहाँ तक कि अपने रूप पर घमण्ड करने वाली रोज की भी इसके रूप पर रश्क पैदा हो गया और वह कुछ अजीब ढंग से उसकी तरफ देखने लगी।

मिस्टर केमिल की पत्नी विक्टोरिया और इस सुन्दरी में बातों का जो सिलसिला शुरू होने वाला था वह यहाँ आकर पुनः जारी हो गया। विक्टोरिया ने उससे कहा, "मेरे पति एक बहुत ही जरूरी काम से गये हैं, मैं समझती हूँ कि वे आते वक्त यहाँ से लौटेंगे।"

युवती। नहीं मुझे नहीं, मैं तब तक बैठ जाऊंगी अगर आपको मेरी

मौजूदगी से कोई हर्ज न पहुँचे।

विक्टो०। (हंस कर) वाह, खूब कही !! मैं तो आपसे मिल कर बहुत ही प्रसन्न हुई। मुद्दतों से सुनती आ रही थी कि नैपाल के किसी मशहूर खानदान की एक शाखा इस शहर में है पर कभी इत्तफाक न पड़ने से मुलाकात का मौका न मिला था। (अपनी लड़की रोज की तरफ देख कर) यह मेरी लड़की है—(रोज से) आप नैपाल के एक प्रसिद्ध वंश में से हैं, आपका नाम कामिनीदेवी है।

अंगरेजी शिष्टाचार के अनुसार दोनों का आपस में परिचय कराने बाद विक्टोरिया ने रोज से चाय तैयार करने का इशारा किया और वह उठ कर पास के एक दूसरे टेबुल पर चली गई। इन दोनों में पुनः बातें होने लगीं।

विक्टो०। आपको मेरे पति से क्या काम है यह क्या मैं पूछ सकती हूं ?

कामिनी०। (कुछ रुक कर और इधर उधर देख कर) मैं उनके पास बड़े तरद्दुद में पड़ कर आई हूं।

विक्टोरिया०। क्या ?

कामिनी०। (सिर झुका कर) मुझे आज ही नैपाल के लिये रवाना होना है।

विक्टो०। आज ही ! क्या कोई जरूरी काम है ?

कामिनी०। (सिर नीचा करके) जी वहाँ मेरी शादी मेरे मामा ने ठीक की है।

विक्टो०। (मुस्कुराती हुई) ओह, तब तो मैं आपको मुबारकबाद देती हूं, मगर इस काम के लिये मेरे पति से.....?

कामिनी०। जी बात यह है कि मेरे मामा इधर महीनों से नैपाल में ही हैं। मेरे बुजुर्गों की वहाँ कुछ जागीर थी जो नैपाल सरकार ने जप्त कर ली थी, उसी के बारे में प्रार्थनापत्र लेकर वे गये थे। मेरे मामा को तो मुस्तकिल तौर पर वहाँ रहने का हुक्म नहीं मिला पर मेरे बारे में हुक्म हुआ है कि अगर मैं वहीं रहूं तो अपनी जायदाद पुनः पा सकती हूं। इसी कारण मेरे मामा ने मुझे वहीं बुलाया और शादी का भी प्रबन्ध किया है। मुझे वहाँ बसा कर वे वापस चले आवेंगे।

विक्टो०। ठीक है।

कामिनी०। मेरे नाना जब नैपाल से भागे थे तो उस समय मेरी विधवा माँ भी मुझे लेकर उनके साथ ही भागीं क्योंकि उन्हें सन्देह हुआ कि राणा जंगबहादुर कहीं उनके ऊपर भी कोई अत्याचार न करें। मेरे पिता वहाँ के एक बहुत ही बड़

और ऊंचे वर्ग के आदमी थे। बहुत कुछ जायदाद और धन दौलत छोड़ के कमती ही उम्र में मर गये थे। उनकी जायदाद वगैरह तो सब जब्त हो गई पर मेरी माँ भागती वक्त अपने जेवरों का डिब्बा लेती आई थीं जो उम्र भर उनके पास रहा और जब वे मरीं तो मुझे मिला। अब मेरे मामा ने मुझे बुलाने के लिये आदमी भेजा है और यह भी लिखा है कि वह डिब्बा भी साथ लेती आऊं, अस्तु इसी कारण मैं आपके पति से मदद लेने आई थी, क्योंकि इतनी सारी दौलत को लेकर और सिर्फ एक नौकर के साथ इतनी दूर का सफर करने की मेरी हिम्मत नहीं पड़ती। मैं चाहती हूं कि सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब कोई ऐसा होशियार आदमी मेरे साथ कर दें जो मुझे सही सलामत नैपाल की सरहद तक पहुंचा दे। वहाँ से मेरे मामा मुझे ले जायंगे।

मिसेज केमिल आश्चर्य के साथ यह हाल सुन रही थीं। उन्हें यह विश्वास हो गया कि यह अवश्य ही किसी बहुत ही अमीर खानदान की लड़की है। कामिनी की मीठी बातों और उसके भोले भाले सुन्दर चेहरे ने उन्हें और भी अपने वश में कर लिया अस्तु वे सन्तोष दिलाने वाले ढंग से बोलीं, "आप इसके लिए कोई फिक्र न करें। मेरे पति अब आते ही होंगे, और उनके आते ही मैं सफर के बारे में आप की पूरी हिफाजत का बन्दोबस्त करा दूंगी।"

रोज चाय तैयार करके लाई और सभों ने पी। इसके बाद तीनों में इधर उधर की बातें होने लगीं।

इन लोगों की बातें हो ही रही थीं कि मिस्टर केमिल की गाड़ी बाग के दरवाजे पर आकर रुकी और उस पर से पहिले मिस्टर केमिल और तब दो हिन्दुस्तानी उतरे। विक्टोरिया ने रोज की तरफ देख कर कहा, "मालूम होता है उनके साथ वाले आदमी वे ही दोनों जासूस हैं जो आज आने वाले थे, जरा मैं उनसे मिलती हूं।"

कामिनीदेवी और रोज को वहीं छोड़ रोज की माँ उस कमरे के बाहर निकल गई और अपने पति के पास पहुंचीं। वास्तव में उनका खयाल ठीक था मिस्टर केमिल के साथ वे ही दोनों मशहूर जासूस थे जिन्हें उन्होंने कलकत्ते के [illegible] का भेद लगाने के लिए बुलाया था। इन दोनों जासूसों में से जो [illegible] विभाग में सब से प्रसिद्ध और चतुर समझे जाते थे, एक का [illegible] और दूसरे का भवानी दत्त था। इनके स्वभाव रंगरूप और

कार्रवाई का हाल पाठकों को धीरे धीरे आगे चल कर मालूम होगा।

मिस्टर केमिल ने अपनी पत्नी के साथ इन जासूसों का परिचय कराया और तब अपने आफिस के कमरे में पहुंचे। उस जगह इशारे में विक्टोरिया ने प्रकट किया कि वे एकान्त में उनसे कुछ कहा चाहती हैं, अस्तु दोनों जासूसों को वहीं बैठा मिस्टर केमिल अपनी स्त्री के साथ बगल के कमरे में चले गये जहां विक्टोरिया ने कामिनीदेवी का सारा हाल उन्हें कह सुनाया। केमिल साहब ने सब हाल सुन कर कहा, "मुझे मालूम है कि नेपाल के राजघराने के कुछ लोग यहां रहते हैं जिन्हें ब्रिटिश गवर्नमेन्ट इज्जत की निगाह से देखती है, अस्तु उन्हें जिस तरह की मदद की आवश्यकता हो मैं करने के लिये तैयार हूं। क्या कामिनी देवी मेरे सामने होंगी?"

विक्टोरिया बोली, "मैं अभी जाकर पूछ आती हूं।" यह कह वे वहां से चली गईं और थोड़ी ही देर में वापस आकर बोलीं, "हां, उन्हें आपके सामने होने में कोई परहेज नहीं है। चलिये, वे बगल वाले कमरे में हैं।"

अपने पति को साथ लिये केमिल की स्त्री उस कमरे में आईं जहां कामिनी देवी उत्सुकता के साथ मिस्टर केमिल की राह देख रही थीं। उन्हें देखते ही वे उठ खड़ी हुईं और अंगरेजी रीति के अनुसार हाथ मिला कर बोलीं, "मैं आपको कुछ कष्ट देने के लिये आई हूं।"

"मैं सब तरह से सेवा करने को तैयार हूं।" कह कर केमिल साहब ने कामिनीदेवी को कुरसी पर बैठाया और आप दूसरी कुरसी खींच उनके सामने बैठ गये। कामिनीदेवी ने पुनः संक्षेप में अपना वही हाल कह सुनाया जो उन्होंने कुछ देर पहिले विक्टोरिया और रोज से कहा था। केमिल साहब चुपचाप उनकी बातें सुनते और छिपी निगाहों से कामिनीदेवी के अलौकिक रूप की अनुपम छटा का भी आनन्द लेते रहे। हम समझते हैं कि कामिनीदेवी के दुःख की अपेक्षा उनके रूप और स्वर ने उन पर अधिक असर किया और वे उनकी बात समाप्त होने पर बोले, "मुझसे जो कुछ भी हो सकेगा करने को मैं खुशी से तैयार हूं। आप कहें तो मैं एक दो सिपाही आपके साथ कर दूं, या आप अगर ऐसा चाहें तो मैंने एक मामले का पता लगाने के लिये कलकत्ते से जो दो मशहूर जासूस बुलाये हैं उनमें से एक को आपके साथ कर दूं जो हिफाजत से आपको नेपाल की सरहद तक पहुंचा आवेगा।"

कामिनी ने यह सुन प्रसन्नता के साथ कहा, "अगर आप ऐसा कर दें तो इससे बढ़ कर और कुछ हो नहीं सकता। तब अपना सफर मैं बड़ी निश्चिन्ती और बेफिक्री से तय कर सकूंगी।"

केमिल साहब ने कहा, "इसमें कोई भी तरद्दुद नहीं है। आप कुछ देर और तकलीफ करें। मैं उन जासूसों से बातें करके अभी आपको खबर करता हूं।"

कामिनीदेवी के मनोहर कण्ठ से मीठा धन्यवाद लेकर केमिल साहब वहां से चले गये।

(२)

रात साढ़े नौ का समय है। आगरा स्टेशन पर की चहल पहल और भीड़ भाड़ का कोई ठिकाना नहीं है क्योंकि पूरब को जाने वाली डाकगाड़ी अब बस पन्द्रह मिनट में ही छूटने वाली है।

इसी समय एक बड़ी मोटरकार स्टेशन की बरसाती के नीचे आकर खड़ी हुई। शोफर ने उतर कर दर्वाजा खोला और आगरे के पुलिस सुपरिन्टेण्डेण्ट मिस्टर केमिल उस पर से उतरे, जिन्होंने हाथ का सहारा देकर कामिनी देवी को उतारा, इसके बाद जासूस गनपतराम नीचे उतरे। पीछे पीछे और एक मोटर आ पहुंची जिस पर कामिनीदेवी के तीन चार नौकर और कई सन्दूक लदे हुए थे। मोटर रुकते ही असबाब नीचे उतारना और कई कुली करके स्टेशन के अन्दर पहुंचाना शुरू किया गया। केमिल साहब ने कामिनीदेवी से पूछा, "मैं समझता हूं कि आपके लिए अगर एक डिब्बा रिजर्व करा दिया जाय तो आप कुछ आराम से सफर कर सकेंगी।" कामिनीदेवी ने मुस्कुरा कर कहा, "बेशक, पर इस समय भेल में यकायक शायद डिब्बा रिजर्व न हो सके!" केमिल साहब ने यह सुन अंगरेजी में बुदबुदा कर कुछ कहा और तब जासूस गनपतराम से कामिनीदेवी को स्टेशन के अन्दर ले चलने को कह आप स्टेशन मास्टर के कमरे की तरफ बढ़ गये। दो नौकर सब असबाबों के साथ स्टेशन के अन्दर जा चुके थे और दो वहीं मौजूद थे जिनमें से एक कामिनीदेवी का चमड़े का बेग हाथ में उठाये हुए था। कामिनीदेवी जासूस और वे नौकर स्टेशन के अन्दर घुसे, इतने में केमिल आगे बढ़ गये।

[illegible] मिनट के बाद एक और मोटर आकर उसी जगह रुकी जिस [illegible] रंग का एक लम्बा सन्दूक लदा हुआ था। रुकते ही एक आदमी उस पर

से कूदा और कई कुलियों के जरिये उस बड़े सन्दूक को उठवाये रूपकता हुआ स्टेशन के अन्दर घुस गया। उसकी भी मोटर तेजी के साथ जिधर से आई थी उधर ही लौट गई।

इस बीच में कामिनीदेवी जासूस गनपतराम और नौकर असबाब के साथ स्टेशन के अन्दर खड़ी मेल के पास पहुंच चुके थे और इस इन्तजार में खड़े थे कि केमिल साहब आवें तो असबाब चढ़ाना शुरू किया जाय। लगभग दस मिनट के बाद फर्स्ट क्लास के एक डिब्बे को आगे आगे ढकेलता हुआ एक इंजिन वहाँ पहुंचा और गार्ड की गाड़ी के पीछे ही वह डिब्बा जोड़ दिया गया जिससे कामिनीदेवी समझ गईं कि केमिल साहब का उद्योग सफल हुआ। स्टेशन मास्टर को लिए हुए केमिल साहब वहाँ आ पहुंचे और कामिनीदेवी से उनके परिचय के आदान-प्रदान की रस्म अदा करके बोले, "स्टेशन मास्टर साहब की मेहरबानी से रिजर्व डिब्बे का बन्दोबस्त हो गया, अब आप आराम से सफर कर सकेंगी।" कामिनीदेवी के मुस्कुराहट मिले धन्यवाद को ले स्टेशन मास्टर साहब स्वयम् अपने को धन्य समझने लगे। नौकरों ने फुर्ती फुर्ती उस डिब्बे में असबाब चढ़ाना शुरू किया और जब सब सामान चढ़ गया तो कामिनीदेवी भी भीतर जा बैठीं। वह नौकर जो उनका बेग लिए हुए था सामने की सीट पर बैठ गया और जासूस गनपतराम भी डिब्बे के अन्दर जा बैठे। उस समय केमिल साहब ने डिब्बे के अन्दर पहुंच कर धीरे से गनपतराम से कहा, "कामिनीदेवी और उनका वह बेग जो नौकर के हाथ में है दोनों ही की अपनी जान से बढ़ कर हिफाजत कीजियेगा, इसी पर आपकी उन्नति निर्भर रहेगी!" गनपतराम ने हँस कर कहा, "आप निश्चिन्त रहिये केमिल साहब, अपनी उन्नति से बढ़ कर मुझे अपने सुलाम में बट्टा लगने की चिन्ता है!!"

गार्ड ने सीटी दी, कामिनीदेवी ने स्टेशन मास्टर से हाथ मिलाया और तब घूम कर केमिल साहब से हाथ मिलाने के बाद कहा, "आपकी मेहरबानी का मैं शुक्रिया नहीं अदा कर सकती सिवाय इसके कि अगर आपको कभी नैपाल आने की जरूरत पड़ी तो अपने भरसक आपकी सेवा कर अपने को धन्य समझूंगी।" केमिल साहब ने मुस्कुरा कर कुछ मुनासिब जवाब दिया और तब वे डिब्बे के नीचे उतर ही रहे थे कि इतने में कई कुली एक लम्बा काला सन्दूक लिये दौड़ते हुए आये और उसे इस डिब्बे के अन्दर ढकेलने लगे। केमिल साहब

ने ताज्जुब के साथ कामिनीदेवी से पूछा, "क्या यह आपका सन्दूक है?" उन्होंने आश्चर्य करते हुए कहा, "मैं बिलकुल नहीं जानती कि यह किसका है। मेरा सब असबाब तो मेरे साथ है।" केमिल साहब ने यह सुन जोर से जूते की ठोकर उस सन्दूक में मारकर कहा, "ओ ये कुली, हटाओ इसको यहाँ से!" पर वहाँ कुली थे कहाँ? वे तो सन्दूक रखते ही चल दिये थे। केमिल साहब ने पैर से बक्स को ढकेलना चाहा पर वह बहुत भारी था जरा भी न खसका, लाचार उन्होंने दो नौकरों से कहा, "इसे बाहर फेंक दो।"

इसी समय गार्ड ने पुनः सीटी दी। केमिल साहब डिब्बे के नीचे उतर आये। दोनों नौकरों ने सन्दूक ढकेलना शुरू किया परन्तु अभी लगभग चौथाई ही वह बरामदे के बाहर निकला होगा कि सफेद चादर से अपने को सिर से पैर तक ढके एक औरत वहाँ पहुँची और गिड़गिड़ा कर बोली, "सरकार अब गाड़ी खुला चाहती है, कुलियों ने भूल से मेरा सन्दूक यहाँ रख दिया है। मैं अगले स्टेशन पर इसे उठवा ले आऊंगी।" कामिनी को उसकी बात सुन दया आ गई और उसने कहा, "अच्छा अच्छा, कोई हर्ज नहीं, मगर तुम अगले स्टेशन पर इसे जरूर उठवा ले जाना।" नौकरों ने उसका इशारा पा सन्दूक पुनः भीतर खींच लिया और वह औरत बगल के किसी डिब्बे में चढ़ गई। इसी समय इंजिन ने सीटी दी। कामिनीदेवी ने स्टेशन मास्टर और मिस्टर केमिल की ओर देख हाथ हिलाया और गाड़ी चल पड़ी।

कामिनीदेवी कुछ देर तक खिड़की के बाहर का दृश्य देखती रहीं पर जब [illegible] अन्धकार ने सब कुछ लोप कर दिया तो उन्होंने खिड़की बन्द कर ली और गनपतराम से इधर उधर की बातें करने लगीं। थोड़ी देर बाद उन्हें नींद आने लगी। नौकर ने बिछौना बिछा दिया और वे लेट गईं। हल्के खर्राटे ने शीघ्र ही बता दिया कि वे नींद की गोद में पहुंच गईं मगर जासूस गनपतराम जागते ही [illegible] सिर पर केमिल का डर उन्हें कामिनीदेवी और उनके गहनों के उस डिब्बे से बेखबर न होने देता था जो उस नौकर के हाथ वाले बेग में था।

[illegible] थकी हुई धक सीधे टूंडला आकर ठहरती है, अस्तु जब ट्रेन रुकी तो [illegible] इस आशा में हुए कि अब वह औरत अपना बक्स लेने आती होगी, पर कोई न आया। थोड़ी देर तक राह देखने बाद वे गाड़ी से उतर पड़े और [illegible] देखने लगे पर वह रूपेवपोश औरत कहीं भी दिखाई न पड़ी। उन्हें

आश्चर्य हुआ और उनकी इच्छा हुई कि बगल वाले डिब्बों के पास जाकर बक्स के मालिकों को ढूंढें पर ऐसा न कर सके क्योंकि इञ्जिन ने उसी समय सीटी दे दी, लाचार वे गाड़ी के अन्दर चढ़ आये, पर यह उन्होंने निश्चय कर लिया कि अगले स्टेशन पर अगर कोई लेने न आया तो वे जरूर इसे गाड़ी से उतार स्टेशन मास्टर के सुपुर्द कर देंगे क्योंकि न जाने यह किसका है और इसमें क्या है !

गाड़ी चल पड़ी। ठंडी ठंडी हवा के झोंके आने लगे। दोनों नौकर तो ऊंघने लगे थे पर वह तीसरा जिसके सुपुर्द वह बेग था जाग ही रहा था। उसने गनपतराम की इच्छा समझ सब खिड़कियाँ बन्द कर दीं। गनपतराम डिब्बे की दीवार के साथ उठंग गये और आंखें बन्द कर कुछ सोचने लगे। उस नौकर ने भी ओढ़ने के भीतर अपना मुंह कर लिया और शायद झपकियाँ लेने लगा। आधे घन्टे के बाद—कहना तो न चाहिए पर लाचार कहना पड़ता है—गनपतराम और उस नौकर दोनों ही की नाकों से लम्बी सांसें निकलने लगी थीं।

* * *

यह क्या है ? क्या हमारी आंखों का भ्रम है ? नहीं नहीं, वास्तव में हमारी आंखें हमें धोखा नहीं दे रही हैं और सचमुच उस सन्दूक के नीचे की तरफ वाले कई छेदों की राह एक तरह का धुआं निकल कर सब तरफ फैल रहा है जिसमें बहुत ही हल्की गन्ध थी। कुछ ही देर में यह धुआं डिब्बे भर में फैल गया।

इसके आधे घन्टे बाद उस काले लम्बे सन्दूक का ढकना खुला और उसके अन्दर से निकलता हुआ एक आदमी का सर दिखाई पड़ा जिस पर काला कपड़ा पड़ा हुआ था।

सर ऊंचा हुआ, कंधा निकला, छाती निकली, कमर निकली और अब तो पूरा कद्दावर जवान उस सन्दूक में खड़ा नजर आने लगा। इधर उधर गौर से देख और हर एक के ऊपर गहरी निगाह डाल वह शख्स सन्दूक के बाहर आया। साथ ही उसने अपनी जेब में हाथ डाल कर कोई चीज निकाली। वह क्या थी ? एक चमकती हुई छोटी सी पिस्तौल !

बारी बारी से हर एक के पास जाकर उसने सभों की सूरत देखी। सभी मीठी नींद में मस्त हो रहे थे। घूमता हुआ वह वहां पहुंचा जहां कामिनी सोई हुई हल्के खुर्राटे ले रही थी।

कामिनी का गुलाब की तरह खिला हुआ मुखड़ा देखते ही वह आदमी चौंक

गया। यद्यपि काले कपड़े से उसका मुंह ढंका हुआ था और सिर्फ दो छेदों में से देखती उसकी चमकदार आंखों के सिवाय और कोई हिस्सा उसके चेहरे का दिखाई नहीं पड़ता था तथापि हम कह सकते हैं कि कामिनीदेवी की खूबसूरती ने उसके ऊपर गहरा असर किया। वह कुछ देर तक एकटक उनकी सूरत देखता रहा, तब उसने अपने हाथ की पिस्तौल जेब में रख ली और ठण्डी सांस लेकर पीछे की तरफ घूम पड़ा जिधर वह सन्दूक था।

हम समझते थे कि वह पुनः उसी सन्दूक में चला जायगा पर नहीं, एक पैर सन्दूक के अन्दर डाल कर भी वह फिर रुक गया, मानों उसे कोई बात याद आ गई हो। उसने पुनः एक दूसरे जेब में हाथ डाला और एक शीशी निकाली। यह शीशी विचित्र तरह की बनी हुई थी जिसके मुंह में एक तरफ तो एक पतला चमकदार चांदी का नल और दूसरी तरफ रबर का गेंद सा कुछ लगा हुआ था। शीशी में पीले रंग का कोई तरल पदार्थ था। यह शीशी हाथ में ले वह विचित्र आदमी पुनः उन सोने वालों के पास पहुंचा। जेब से रूमाल निकाल नकाब के अन्दर से उसने अपनी नाक को मजबूत बांध लिया और तब उस रबर के गेंद को दबाना शुरू किया। एक तरह का धुआं सा उस चांदी की नली में से निकला और देखते देखते समूचा डिब्बा उस धुएं से भर गया जिसमें बड़ी कड़ी गन्ध थी।

(३)

बहुत शोर गुल सुन कर जिस समय आसूस गनपतराम की नींद टूटी तो वे घबड़ा उठे क्योंकि उन्हें यह कभी आशा नहीं थी कि वे इतनी गहरी नींद में चले जायेंगे। उन्होंने अपने चारों तरफ देखा परन्तु सभी को सोता हुआ पाया। खिड़की के बाहर मुंह निकाल कर देखा तो मालूम हुआ कि वे कानपुर स्टेशन पर आ पहुंचे हैं और स्टेशन के शोरगुल ने ही उन्हें जगा दिया है। घड़ी निकाल कर देखी तो तीन बजने में कुछ ही मिनट बाकी थे। तब क्या वे लगातार तीन घण्टे तक सोते रह गये ? आश्चर्य ! डिब्बे की दो खिड़कियाँ खुली हुई थीं जिनकी राह बहुत तेज और ठंडी हवा आकर कमरे को सर्द कर रही थी। इसी ने गनपतराम को पड़ा रहने न दिया और वे उठ कर खिड़की बन्द करने लगे, पर उसी समय यह देख उन्हें आश्चर्य हुआ कि वह लम्बा काला सन्दूक वहां पर नहीं है। उन्होंने सोचा कि शायद जिसका वह था वह भी इसी स्टेशन पर उसको उतार ले गया होगा, परन्तु आश्चर्य की बात

कि लोग गाड़ी के अन्दर घुस कर इतना बड़ा सन्दूक उठा ले गये और उन्हें होश तक न हुआ ! ऐसी बेखबरी की नींद तो उन्हें कभी नहीं आती थी !! इतना सोचने के साथ ही उन्हें उस बेग का ध्यान आया जिसमें कामिनीदेवी के जेवर बंद थे और खास करके जिसकी हिफाजत के लिये ही वे उनके साथ भेजे गये थे। उन्होंने उस तरफ निगाह फेरी जिधर वह नौकर बैठा था जिसके सुपुर्द वह बेग था। देखते ही उनको तो काठ मार गया। ऊपर की साँस ऊपर और नीचे की नीचे रह गई। उन्होंने देखा कि वह नौकर बेखबर पड़ा है, उसके हाथ वाला चमड़े का बेग जो नीचे गिरा हुआ था किसी तेज औजार से इस तरह काट दिया गया है कि एक दम दो टुकड़ा हो गया है, तथा उसके अन्दर की चीजें निकल कर चारो तरफ फैली हुई हैं। गनपतराम सन्न हो गए और बहुत रोकने पर भी उनके मुँह से एक चीख निकल ही गई। इसी समय इञ्जिन ने सीटी दी और डाकगाड़ी कानपुर स्टेशन छोड़ आगे को चल पड़ी।

पाँच मिनट तक तो गनपतराम की यह हालत रही कि काटो तो खून नहीं पर इस समय बेकार बैठे रहने से भी तो नहीं चल सकता था। वे काँपते हुए उठे और उस बेग के पास पहुँचे। एक घुटना टेक कर वे जमीन पर बैठे ही थे कि आहट पाकर कामिनीदेवी की नींद उचट गई और उन्होंने आँखें खोल दीं। गनपतराम को बदहवासी की हालत में अपने पास और गाड़ी के फर्श पर बैठे देख वे चौंक पड़ीं और उनकी भी निगाह सीधे अपने बेग पर ही पड़ी। उसे कटा हुआ और अन्दर की चीजों को बिखरा देख वे एक चीख मार कर उठ बैठीं। कुछ देर तक तो वे सकते में पड़ी रहीं और तब उनके मुँह से निकला, "हाय, जिस बात से डरती थी वही हुआ ! गनपतराम, तुम्हारा आना बिल्कुल फजूल हुआ ! मैं तो लुट ही गई !!"

गनपतराम ने शर्मिन्दगी के साथ सिर नीचा कर लिया। कामिनीदेवी सीट से नीचे उतर आईं और बेग के अन्दर से निकली हुई चीजों को उलट पलट कर देखने लगीं यकायक चाँदी का एक वजनी डिब्बा सीट के नीचे पड़ा देख उनकी मुर्झाई हुई तबीयत कुछ हरी हुई। उन्होंने झपट कर उसे उठा लिया मगर जब देखा कि उसका ताला टूटा हुआ है तो फिर उनका चेहरा मुर्झा गया।

घुटनों पर उस डिब्बे को रख कामिनीदेवी ने धड़कते हुए कलेजे के साथ उसका ढकना खोला, साथ ही उनके मुँह से प्रसन्नता की आवाज निकली, क्योंकि

उनके हीरे पन्ने और मोती के वे जड़ाऊ जेवर जिनकी कीमतों का अन्दाजा नहीं किया जा सकता था, उसके अन्दर सही सलामत रक्खे हुए थे। वे खुशी से एक एक चीज को बाहर निकाल कर रखने लगीं। उसके चेहरे पर रङ्गत लौट आई। गनपतराम की बदहवासी कुछ दूर हो चली।

सब की सब चीजें ज्यों की त्यों पाई गईं। एक भी चीज कम न थी बल्कि कुछ चीज ज्यादा ही थी। वह ज्यादा क्या थी ? एक लिफाफा जो सब जेवरों के नीचे, डिब्बे की तह में, पड़ा हुआ था। कामिनीदेवी ने आश्चर्य करते हुए उस लिफाफे को उठाया क्योंकि उन्होंने उसको इस डिब्बे में नहीं रक्खा था; तब वह यहाँ कहाँ से आ गया ! तरह तरह की बातें सोचते हुए कामिनीदेवी ने काँपते हाथों से उस लिफाफे को खोला। अन्दर से एक कागज निकला जिस पर साफ सुथरे सुडौल अक्षरों में कुछ लिखा हुआ था। कामिनीदेवी ने उसे पढ़ा, यह मजमून था :—

"सब चीजें मैंने देखीं। कीमती हैं, पर उतनी नहीं जितनी कि एक चीज। अगर डिब्बे के सब जेवर एक करोड़ के हों तो इस अकेले चीज को मैं एक करोड़ की समझता हूँ, इससे सब कुछ छोड़ एक वही चीज ले जाता हूँ।"

इसके नीचे लाल रंग से एक पञ्जे का चिह्न बनाया हुआ था।

कामिनीदेवी को ख्याल आया कि इस डिब्बे में उनकी एक फोटो भी थी जो उन्होंने हाल ही में एक अंगरेज फोटोग्राफर से उतरवाई थी। उसे डिब्बे के अन्दर न देख न जाने क्यों उनके मुँह से एक ठण्डी साँस निकल गई।

दूसरा चिट्ठी को पढ़ा, और तब लिफाफे पर गौर किया। उसके अन्दर कोई और चीज भी मालूम हुई। खोला तो वास्तव में एक चीज और उसके अन्दर थी। वह क्या थी ? हम कह नहीं सकते, क्योंकि उसे एक निगाह देखा, सिर्फ एक ही निगाह—और तब अपनी कुरती की जेब में इस फुर्ती से डाल लिया कि गनपतराम को उसका कुछ गुमान तक न हो सका।

———

[४]

शतरंज के मोहरे

(१)

एक छोटा सा मगर साफ सुथरा और हवादार मकान आगरे की नई सड़क के कोने पर अपना ऊँचा सिर उठाये हुए खड़ा है।

यह मकान जो शहर के किसी बहुत बड़े रईस ने नया ही बनवाया है, इस समय थोड़े दिनों के लिए आगरे के पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट मिस्टर केसिल ने अपने दो कलकत्ता निवासी मित्रों के लिए ले लिया है जो सैर की नियत से आगरे आये हुए हैं। ये दोनों परदेशी जिस शान औकत और ठाट बाट से यहाँ ठहरे हुए हैं उससे साफ मालूम होता है कि बहुत ही अमीर और रईस हैं, ताज्जुब सिर्फ यही है कि इनके साथ नौकर केवल दो ही हैं। जो कुछ सिपाही पहरेदार चपरासी कोचवान गाड़ी मोटर आदि है वह सब यहीं रक्खे या भाड़े पर लिये गये हैं। इन दोस्तों में से एक का नाम बाबू कृष्णप्रसाद और दूसरे का बाबू गोविन्दसहाय है।

ऊपर की मंजिल के सजे हुए कमरे में इस समय केवल कृष्णप्रसाद बैठे हुए हैं। उनके सामने संगमर्मर जड़ा एक बड़ा सा गोल टेबुल है जिस पर खिड़की में से टेढ़ी होकर आती हुई सूर्य की पहली किरणें पड़ कर बता रही हैं कि उस पर आगरे शहर और छावनी का एक बड़ा नक्शा रक्खा हुआ है। कृष्णप्रसाद इस समय इसी नक्शे पर झुके हुए बड़े गौर से कुछ देख रहे हैं।

यकायक कमरे के दर्वाजे पर अंधेरा होते पा उन्होंने सिर उठाया और साथ ही सुफेद अंगे पाजामे और साफे वाले एक बूढ़े चपरासी को वहाँ खड़ा पाया जिसकी सुफेद दाढ़ी छाती तक लटकी हुई थी, फिर भी वह तन्दुरुस्त और मजबूत मालूम होता था। कृष्णप्रसाद को अपनी तरफ देखते पा उसने झुक कर सलाम किया और अदब से पूछा, "क्या बाबू कृष्णप्रसाद साहब आप ही का नाम है?"

कृष्णप्रसाद ने एक तेज निगाह उस बूढ़े चपरासी पर डाली और तब उसकी बात का कोई जवाब न देकर कुछ कड़े स्वर में पूछा, "तुम्हें यहाँ आने किसने दिया? क्या नीचे कोई सिपाही नहीं है?" चपरासी ने जवाब दिया, "सिपाही तो बहुतेरे हैं, पर मुझे किसी ने रोका नहीं!"

कृष्णप्रसाद ने ताज्जुब से कहा, "रोका नहीं? सो क्यों?" उन्होंने टेबुल पर रक्खी नौकर को बुलाने वाली घंटी पर हाथ धरा पर उसी समय चपरासी खिलखिला कर हँस पड़ा और तब अपनी सुफेद बाढ़ी चेहरे से अलग कर तथा साफा उतार हाथ में लिये कमरे के भीतर आ गया। देखते ही कृष्णप्रसाद हँस कर बोले, "वाह गनपत, रूप तो तुमने खूब बदला!"

गनपत नाम मुँह से निकलने के साथ ही उन्होंने अचानक बढ़ा ली और इसके पहिले कि दूसरा व्यक्ति कुछ बोले कहा, "माफ करना, भूल हो गई!" "ऐसी भूल न होनी चाहिये" कहता हुआ वह आदमी बगल वाली कुर्सी पर आ बैठा। कृष्णप्रसाद ने पूछा, "कहो क्या क्या किया? तुम जो कल दोपहर से गायब हुए तो तुम्हारा कुछ पता न लगा!"

यह आदमी वास्तव में कृष्णप्रसाद के दोस्त गोविन्दसहाय थे। कृष्णप्रसाद की बात सुन उन्होंने कहा, "बहुत दूर से आता हुआ मैं बिल्कुल थक गया हूँ, सुस्ता [illegible] सुनाऊँ। तब तक बताओ कि तुमने क्या क्या किया?"

कृष्णप्रसाद। जो जो काम मेरे जिम्मे था वह मैंने सब कर डाला। (एक अखबार [illegible] कर) यह देखो सभी बड़े बड़े पत्रों में यह समाचार छप गया है [illegible] (मुस्कुरा कर) दो बड़े रईस बाबू कृष्णप्रसाद और बाबू गोविन्द-[illegible] आये हुए हैं और सोमवार को उनकी तरफ से इस शहर के रईसों [illegible] दिया जाता है कि शहर के बड़े बड़े अफसर कलेक्टर जज [illegible]

गोविन्द। (अखबार पढ़ कर) बहुत ठीक, अच्छा दूसरा काम?

कृष्ण। वह भी हो गया। (एक बड़ा सा हरे रंग का मोटा कागज सामने [illegible] यह लीजिये, मैंने अपनी पत्नी की शतरंज का पांच लाख रुपये पर यहाँ [illegible] इन्श्योरेन्स कम्पनी के पास बीमा करा दिया है। अगर यह चोरी [illegible] या आग लग कर नष्ट हो जाय, तो यह कम्पनी पाँच लाख [illegible]

गोविन्द। बहुत ठीक, अच्छा सेफ ?

कृष्ण०। मिल्टन कम्पनी से एक बहुत ही मजबूत सेफ खरीद कर नीचे बड़े कमरे में रखवा दिया है। आपके वे पन्ने के शतरंज के मोहरे इस समय उसी में है और उसकी ताली देखिये यह है।

कह कर कृष्णप्रसाद ने एक ताली टेबुल पर फेंक दी और तब बोले, "अब आगे का काम सोच लेना चाहिए कि क्या करना है।"

इस बीच में गोविन्दसहाय ने चपरासी की पोशाक उतार कर अपने मामूली कपड़े पहिन लिये थे। नकली दाढ़ी वगैरह रूप बदलने का सामान बगल की एक कोठरी में बन्द कर वे पुनः कृष्णप्रसाद के पास आ बैठे और बोले, "हाँ अब आगे का काम सोचना चाहिए मगर इसके पहिले मैंने क्या क्या देखा सुना और किया सो तुम्हें बतला दूं। सब से पहिले मैं मिस्टर केमिल के पास पहुंचा और उनसे कहा कि मैं फतेहाबाद बंक का वह कमरा अच्छी तरह देखना चाहता हूं जिसमें से वह मोती की माला चोरी गई है। वे तुरन्त तैयार हो गये। वहीं मैंने चपरासी वाला रूप बनाया और उनका अरदली बन उनके साथ बंक पहुंचा। आध घन्टे तक मैंने गुप्त रीति से उस कोठरी की अच्छी तरह जांच की, मगर बंक के मैनेजर के सिवाय बंक के और किसी भी कर्मचारी को इस बात का पता न लगने पाया। वहाँ कई नई बातें मालूम हुई जिनके लिए बंक के मकान के पीछे वाला उसके साथ सटा हुआ मकान भी मुझे देखना जरूरी हुआ।"

कृष्ण०। इसकी क्या जरूरत पड़ी ?

गोविन्द०। बताता हूं। (इधर उधर देख कर) कोई यहाँ हम लोगों की बातें सुनने वाला तो नहीं है ?

उन्होंने उठ कर चारो तरफ अच्छी तरह देखा और तब कमरे का दरवाजा बन्द करके अपनी जगह पर आ बैठे। सीढ़ी वाला दरवाजा वे आते समय बन्द करते आये थे।

गोविन्द०। जिस सेफ में से चोरी हुई उसके ताले में ऐसी तकीब लगी है कि उसका पल्ला सिर्फ दिन के दस बजे से शाम को पाँच बजे तक के बीच ही खुल सकता है, बाकी किसी समय में वह नहीं खुल सकता। केमिल साहब के हुक्म से उस सेफ को किसी ने न छुआ था और न कोई चीज उसकी हद्द से बाहर की गई थी, अब से कि यह चोरी हुई। मैंने अच्छी तरह जांच करके निश्चय कर लिया

कि सेफ को बन्द कर रखने वाला वह यन्त्र कहीं से बिगड़ा नहीं है, अतएव रात के समय तो सेफ खोल कर चोरी हुई नहीं। तब दो बातें रह गईं। या तो दिन ही में किसी जानकार ने सेफ खोल कर वह मोती की माला चुरा ली या फिर पीछे की तरफ से कोई कार्रवाई की गई। पहिली बात का पता तो बहुत कोशिश से लगेगा अस्तु दूसरी बात की जांच करने के लिए उस पीछे वाले मकान में जाना जरूरी था जो बंक के मकान से सटा हुआ है।

कृष्ण०। ठीक है, अच्छा तो उस मकान में गये ? वह खाली है या उसमें कोई रहता है ?

गोविन्द०। उसमें एक गरीब ब्राह्मण की घर गृहस्थी है जिसकी इतनी गई गुजरी हालत है कि आते समय मुझे कुछ रुपये उसे देकर आना पड़ा।

कृष्ण०। खैर तो वहाँ कुछ सुराग लगा ?

गोविन्द०। हाँ, इतना मालूम हो गया कि चोरी किस प्रकार हुई।

कृष्ण०। (खुश होकर) हाँ, यह पता लगा !

गोविन्द०। हाँ, चोरों ने उसी मकान की छत पर से सेंध लगाई और सेफ की पीठ काट कर छेद करके वह माला निकाल ली। उस जगह की दीवार नई बनी हुई देख मुझे सन्देह हुआ और मैंने साहब से वह जगह खुदवाने को कहा। दो आदमियों ने खोदा। तीन फीट मोटी दीवार और एक इञ्च मोटे लोहे के ऊपर से छेद करके सेफ की पीठ काट डाली गई थी और माला निकाल कर फिर उसी को इस प्रकार मरम्मत कर दी गई थी कि पहली जांच में कुछ पता नहीं लगा। पुलिस.....

कृष्ण०। एक बात, अगर सेफ काट कर चोरी हुई तो सेफ की जांच होने से इसे कैसे पता लगा ?

गोविन्द०। आक्सीजन गैस की मदद से लोहा काटा गया था और बाद में उसी की जगह वैसा ही नया टुकड़ा वहाँ रख कर रंग लगा दिया गया था।

कृष्ण०। मगर इस हालत में सेफ के भीतर की और कोई चीज क्यों नहीं जली ?

गोविन्द०। उस खाने में नवाब साहब के बेग के सिवाय और कोई चीज न थी इसी से बीच के और के बाकी खानों की चीजें दुरुस्त ही रह गईं। आक्सिजन गैस के हाल तो तुम्हें मालूम ही होगा ?

कृष्ण०। हाँ हाँ, वह एक तरह की आग की लवर होती है जिसके आगे

लोहा कागज की तरह जल कर कट जाता है, मगर फिर भी वह छेद इस सफाई से नहीं होता कि बाद में पता ही न लग सके।

गोविन्द०। यही तो मजा है! हाथ जाने लायक आठ अंगुल का एक गोल टुकड़ा काट कर माल चोरी कर ली गई और फिर उस जगह वैसा ही एक दूसरा टुकड़ा रख किसी प्रकार के मसाले से अच्छी तरह बैठा दिया गया। सेफ भीतर से नीले रंग से रंगा हुआ है। टुकड़ा जड़ कर भीतर से पुनः वह नीला रंग कर दिया गया जिससे यह जोड़ बेमालूम हो गया था।

कृष्ण०। मगर ऐसा करने के लिए फिर भीतर की तरफ से और दिन में कारंवाई की जानी चाहिए!

गोविन्द०। बेशक, और इसी से यह पता चलता है कि केवल बाहर से ही चोरी नहीं की गई बल्कि बैंक के कर्मचारियों में से भी कोई विश्वासी आदमी चोरों के साथ मिला हुआ था जिसने उस सेफ में भीतर से नया रंग लगाया।

कृष्ण०। उसका पता लगाना तो बहुत मुश्किल नहीं होना चाहिए! अच्छा फिर क्या हुआ?

गोविन्द०। यहाँ की पुलिस तो यही नहीं जान सकी थी कि चोरी हुई कैसे मैंने इतना तो किया! बस इतना काम करके मैंने मामला यहाँ की पुलिस के सुपुर्द कर दिया है, अब वह आगे की जाँच कर रही है। मैं अगर इस फेर में पड़ता तो सम्भव था कि हम लोगों का भेद खुल जाता अस्तु मैं अलग हो गया हाँ साहब दिलोजान से इस मामले के पीछे पड़ गए हैं।

कृष्ण०। ठीक है, मगर इतना तो तय है कि यह 'लाल-पञ्जा' कोई बेढब शय है जिसने इतनी गहरी कारंवाई कर डाली वह कोई मामूली आदमी नहीं हो सकता।

गोविन्द०। इसमें क्या शक है! और आजकल के वैज्ञानिक आविष्कारों से भी वह पूरी तरह से वाकिफ है। उसका पता पाना बेशक टेढ़ी खीर होगी।

कृष्ण०। कोई हर्ज नहीं, हम लोगों की कारीगरी भी अगर लग गई तो एक दम मन्त्र का काम करेगी। अच्छा बताओ कि 'बेगम के खजाने' की चोरी किस तरह हुई इसका कुछ पता लगा?

गोविन्द०। कहाँ से, समूचा दिन तो इन्हीं सब कामों में बीत गया फिर आधी रात कैमिल साहब के यहाँ सलाह मशविरे में बीती, अब और किसी रोज उधर जाऊँगा अभी इधर की फिक्र करो। (टेबुल पर देख कर) यह नक्शा क्यों फैला रखा है?

कृष्ण०। इस नक्शे से एक विचित्र बात का पता लगा है, इधर ध्यान दो तो कहूँ।

गोविन्द०। (नक्शे पर झुक कर) हाँ हाँ कहो।

दोनों दोस्तों में धीरे धीरे कुछ बातें होने लगीं।

(२)

एक बड़ा भारी कमरा जिसकी बारह खिड़कियों में से कोई भी जमीन से दस फिट से कम की ऊँचाई पर नहीं है तरह तरह के औजारों और मशीनों से भरा हुआ है।

इस कमरे की दीवारों में भी कुछ विचित्रता है। वे पूरी की पूरी कपड़े के गद्दों से ढँकी हुई हैं। केवल जमीन (सतह) को छोड़ कर समूची दीवारें यहाँ तक कि छत भी गद्दों से ढँकी हुई है और रोशनदान की तरह बनी हुई बारहों बड़ी खिड़कियों के पल्लों पर भी वैसे ही गद्दे चढ़े हुए हैं। इस कमरे में आने का दरवाजा किधर है इसका कुछ पता नहीं लगता और हम यह भी नहीं कह सकते कि यह कमरा किस महल्ले गली या सड़क पर है।

जैसा कि हमने ऊपर कहा यह कमरा तरह तरह के मशीनों औजारों और [illegible] से एक दम भरा हुआ है, पर और सभों का ध्यान छोड़ हम बीच के [illegible] पर रक्खे उस छोटे यन्त्र के पास चलते हैं जिसके सामने विचित्र सूरत [illegible] एक अद्भुत व्यक्ति खड़ा है।

इस आदमी का तमाम बदन यहाँ तक कि चेहरा भी काले कपड़ों से एक [illegible] हुआ है, सिर्फ आँखों के आगे देखने के लिए छेद बना हुआ है। पर वहाँ [illegible] है। हाथ की उँगलियाँ और नाखून तक भी उसी काले कपड़े के [illegible] हुए हैं और पैरों की भी वही हालत है। इस विचित्र आदमी के हाथ [illegible] किसी और पदार्थ का एक हाथ लम्बा और लगभग दो अंगुल मोटा [illegible] जिसके सहारे वह सामने के पत्थर के टेबुल पर रक्खे हुए एक विचित्र [illegible] सहारे कुछ कर रहा है। वह यन्त्र जो देखने में एक छोटे डायनमो (बिजली पैदा करने के यन्त्र) की तरह है, न जाने किस शक्ति से बड़ी तेजी के [illegible] है और उसके ऊपर बने हुए दो गोल मुट्ठों से बिजली की धारा [illegible] निकल कर 'चट चट' 'पट पट' शब्द के साथ इधर से उधर आ जा [illegible] विचित्र मनुष्य ने अपने हाथ वाले उस डंडे को उन मुट्ठों के बीच में [illegible] बिजली की शिखाओं ने उसे घेर लिया और वह लाल

होने लगा। लालिमा बढ़ते बढ़ते इतनी बढ़ी कि अब डण्डा सुर्ख होकर चमकने लगा और इसके कुछ ही देर बाद लोहा गल गल कर बूँद बूँद नीचे गिरने लगा। मगर उस मनुष्य के हाथ या बदन के किसी हिस्से को कोई नुकसान न पहुँचा। तब उसने उस डण्डे को रख दिया और अपना हाथ उन बिजली के मुट्ठों के भीतर कर दिया। आश्चर्य की बात थी कि बिजली की जिस आग ने लोहे के छड़ को मोम बना दिया था उसने इस आदमी के हाथ को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया बल्कि बिजली के स्फुलिंग उसके हाथ को छोड़ और दिशाओं में जाने लगे, मानो कोई उन्हें उधर जाने से रोक रहा हो। यह देख उसने खुशी भरी आवाज में कहा, "बस ठीक है, इस पोशाक में कोई आंच मुझे नुकसान नहीं पहुंचा सकती !!"

अद्भुत व्यक्ति ने यन्त्र के किसी पुर्जे को छूआ जिसके साथ ही उसका घूमना बन्द हो गया, बिजली की शिखाओं का निकलना भी रुक गया और वह भारी आवाज जो कमरे भर में गूँज रही थी बन्द हो गई। इसके बाद वह एक अल मारी के पास पहुंचा और उसमें से उसने पिस्तौल और कई कारतूस निकाले। अभी वह उन कारतूसों को पिस्तौल में भर ही रहा था कि एक कोने में लगी छोटी घंटी बजने लगी, साथ ही घन्टी के नीचे लगी हुई एक घड़ी की सूई घूम कर एक जगह पर स्थिर हो गई। सूई की नोक के सामने इस समय चौबीस का अंक था जिसे उस विचित्र मनुष्य ने गौर से देखा और तब एक बटन को दबा दिया जो उस घड़ी के नीचे लगा हुआ था।

बटन दबाते ही कमरे के उत्तर तरफ वाली दीवार में कुछ हलचल मालूम हुई और चमड़े के गद्दे का एक टुकड़ा दीवार से अलग होकर बगल को घूम गया जिसके पीछे एक दरवाजे की सूरत दिखाई पड़ने लगी। विचित्र मनुष्य ने एक ताली लेकर दरवाजे को खोला और बाहर की तरफ खड़े आदमी से कहा "भीतर आ जाओ।"

एक नाटा मगर मजबूत और गठीला आदमी भीतर आया, जिसने दरवाजा बन्द करके विचित्र मनुष्य को झुक कर सलाम किया और खड़ा हो गया।

विचित्र० । कहो नम्बर चौबीस, क्या बात है ?

चौबीस० । सरदार, मुझे एक अद्भुत बात मालूम हुई है।

विचित्र० । क्या ?

चौबीस० । मिस्टर केमिल के जिन दोनों दोस्तों गोविन्दसहाय और [illegible]

प्रसाद के पत्ले से बने हुए शतरंज के मोहरों की इतनी धूम मच रही है वे दोनों व्यक्ति वास्तव में कलकत्ते के कोई रईस नहीं हैं बल्कि वहाँ से आये हुए सरकारी जासूस गनपतराम और भवानीदत्त हैं।

विचित्र० । गनपतराम और भवानीदत्त !!

चौबीस० । जी हाँ।

विचित्र० । ठीक है, मुझे भी कुछ कुछ ऐसा ही शक हो रहा था।

चौबीस० । उन दोनों ने मिस्टर केमिल की मदद से यह सब रूपक खड़ा किया है और गहरी चालाकी खेली है। उनका इरादा है कि शतरंज के मोहरों की तलाश में 'लाल-पञ्जा' अगर वहाँ पहुंचे तो गिरफ्तार कर लिया जाय।

विचित्र० । हूँ, अच्छा उनके साथ हमारा कौन कौन आदमी है ?

चौबीस० । सरदार, नम्बर उन्नीस तो पहरेदारों में भरती हो गया है और इकतालीस उनका खानसामा बना हुआ है। नम्बर सैंतीस मोटर हांकने वाला बन कर गया था पर भरती न हो सका।

विचित्र० । उनकी यह बाबत कब है ?

चौबीस० । जी सोमवार को।

विचित्र० । अच्छा नम्बर उन्नीस और इकतालीस को खबर कर दो कि [illegible] मकान का पूरा नक्शा लेकर उनमें से कोई एक आज रात को मुझसे मिले।

चौबीस० । जो हुक्म !

इस बातों के बाद हुई जिसके बाद हाथ के इशारे से विचित्र मनुष्य ने नम्बर चौबीस को विदा किया और तब दरवाजा बन्द करने के बाद एक आराम कुर्सी पर बैठ कुछ सोचने लगा।

(३)

[illegible] उस मकान में आज बड़ी चहल पहल और रौनक है जिसमें [illegible] के दोनों रईस कृष्णप्रसाद और गोविन्दसहाय उतरे हुए हैं।

[illegible] शहर के मुख्य मुख्य रईस ही नहीं बल्कि जिले और शहर के बहुत से [illegible] भी यहाँ मौजूद हैं। पुलिस के बड़े और छोटे साहब, फौज के अफसर, [illegible] और कलक्टर आदि के सिवाय प्रांत के छोटे लाट के प्राइवेट सेक्रेटरी [illegible] भोज में शामिल होने के लिए आये हुए हैं जो इन रईसों ने अपनी [illegible] और फौजदारी आपदा के अकस्मात् मिल जाने की खुशी में दिया [illegible] इस आयोजन का भी यह पाठकों को अभी अभी मालूम हुआ जाता है।

एक बहुत बड़े और बिजली की रोशनी से जगमगाते हुए कमरे में आज के सभी मेहमान इकट्ठे हैं। बगल के एक दूसरे बड़े कमरे में नौकर लोग भोजन की तैयारी कर रहे हैं जो अंग्रेजी और हिन्दुस्तानी दोनों ढंगों का है, तथा तीसरी तरफ एक छोटे नाटक की तैयारी हो रही है। मेहमान लोग बड़ी आशा के साथ तरह तरह के पदार्थों की रसोईघर से आती हुई सुगन्ध को लेते हुए कई तरह के साजों की सुरीली आवाज भी सुन रहे हैं और आपस में हँसी खुशी की बातें भी हो रही हैं।

इसी समय फौजी अफसर मिस्टर बुलकाफ ने बाबू कृष्णप्रसाद से पूछा, "अगर अनुचित न समझा जाय तो क्या मैं पूछ सकता हूं कि वह कौन सी जायदाद है जो बहुत मुद्दत के बाद आपके हाथ लगी है और जिसने यह खुशी का मौका पैदा किया है?"

इस सवाल ने जो कुछ ऊँचे स्वर में किया गया था बहुतों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया और कई आदमी उत्कण्ठा के साथ कृष्णप्रसाद की ओर देखने लगे। अपने मेहमानों की इच्छा समझ कृष्णप्रसाद ने कहा, "मैं बड़ी खुशी से आपको बताने को तैयार हूं। मेरे परदादा नवाब वाजिदअलीशाह के मुसाहब थे। जब अंगरेजों ने नवाब साहब को कैद करके कलकत्ते भेजने का इरादा किया तो उस समय की बदअमनी और भगदड़ में नवाबी खजाने का बहुत सा माल लूटा गया और बरबाद हो गया। केवल थोड़े से फर्मावर्दार नौकर और कई बेगमें तो नवाब के साथ हुईं पर बाकी सबों में से जिसके हाथ जो लगा वही ले दे के चम्पत हुआ। मेरे वे परदादा नवाब के साथ शतरञ्ज खेलने और खेलाने की नौकरी पर थे। उन्होंने ऐसी मुसीबत के मौके पर अपने मालिक का साथ छोड़ना मुनासिब न समझा और नवाब साहब का शतरंज का सामान लेकर उनके साथ हुए। अन्त समय तक वे उनके साथ रहे। कलकत्ते के मटियाबुर्ज में अकसर वे शतरंज की अपनी अजूबी चालों से नवाब साहब के दुःखी दिलों को बहलाया करते थे जिससे खुश होकर मरने से कुछ पहिले नवाब साहब ने उन्हें शतरंज के मोहरों का एक सेट और बिसात अता फरमाई। कहा जाता है कि वह शतरंज का सेट दुनिया भर में सबसे बेशकीमत था और वही कीमती जायदाद थी जो मेरे परदादा से मेरे दादा को मिली और उन्हीं के जमाने में कहीं खो गई। आज पूरे पचास बरसों के बाद वह मुझे अपने बड़ों के लखनऊ वाले मकान के एक खण्डहर में दबी हुई मिली जिसकी खुशी में मैंने यह जलसा किया है।"

इस विचित्र हाल को सुनते ही कई आदमियों ने उन कीमती मोहरों को

देखने की इच्छा प्रकट की जिस पर कृष्णप्रसाद बोले, "मैं बड़ी खुशी से उस चीज को दिखाने के लिए तैयार हूं, पर कठिनाई यह है कि बहुत बेशकीमत होने के कारण मैंने शतरंज के उन मोहरों का बीमा करा दिया है और बीमा कम्पनी की हिदायत है कि जब तक उनका भेजा हुआ कोई आदमी मौजूद न रहे वे मोहरे उस कमरे के बाहर न निकाले जायँ जिसमें वे इस वक्त हैं, अस्तु मैं उन्हें यहाँ नहीं ला सकता, हाँ अगर आप लोग वहाँ तक चलने की तकलीफ गवारा करें तो खुशी खुशी उन्हें दिखाने को तैयार हूं।"

यह बात सुनते ही करीब करीब सभी आदमी उत्कण्ठापूर्वक उठ खड़े हुए और कृष्णप्रसाद उन्हें लिये हुए नीचे की मंजिल में आये जहाँ वह कमरा था जिसमें उनके कीमती शतरंज के मोहरे रक्खे हुए थे। यह एक बड़ा कमरा था जिसके अन्दर जाने का सिर्फ एक ही दरवाजा था और वह भी इस समय बन्द था। कृष्णप्रसाद ने अपने पास की ताली से यह दरवाजा खोला और सब लोग भीतर गये। बिजली का बटन दबाते ही कमरा रोशनी से जगमगा उठा और उसका कोना कोना साफ दिखाई पड़ने लगा। कमरे में एक तरफ काठ की मजबूत चौकी पर एक बड़ा सा सेफ रक्खा हुआ था जो देखने ही से बताता था कि मजबूती में अपना सानी नहीं रखता। कृष्णप्रसाद ने कहा, "इसी सेफ में मैंने वे कीमती मोहरे रक्खे हुए हैं जिन्हें अब मैं निकालता हूं।"

इस सेफ का ताला किसी ताली से नहीं खुलता था बल्कि कई प्रकार के नम्बरों अक्षरों और निशानों को मिलाने से खुलता था जो नित्य बदल दिये जाया करते थे। कृष्णप्रसाद ने आगे बढ़ अपने बदन की आड़ करते हुए उन इशारों को मिला कर ताला खोला। ताला खुलते ही कहीं से घन्टी बजने की आवाज आने लगी जिसे उन्होंने कोई खटका दबा कर बन्द किया और तब सेफ का पल्ला खोला। सब लोग उन कीमती मोहरों को देखने के लिए झुक पड़े। भीतर शीशे के एक डिब्बे के अन्दर रक्खे पन्ने के बने उन कीमती मोहरों की चमक और चकाचौंध से लोगों की आँखें चौंधियाने लगीं और जिस समय सभों को दिखाने की नीयत से कृष्णप्रसाद ने शीशे के उस डिब्बे को बाहर निकाल अपने हाथ पर रख ऊँचा किया उस समय बहुत सी बिजली के बल्बों की चमक पड़ने से वे मोहरे इस प्रकार तड़पने लगे मानों हरी बिजली वहाँ चमक रही हो। जिस प्रकार मीठे को चिउँटियाँ घेर लेती हैं उसी तरह उस लाखों रुपयों की चीज पन्ने से बने शतरंज के मोहरों को देखने के लिए कृष्णप्रसाद के सब मेहमानों ने उन्हें घेर लिया।

बहुत ही बड़े बड़े पन्ने के टुकड़ों को काट तराश कर बादशाह वजीर फील घोड़े हाथी तथा प्यादों का सोलह मोहरों का यह सेट बड़े से बड़े बादशाह की आँखों में भी लालच की चमक पैदा कर सकता था, फिर उन मामूली रईसों और अफसरों की तो बिसात ही क्या थी जिनमें से बहुतों ने तो कभी शायद अंगूठी में जड़े पन्ने या किसी किसी ही ने कण्ठों में इस कीमती जवाहिरात को देखा होगा। चारो तरफ से "वाह वाह" की आवाज आने लगी और कृष्णप्रसाद ने शीशे के उस डिब्बे को चारो तरफ घुमाते हुए कहा, "इसके मुकाबिले के लिए लाल का बना एक दूसरा सेट था पर वह कहाँ गया यह मैं नहीं कह सकता। अच्छा अब मैं इसे रख देता हूँ क्योंकि बीमा कम्पनी की आज्ञा है कि एक बार में पांच मिनट से अधिक देर तक यह चीज सेफ के बाहर न रहे।"

शीशे के डिब्बे को सेफ में रख कर कृष्णप्रसाद ने पल्ला बन्द किया जिसके साथ ही उसका ताला एक खटके की आवाज के साथ आप से आप ही बन्द हो गया सब लोग वहाँ से हट ही रहे थे कि यकायक चमक कर रुक गये। कहीं से किसी का फेंका हुआ एक गेंद कमरे के अन्दर आया और कृष्णप्रसाद के पैरों के पास गिर पड़ा। ताज्जुब करते हुए उन्होंने जब उसे उठाया तो देखा कि एक कागज गेंद के चारो तरफ लिपटा हुआ है। उन्होंने उसे अलग करके खोला और यह मजमून उस पर लिखा हुआ पाया :—

"मोहरे मैंने देखे। मुझे सन्देह है कि वे वास्तव में पन्ने के हैं या हरे काँच के अस्तु मैं चाहता हूँ कि जाँच के लिये उन्हें अपने साथ ले जाऊँ। अगर वे वास्तव में जवाहिरात के हैं तो रख लूँगा, वरना वापस कर दूंगा। पाँच मिनट का समय देता हूँ कि उन्हें बचाने का जो भी उद्योग मुनासिब समझ में आवे कर लिया जाय।"

चीठी के नीचे लाल-पञ्जे का मोहर बनी हुई थी।

(२)

कृष्णप्रसाद ने पहिले तो मन ही मन और तब भर्राई हुई आवाज में पढ़ कर उस चीठी का मजमून सभों को सुना दिया और तब वह कागज पुलिस के बड़े साहब के हाथ में यह कहते हुए दे दिया, 'साहब, आप लाल-पञ्जे से मेरी आबरू बचाइये!'

'लाल-पञ्जे' का नाम सुनते ही उस कमरे में एक तरह की सनसनी सी फैल गई। कुछ लोग जो कमजोर दिल के थे धीरे धीरे पीछे हटे और इस दावत से भूखे पेट मगर अपनी जान सही सलामत लेकर लौट जाने की इच्छा से

दरवाजे की ओर खसकने लगे, कुछ का हाथ अपनी जेबों में चला गया, और कुछ कौतूहल के साथ देखने लगे कि अब क्या होता है?

पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट मिस्टर केमिल ने कृष्णप्रसाद की बात सुन कर कहा, "मैं सब बन्दोबस्त अभी करता हूँ" और तब ऊँची आवाज में बोले, "कोई महाशय बाहर न जायँ जब तक कि यह राज खुल नहीं जाता कि इस गेंद और चीठी का फेंकने वाला कौन है।" इसके साथ ही उन्होंने एक सीटी जेब से निकाल कर जोर से तीन दफे बजाई। सीटी की आवाज निकलते ही उस मकान के हर कमरे के दरवाजे पर दो दो हथियारबन्द पुलिस के जवान खड़े दिखाई पड़ने लगे। न मालूम वे कहाँ छिपे हुए थे जो सीटी की आवाज के साथ ही प्रकट हो गये। उसी समय आठ सिपाही बन्दूक लिये उस कमरे के अन्दर भी आ मौजूद हुए जिन्होंने केमिल साहब के हुक्म से उस सेफ को चारो तरफ से घेर लिया। इसी के बाद नीचे सड़क पर खड़बड़ाहट की आवाज आई और कई आदमियों ने जब खिड़की से झाँका तो देखा क्या कि मकान के सदर फाटक पर पचास फौजी सिपाही आ मौजूद हुए हैं जो सब तरह के सामान से एक दम लैस हैं।

कहने में तो देर लगती है पर केमिल साहब की सीटी के साथ ही यह सब इन्तजाम कुछ इस तेजी और फुर्ती के साथ हो गया मानों सब कुछ पहिले से लैस था और फकत मौके और इशारे की राह देखी जा रही थी।

केमिल साहब ने एक फौजी अफसर से जो उनके बगल ही में मौजूद थे धीमे स्वर में कुछ बातें कीं और तब जोर से कहा, "लाल-पञ्जे ने जो धमकी दी है उसके लिए जो कुछ बन्दोबस्त हो सकता था कर लिया गया। अब उसकी मजाल नहीं जो इस कमरे से बाबू कृष्णप्रसाद साहब के कीमती मोहरों को ले जा सके। इस समय एक सौ फौजी और पुलिस के सिपाहियों ने बाहर और भीतर से पूरी तरह पर इस मकान को घेरा हुआ है और इसके हर एक कमरे और दरवाजे पर पहरा पड़ रहा है, फिर भी केवल सावधानी के खयाल से मुझे मजबूर होकर यह कहना पड़ता है कि बस मिनट के पहिले में इस कमरे के बाहर किसी को जाने की इजाजत नहीं दे सकता।" इस पर किसी ने कहा, "लाल-पञ्जे ने पाँच मिनट की मोहलत दी है जिसमें चार मिनट बीत चुके हैं, हम लोग खुद चाहते हैं कि देख लें कि वह क्योंकर अपनी धमकी पूरी करता है।" कई कमजोर दिल वाले कुछ कहना चाहते थे पर चुप रह गये और सब लोग उस घड़ी की सूई को

देखने लगे जो कमरे की दिवार के साथ लटक रही थी।

वह गेंद जिस पर लिपटी हुई लाल-पञ्जे की चीठी पहुंची थी अभी तक कृष्णप्रसाद के हाथ में थी। सरसरी निगाह देखने से वह केवल एक गोला सा मालूम होता था पर वास्तव में शायद कोई भयानक अस्त्र था। जिस समय घड़ी की सूई ने ठीक पाँच मिनट बिताये उसी समय वह गोला यकायक गर्म होने लगा और उसमें बने कई छोटे छोटे छेदों की राह धूआँ निकलने लगा। कृष्णप्रसाद के मन में बिजली की तरह सन्देह दौड़ गया कि कहीं यह बम का गोला न हो। उन्होंने झट उसे जमीन पर रख दिया और केमिल साहब से कहा, "मुझे सन्देह होता है कि यह गेंद नहीं बम है!"

बम का नाम सुनते ही कमरे भर में खलबली मच गई, सभी दरवाजे की तरफ खसकने लगे, स्वयम् केमिल साहब का पैर भी पीछे की तरफ खसकने को उठा, और वे आठों सिपाही भी जो सेफ को घेरे हुए थे अपनी बहादुरी भूल उसकी ओट में होने की कोशिश करने लगे। इसी समय कमरे के बाहर कहीं पर पिस्तौल छूटने की सी आवाज आई और इसके साथ ही मकान भर में जितनी बिजली की रोशनियां थीं सब अचानक ही बुझ गई। इस कमरे में भी घोर अन्धकार छा गया।

अँधेरा होते ही वहाँ भगदड़ मची और सब के सब मेहमान दरवाजे की तरफ भागे, क्योंकि उस गेंद में से अब केवल धूआँ ही नहीं बल्कि आग की चिनगारियाँ भी निकलने लगी थीं। परन्तु ताज्जुब की बात थी कि कमरे का दरवाजा बन्द हो गया था, अन्दर से सिकड़ी लग गई थी, और एक बड़ा सा ताला उसमें बन्द हो गया था। अब उस कमरे में मानों भूतों का साम्राज्य हो गया। शोर गुल चीख चिल्लाहट का हद न रहा। सभों को किसी प्रकार इस आफत से भागने ही की पड़ गई थी। सब से ज्यादा डर तो वह गोला दिला रहा था जिसमें से अब आग की लपटें निकल रही थीं, मगर भागने का कहीं कोई रास्ता हो तब तो!

इसी समय बड़े जोर की आवाज हुई। मालूम हुआ मानों कहीं बारूद फटी हो। कमरे की जमीन का उतना हिस्सा जिस पर सेफ रक्खा हुआ था नीचे को चला गया और बड़े जोर की आवाज के साथ वह भारी सेफ अपनी चौकी सहित उसी गड्ढे में धँस गया।

उस बम के गोले के धूएँ में भी कुछ अद्भुत असर था, क्योंकि धीरे धीरे उस कमरे के लोगों का चिल्लाना तथा दरवाजा खोलने के लिए जोर लगाना कम हो

गया, सभों के शरीर निर्बल होने लगे, और धीरे धीरे एक प्रकार की बेहोशी ने उन पर असर करना शुरू किया जिससे कुछ समय बाद सभी मूर्छित हो गये।

परन्तु केवल एक आदमी पर न तो उस बेहोशी ने असर किया और न किसी प्रकार के डर ने। यद्यपि वह भी सभों के साथ ही जमीन पर गिरा हुआ था पर पूरी तरह से होश में था। जब उसने आहट से समझ लिया कि सब बेहोश हो गये तो वह उठा। अपने जेब में से उसने बिजली की एक छोटी बत्ती निकाली और खटका दबा कर उसे बाला। हल्की रोशनी कमरे भर में फैल गयी। इस आदमी ने जिसने अपना मुँह कपड़े से ढाँक रक्खा था उस बत्ती की रोशनी में चारो तरफ देखा। सभी मूर्छित थे। वह कृष्णप्रसाद के पास पहुंचा और बड़ी देर तक उनकी सूरत देखता रहा, आखिर हाथ बढ़ा कर उसने उनकी बड़ी मोंछ को झटका दिया। नकली मोंछ अलग होकर हाथ में आ गई और सूरत में बहुत बड़ा फर्क पड़ गया तथा नकली बाल अलग करने पर तो चेहरा एक दम ही बदल गया जिसे देख उस आदमी के मुँह से निकला, "जो मैं समझता था वही बात है। यह शख्स कलकत्ते से लाल-पञ्जे को पकड़ने आया हुआ भवानीदत्त जासूस है। तब इसका दोस्त गोविन्दसहाय भी बेशक इसका साथी गनपतराम ही होगा। तो यह सब मिली मार थी? खैर कोई हर्ज नहीं!"

अपने जेब से उस आदमी ने कागज का एक टुकड़ा निकाला जिस पर लाल-पञ्जे की मोहर बनी हुई थी। पेन्सिल से उस पर कुछ लिखा, और तब एक आदमीन से उसे कृष्णप्रसाद की छाती पर कोट के साथ अटका वह उठ खड़ा हुआ। दरवाजे में बन्द ताला खोल लिया, हाथ की बत्ती बुझा कर जेब में रक्खी, और तब जिस गड्ढे में वह सेफ गिर गया था उसी में स्वयम् भी कूद गया।

पुलिस के इतने यत्न से सुरक्षित 'शतरंज के मोहरे' लाल-पञ्जे के हाथ में आ गये थे।

---

[५]

काला नाग

(१)

उन दिनों उत्तरी भारत में 'आगरा कूरियर' से नामी, बड़ा, या प्रसिद्ध और कोई अंगरेजी दैनिक नहीं था। इस अखबार का प्रचार प्रत्येक अंगरेजी पठित गृह में था और ऊँचे नीचे छोटे बड़े अमीर गरीब सभी इसे पढ़ते थे। इसका रोब और दबदबा यहाँ तक था कि सरकारी बड़े से बड़े अफसर भी इससे घबड़ाते थे और ऊँचे से ऊँचा तथा उद्धत से उद्धत पुलिस अफसर भी इसके कलमी तमाचों से डरता था। इसके सम्पादक मिस्टर एम० ए० प्रमानिक नामक एक दक्षिणी सज्जन थे और चाहे गलत हो या सही आम तौर पर यही मशहूर था कि उन्हें उतनी ही तनख्वाह मिलती है जितनी इस प्रान्त के छोटे लाट पाते हैं।

अस्तु कोई ताज्जुब की बात न थी कि जब इस 'आगरा कूरियर' में नीचे लिखा लेख छपा तो आगरे के अफसर समाज में ऐसी हलचल मच गई जैसी शायद बड़े लाट के इस्तीफे से भी न मचती। उस लेख का आरम्भ इस प्रकार था :—

"मालूम होता है कि यहाँ के पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट मिस्टर केमिल आगरे को रेगिस्तान ही बना डालना चाहते हैं जिसमें वे आनन्दपूर्वक यहाँ विचर सकें। सम्राट अकबर की इस प्रिय नगरी में तीन महीने के भीतर चार वारदातें हो चुकी हैं पर उन्हें किसी बात की कोई परवाह नहीं है। आज महीनों से एक खौफनाक और खूंखार डाकू, जिसने अपने को 'लाल-पञ्जा' के नाम से मशहूर कर रक्खा है, यहाँ खुलेआम सूचना दे दे कर खून कर रहा और डाका डाल रहा है पर यहाँ की कार्य-कुशल पुलिस कान में तेल डाले पड़ी है। यहां के बड़े रईस और भारी भारी जमींदार अपने जान और माल की सलामती न देख शहर छोड़ छोड़ कर भाग रहे हैं जिसकी खबर शायद सरकार तक पहुंचती नहीं

है। अगर यही हालत रही तो कोई ताज्जुब नहीं कि कुछ ही दिनों में यह शहर केवल ऊँटों की चरागाह होने लायक रह जायगा....."

इसके बाद उन चारों भयानक घटनाओं का जिक्र किया गया था जिनका हाल 'मोती की माला' 'बेगम का खजाना' 'एक करोड़ की चोरी' और 'शतरंज के मोहरे' के नाम से दूर दूर तक मशहूर हो चुका था और जिसकी बदौलत 'लाल-पञ्जे' का नाम गैर मुल्कों तक फैल चुका था। पुलिस के प्रबन्ध और शासन की बुराइयों पर टीका टिप्पणी करने और बड़े कड़े शब्दों में खुली निन्दा छापने के बाद लेख के अन्त में यह मजमून था :—

".....हमें विश्वास तो नहीं होता पर लोगों में आम तौर पर यह बात मशहूर हो रही है कि लाल-पञ्जे के काले कारनामों की बदौलत यहाँ का एक विशेष समाज जिसके सुपुर्द रिआया के जानोमाल की हिफाजत का काम है बेतरह फायदा उठा रहा है। हमारे पास इस विषय में बहुत सी चिट्ठियाँ और कुछ सबूत भी पहुँचे हैं, और अगर शीघ्र ही मुनासिब कार्रवाई न हुई तो आगामी मास प्रान्तीय लाट के आगमन के अवसर पर हमें लाचार होकर उन्हें प्रकाशित कर देना पड़ेगा जिसके लिये जिम्मेदार अफसरों को हम अभी से चेतावनी दिये देते हैं।"

* * *

जिस समय रात आठ बजे 'आर्मी क्लब' में दोस्तों के साथ ब्रिज खेलते हुए पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट मिस्टर केमिल के सामने उनके दोस्त कप्तान रिचर्डसन ने यह लेख रक्खा और कहा, "लो पढ़ो, और प्रमानिक की खोल सम्हालो!" उसी समय केमिल साहब ने ताश के पत्ते फेंक दिये और कूरियर उठा कर उस लेख को आदि से अन्त तक पढ़ डाला। पढ़ कर गुस्से से उन्होंने एक घूंसा टेबुल पर मारा जिससे उस पर की रक्खी चीजें उछल पड़ीं और तब उन्होंने कांपते हुए कहा, "इस कम्बख्त प्रमानिक को मैं गोली मार दूंगा!"

कप्तान रिचर्डसन ने उन्हें समझा बुझा कर शान्त किया और तब दोनों उठ कर क्लब के बाहर निकल आये। मिस्टर केमिल की नई मोटर बरसाती में खड़ी थी। उस पर चढ़ते हुए उन्होंने कहा, "मैं अभी उस दुष्ट प्रमानिक से मिलता हूं, उसने क्या समझ कर हम लोगों को घूसखोर बताया है!" रिचर्डसन ने कहा, "देखो, एक दम आपे के बाहर मत हो जाना" जिस पर अपने दोस्त का हाथ

दबा कर मिस्टर केमिल बोले, "नहीं नहीं, मगर मैं उस पाजी से 'सैटिसफैक्सन' जरूर लूंगा ! तुम खातिर जमा रक्खो, मैं इन पाजी सम्पादकों का हाल राई रत्ती जानता हूं।" दोनों दोस्तों ने हाथ मिलाया और मोटर चल पड़ी पर यह बात कहते कहते मिस्टर केमिल ने टटोल कर अपनी जेब में पड़ी पिस्तौल को एक बार जरूर देख लिया।

(२)

सेठ लाभचन्द जीवनचन्द आगरे ही क्या इस प्रदेश के सबसे बड़े जौहरी हैं। एक से एक बड़े राजा अमीर और जमींदार इनके यहाँ से जवाहिरात खरीद कर ले जाते हैं और इनकी सचाई सज्जनता और जानकारी का सन्देशा दूर दूर तक पहुंचाते हैं। सुना जाता है कि इनके यहाँ कीमती जवाहिरातों का जितना बड़ा संग्रह है उतना किसी स्वाधीन नरेश के पास भी नहीं है।

रात के कोई दस बजे होंगे सेठ लाभचन्द और उनके बड़े मुनीम परमेश्वरी दास एक छोटे कमरे में बैठे हुए हैं जो मकान की ऊपरी मंजिल में है। इस कमरे के चारो ओर लोहे की तिजोरियाँ रक्खी हुई हैं और सेठजी उनमें से कुछ हीरे तथा अन्य जवाहिरात निकाल निकाल कर एक छोटी चौकी पर सजा रहे हैं।

कई उलट फेर और अदल बदल के बाद एक सेट सेठ साहब को जँचा और उन्होंने मुनीम को दिखा कर कहा, "बस इससे अच्छा और कोई कण्ठा नहीं हो सकता।" मुनीम ने भी हाँ में हाँ मिलाई और कहा, "जी हाँ, इस दाम का इससे अच्छा जोड़ नहीं मिल सकता। राजा नानकचन्द इसे देखेंगे तो खुश हो जायेंगे।"

कुछ देर तक और बातें होती रहीं और तब सेठ साहब ने उन जवाहिरातों को एक अलग डिब्बे में बन्द करते हुए मुनीम से कहा, "कल सवेरे ही इन्हें जड़वाने का इन्तजाम करना। दरबार को सिर्फ कुछ ही दिन रह गये हैं और उसके पहिले ही कण्ठा राजा साहब को मिल जाना चाहिये।"

डिब्बा और बाकी चीजें सेफ में बन्द कर दी गईं। सेठ और मुनीम उस कोठरी के बाहर निकल आये और उसका मजबूत दरवाजा बन्द करते हुए नीचे उतर गये, परन्तु उस छोटे लड़के की तरफ किसी का ध्यान न गया जो कमरे की छत की कार्निस के ऊपर लेटा हुआ जरा सा गरदन निकाले रोशनदान के रास्ते भीतर का सब हाल देख और सुन रहा था। सेठजी और मुनीम को निकलता

देख वह पुनः कार्निस पर लेट कर छिप गया और जब वे दोनों चले गए तो उठ कर छत के एक कोने पर पहुंचा। यहां उसने हलके हाथों से ताली बजाई जिसके साथ ही बगल की किसी छत से एक पतली रस्सी उसके पास आ गिरी। इसे दोहरा कर उसने एक खम्भे के साथ अटका दिया और लटकता हुआ तथा हाथ और पैर के सहारे फिसलता हुआ आगे बढ़ने लगा। दूसरी छत पर पहुंचते पहुंचते मजबूत हाथों ने उसे सम्हाला और तब वह रस्सी भी खींच ली गई।

(३)

गुस्से से बफरते हुए मिस्टर केमिल 'आगरा कूरियर' के सम्पादक मिस्टर एम० ए० प्रमानिक के घर पर पहुंचे। आज के पहले वे कई बार इस बंगले में आ चुके थे पर वह आना दूसरे ढंग पर हुआ था, क्योंकि यद्यपि कूरियर की कोप दृष्टि प्रायः पुलिस के ऊपर पड़ा करती थी फिर भी वे प्रमानिक को अपना दोस्त समझते थे, परन्तु आज तो उसी प्रमानिक ने स्पष्ट शब्दों में उन्हें घूसखोर और अक्षम बताया था, अस्तु आज वे क्रोध से उबलते हुए यहाँ पहुंचे थे।

प्रमानिक बड़े ठाठ से रहते थे। किसी ऊँचे अंगरेज अफसर या बिगड़े दिल रईस से उनका रहन सहन घट कर न था। इस समय भी उसी कायदे से प्यादे ने मिस्टर केमिल को ड्राइंग रूम में बैठा दिया और उनका कार्ड लेकर कहीं जाने के बाद फिर आकर यह कह गया—"हुजूर थोड़ी देर इसी जगह आराम करें, राजा नानकचन्द 'साहब' से मिलने आये हुए हैं, उनके जाते ही पांच मिनट में 'साहब' आते हैं।"

राजा नानकचन्द का नाम सुन केमिल साहब चौंके। वे राजा नानकचन्द को अच्छी जानते थे, क्योंकि उन दिनों उनके जैसा अमीर चतुर धूर्त और साथ ही खुशामदी तथा मतलबी रईस आगरे भर में न था। केवल खुशामद और जी हुजूरी के बल पर वह बनिये से राजा बन बैठे थे और सी० आई० ई० होने के बाद अब के० सी० आई० ई० होने के लिये जोर लगा रहे थे। लाट साहब के दरबार में इनकी चलती भी खूब थी, क्योंकि कौन सा ऐसा दिल है जो खुशामद और दौलत से बस में नहीं होता ! पर यह जरूर है कि इनकी तारीफ प्रायः पीठ पर ही हुआ करती थी और पीठ पीछे अधिकतर निन्दा करने वाले ही दिखाई पड़ते थे। केमिल साहब इनके यहाँ होने का हाल सुन मन ही मन बोल उठे, "यह खुशामदी इस समय यहाँ क्या करने आया है !"

मिस्टर केमिल को थोड़ी देर के लिए यहीं छोड़ कर हम उस दूसरे कमरे में चलते हैं जिसमें कूरियर के सम्पादक और राजा नानकचन्द बैठे हुए हैं। कमरे की मद्धिम रोशनी बता रही है कि यह लाइब्रेरी है और इसी में बैठ कर मिस्टर प्रमानिक काम करते हैं। बड़े और कागजों से ढँके हुए टेबुल पर एक कोहनी टेके मिस्टर प्रमानिक आगे को झुके और बड़े उद्वेग के साथ बातें करते हुए राजा नानकचन्द की तरफ आधी बन्द आँखों से देख रहे हैं। राजा साहब बार बार बाएँ हाथ की हथेली पर दाहिने हाथ से मुक्का मार मार कर जोर देते हुए कह रहे हैं—"यह सरकार की सरासर ज्यादती है। मेरे दिये रुपयों का इतने दिनों का सूद मूल मिला कर चौंसठ लाख हो जाता है तो सब मिलना तो दूर, उल्टे मुझ पर यह इलजाम लगाया जाता है कि डेढ़ करोड़ की रकम में से मैं एक लाख खा गया हूँ। क्या ऐसी झूठी बात का भी कोई जवाब है? भला आप ही सोचिये कि कोई भी रईस और आली खानदान इस तरह की गन्दी बेईमानी करके बदनामी लेना पसन्द करेगा! यह और कुछ नहीं सिर्फ मुझे चौपट करने के लिए मेरे दुश्मनों का रचा हुआ जाल है, और अफसोस है कि लाट साहब भी इन झूठों के चक्कर में पड़ गये हैं। और कुछ नहीं तो कम से कम सूद तो मुझे....."

इसी समय आहट देता हुआ प्यादा आया और एक चाँदी की तश्तरी पर रक्खा हुआ मिस्टर केमिल का कार्ड उसने अपने मालिक के आगे बढ़ाया। कार्ड उठा और उस पर का नाम पढ़ प्रमानिक कुछ चौंके और बोले, "साहब को बैठाओ, मैं पाँच मिनट में उनसे मुलाकात करता हूँ।" नौकर सलाम कर चला गया और तब वे राजा साहब की तरफ देख कर बोले, "यहाँ के पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट मिस्टर केमिल मुझसे मिलने आये हैं, दूसरे अब देर भी बहुत हो चुकी है, इसलिये इस समय मैं इस मुलाकात को खतम करना चाहता हूँ। इस आधे घण्टे की बातचीत में जो कुछ मैं आपका मतलब समझ सका हूँ वह इस प्रकार है कि नैपाल की एक राजकुमारी ने जिसका नाम कामिनीदेवी है, जिसके पुरखा अपने राज्य से निकले जाकर बहुत दिनों से यहीं रहते आ रहे थे और जो अब नैपाल वापस लौटने की इजाजत पा गई है, अपनी नैपाल सरकार की मारफत यह दावा किया है कि उसके उन पुरखों ने कुछ जवाहिरात जिनकी कीमत वह दो करोड़ रियासत डेढ़ करोड़ और आप पचास लाख आँकते हैं, आपकी कोठी में कुछ अमानत के रक्खे थे जिन्हें अब वह वापस माँगती है। मगर आप उसे वापस

करने से इनकार करते हैं और जवाब में यह कहते हैं कि वे जवाहिरात आपके यहाँ गिरवी रख कर रुपया कर्ज लिया गया था जो सूद आदि मिला कर चौंसठ लाख रुपया हो चुका है और जवाहिरात वापस होने के पहिले आपको मिल जाना चाहिये। मैं ठीक समझता हूँ या गलत राजा साहब! यही बात है न?"

यद्यपि यह विवरण ठीक वैसा ही न था जैसा राजा साहब सम्पादक महोदय पर जाहिर किया चाहते थे परन्तु फिर भी उन्होंने कह दिया, "जी हाँ, यही बात है।"

प्रमानिक०। और अब आप यह चाहते हैं कि मैं इस बात को जिसे आप सरकार का अन्याय कह कर पुकारना पसन्द करते हैं एक सार्वजनिक प्रश्न बनाऊँ और अपने पत्र द्वारा ऐसा आन्दोलन करूँ जिसमें या तो वे जवाहिरात आप ही के पास रह जायँ या फिर आपको चौंसठ लाख देकर तब जायँ।

नानकचन्द०। जी हाँ, मैं आपके पत्र के प्रभाव से खूब परिचित हूँ और अच्छी जानता हूँ कि अगर आप आन्दोलन करेंगे तो कभी ऐसा अन्याय न होगा जिसमें मैं केवल भारी नुकसान ही न उठाऊँगा बल्कि हमेशा के लिए चौपट हो जाऊँगा।

प्रमानिक०। (कुछ सोच कर) मैं ठीक ठीक जवाब कल आपको दे सकूँगा, मगर उसके पहिले मैं यह जान लेना पसन्द करूँगा कि अगर मैं यह करने पर तैयार हो जाऊँ तो मुझे क्या लाभ पहुँचेगा?

इस सवाल के लिए मानों राजा नानकचन्द पहिले ही से तैयार थे। वे तुरन्त बोल उठे, "अगर आपका उद्योग सफल हुआ तो मैं पचास हजार रुपया नकद आपके अखबार के अर्पण करूँगा और अपना चकला बाग तथा तालाब वाली कोठी आपको रहने के लिए दे दूँगा।"

यह बात सुन मिस्टर प्रमानिक रुक गये और कुछ सोचने लगे, तब बोले, "बहुत अच्छा, मैं कल आपको जवाब दूँगा।"

दोनों आदमी उठ खड़े हुए। आदमियों का स्वभाव पहिचानने में चतुर राजा नानकचन्द ने प्रमानिक की आँखों में एक चमक देख कर अपना मतलब सिद्ध होता हुआ समझ लिया, पर क्या उस चमक का वही मतलब था जो उन्होंने समझा था?

(४)

राजा साहब को विदा कर मिस्टर प्रमानिक केमिल साहब के पास पहुँचे।

उनके तेज दिमाग ने कार्ड देखते ही समझ लिया था कि आज वाला उनका अग्रलेख ही केमिल के आने का कारण है अस्तु वे उनके लिए तैयार थे। उनको देखते ही मिस्टर केमिल ने हाथ मिलाए बिना ही गुलगते हुए ज्वालामुखी की तरह फट कर कहा, "मिस्टर प्रमानिक, मैं जानना चाहता हूं कि आज आपने 'कूरियर' में जो कुछ लिखा है उसका क्या आशय है ?"

प्रमानिक ने केमिल साहब को कुर्सी पर बैठने का इशारा किया और आप भी एक कुर्सी खींच कर बगल में रखे टेबुल के पास बैठते हुए बोले, "मुझे बड़ा ही अफसोस है कि मैं अपने लेख को ऐसी स्पष्ट भाषा में न लिख सका कि उसका मतलब साफ साफ समझ में आवे। सच तो यह है कि आज पहिले पहिल मुझ पर अस्पष्ट लिखने का अभियोग लगाया जा रहा है !"

केमिल ने गुस्से से होंठ चबाया और कहा, "तो मैं यह समझ लूं कि आपने जो कुछ लिखा है वह खूब सोच समझ कर और पूरी जिम्मेदारी के साथ लिखा है ?"

प्रमानिक ने केवल सिर झुका कर "हां" कह दिया। कूरियर की उन्नति के इन कुछ ही दिनों में उन्हें ऐसे ऐसे भड़के और बफरे हुए बहुत से लोगों से वास्ता पड़ चुका था, अस्तु वे ऐसी बातों के लिए सदा तैयार रहा करते थे। मगर उनकी इस "हां" ने केमिल साहब को और भी भड़का दिया। गुस्से से होंठ चबाते हुए उन्होंने अपनी जेब से कूरियर निकाला और वह लेख दिखाते हुए फिर पूछा, "इस जगह आपने जो यह लिखा है कि 'लाल-पञ्जे' की बदौलत यहां की पुलिस फायदा उठा रही है इसका कोई सबूत आप रखते हैं ?"

प्रमानिक०। मिस्टर केमिल, आप मेरे दोस्त हैं। कई बार मैंने आपकी सुशीला पत्नी और सुन्दरी बेटी मिस रोज के हाथ की चाय पी है। अगर ऐसा न होता तो मैं साफ साफ आपसे कह देता कि मैंने एक सम्पादक की हैसियत से जो कुछ लिखा है उस पर मुझे पूरा विश्वास है और अगर आपको उसमें कोई बात आपत्तिजनक मालूम होती हो तो अदालत खुली हुई है, आप वहां जाइये, मगर.....

केमिल०। अदालत ! अदालत !! मैं अदालत जाऊं ? क्या आप नहीं जानते कि मैं फ्रांसीसी हूं और फ्रांसीसी लोग बेइज्जती का बदला अदालतों द्वारा नहीं बल्कि इससे लेते हैं.....

कह कर उन्होंने एक चमकता हुआ तमंचा निकाल कर प्रमानिक के सामने

टेबुल पर रख दिया। प्रमानिक के होठों पर एक हलकी मुस्कुराहट आ गई। एक क्षण तक तो वे केमिल साहब के गुस्से से लाल चेहरे की तरफ देखते रहे और तब चुपचाप अपने टेबुल का दराज खोल उसमें से कोई चीज निकाल कर उन्होंने भी केमिल साहब की पिस्तौल के बगल में रख दी। आश्चर्य के साथ केमिल साहब ने देखा कि वह भी एक मजबूत और कड़ी मार करने वाला मौजर रिवाल्वर है।

सेकेण्डों के लिए, केवल कुछ ही सेकेण्डों के लिये, एक की आंख दूसरे से मिली, पर उतने ही में एक ने दूसरे की कीमत और दिल की मजबूती की थाह अच्छी तरह पा ली।

थोड़ी देर तक दोनों चुपचाप रहे। इसके बाद प्रमानिक ने कहा, "केमिल साहब, आप व्यर्थ का क्रोध करके अपने को हास्यास्पद बना रहे हैं। आप खूब जानते हैं कि आपकी मातहत पुलिस ने 'लाल-पञ्जे' का कुछ भी पता नहीं लगाया है और जिन दो रामपतराम और भवानीदत्त नामक जासूसों को कलकत्ते से आपने बुलाया था वे भी 'लाल-पञ्जे' की कारीगरी से बुरी तरह से चक्कर खा कर परेशान हो गये हैं, अस्तु इन बातों पर अगर एक पत्र सम्पादक की हैसियत से मैंने कुछ लिखा तो आपको उतना ही बुरा मानना चाहिए जितना कि मुनासिब हो। मैं पुनः जोर देकर कहता हूं कि आपका और आपके मातहतों का काम इस सम्बन्ध में बिल्कुल संतोषजनक नहीं हुआ है और मेरे दफ्तर में इस समय सैकड़ों चीठियां इस तरह की शिकायतों से भरी हुई मौजूद हैं तथा बराबर आ रही हैं। ऐसी हालत में अगर लोगों को यह शक हो जाय कि यहां की पुलिस 'लाल-पञ्जे' से मिल गई है तो क्या....."

इसी समय दर्वाजे पर कुछ आहट मालूम हुई। प्रमानिक ने उधर मुंह करके पूछा, "कौन है ?" जवाब में उनके चपरासी ने कहा, "मैं हूं हुजूर !" प्रमानिक ने उसे भीतर आने को कहा और उसने अन्दर आ कर दोनों को सलाम कर यह कहते हुए दो चीठियां आगे बढ़ा दीं, "अभी अभी एक छोटा लड़का ये चीठियां दे गया है और कह गया है कि बहुत जरूरी हैं।"

प्रमानिक ने लिफाफे देखे। एक पर उनका नाम लिखा हुआ था और दूसरे पर मिस्टर केमिल का। उन्होंने ताज्जुब करते हुए केमिल की चीठी उनके आगे बढ़ा दी और अपनी खोल कर स्वयं पढ़ने लगे। मैले गन्दे कागज पर अजीब कुछ अक्षरों में सिर्फ इतना लिखा हुआ था, "केमिल साहब को किसी काम से

शुकराने में एक घड़ी मिली है जो इस समय भी उनकी जेब में मौजूद है !" इसके नीचे लाल स्याही से लाल-पञ्जे का चिह्न बना हुआ था।

यह विचित्र बात पढ़ते ही प्रमानिक चौंक उठे और उनकी निगाह मिस्टर केमिल की तरफ घूम गई। उन्होंने देखा कि केमिल साहब का चेहरा लाल हो आया है और वे उद्वेग से काँप रहे हैं। अपनी चीठी खतम करते ही उन्होंने जल्दी से अपनी जेब में हाथ डाला और सोने की वह कीमती घड़ी निकाली जो दो ही महीने पहिले एक बड़े ही प्रिय मित्र ने उन्हें भेंट की थी। परन्तु घड़ी निकालते ही उनका चेहरा पीला पड़ गया, क्योंकि उन्होंने देखा कि यह वह घड़ी नहीं है जो बराबर उनकी जेब में रहती थी बल्कि कोई दूसरी ही घड़ी है जिसे आज के पहिले उन्होंने कभी देखा भी न था। काँपते हाथों से उन्होंने इस घड़ी का ढकना खोला, साथ ही एक छोटा सा कागज का टुकड़ा अन्दर से निकल कर नीचे गिर पड़ा जिसे प्रमानिक ने उठा लिया मगर केमिल ने उधर ध्यान न देकर घड़ी पर गौर किया। घड़ी के पिछले ढक्कन पर बड़े ही सुन्दर अक्षरों में "मिस्टर केमिल को एक दोस्त की भेंट—" ये शब्द और उसके नीचे एक पंजे का निशान खुदा हुआ था, जिसे देखते ही उनके माथे पर पसीना चू आया और गुस्से में भर कर उन्होंने वह घड़ी जमीन पर इस जोर से दे मारी कि उसके हजारों टुकड़े हो गये।

प्रमानिक केमिल का हाल देख हँस पड़े और बोले, "केमिल साहब, इतने ही में घबड़ा गये ! जरा इस पुर्जे को भी पढ़ लीजिये !!" केमिल ने वह पुर्जा ले लिया और पढ़ा, मगर पुर्जा पढ़ के सिर पर हाथ रख कुर्सी पर बैठ गये। प्रमानिक की आँखों में पुनः एक चमक दिखाई पड़ी और उनके होठों पर मुस्कुराहट पैदा हुई जो थोड़ी ही देर के लिये थी।

(५)

राजा नानकचन्द के मोतीबाग में इस समय बड़ी चहल पहल और रौनक है। काल ही उनके यहाँ छोटे लाट आने वाले हैं जिसके लिये बड़े जोर शोर से तैयारी हो रही है। महल सफाई रँगाई से चमक उठा है। सामने के बड़े रमने में चाँदी के खम्भों पर कारचोबी का भारी शमियाना टाँगा गया है, दूसरी तरफ भोज का इन्तजाम है, बाग को खूब रौनक दी गई है, रोशनी का बड़ा शहरा इन्तजाम है, और मनोविनोद के भी बहुत से सामान इकट्ठे किये जा रहे हैं। सैकड़ों आदमी काम कर रहे हैं और शोरगुल भी काफी हो रहा है।

मोती-महल के एक ऊपरी छोटे मगर सुफियाने कमरे में जो पीछे की तरफ बने एक तालाब पर खुलता है, राजा साहब और उनके दोस्त सुजानसिंह बैठे हैं। सुजानसिंह की घनी काली दाढ़ी और जूड़े के रूप में बँधे बाल उनके सिक्ख होने का सन्देह दिलाते हैं पर वास्तव में वे किस जाति के रत्न हैं अथवा किस प्रदेश के रहने वाले हैं यह किसी को मालूम नहीं। ये कुछ ही महीनों से आगरे में आये हैं और जब से आए हैं तभी से राजा साहब की मेहरबानी इन पर है, पर इस मेहरबानी का ठीक कारण लोगों की समझ में कुछ भी नहीं आता। कुछ दुष्टबुद्धि लोगों का तो कहना है कि राजा साहब ने उन्हें अपना 'हरम' भरा रखने का काम सौंप दिया है। खैर—जो कुछ भी हो, प्रकट में तो इनमें खुशामद करने की विचित्र प्रतिभा और हमेशा हर एक काम के लिये तैयार रहने की अद्भुत आदत के सिवाय और कोई विशेषता दिखाई नहीं पड़ती, अस्तु—

राजा साहब कपड़े से मढ़ी एक आराम कुर्सी पर खिड़की के सामने बैठे हुए हैं और सुजानसिंह एक दूसरी कुर्सी पर उनके बगल में बैठे हैं। तालाब की तरफ पड़ने वाली तीनों खिड़कियाँ खुली हुई हैं और उधर से ठंढी हवा और साथ ही कभी कभी दूसरी तरफ के रमने में काम करते हुए मजदूरों का शोरगुल आ रहा है। राजा साहब और उनके दर्बारी में धीरे धीरे बातें हो रही हैं—

नानक०। अफसोस तो यह है कि कामिनीदेवी यह शहर छोड़ नेपाल चली गईं। अगर वह यहाँ रहतीं तो कुछ न कुछ तरकीब की ही जाती, पर इतनी दूर से कुछ नहीं हो सकता।

सुजान०। जी हाँ हुजूर यही तो मुश्किल है, फिर भी ईश्वर चाहेगा तो सब कुछ ठीक हो जायगा। (हँस कर) उम्मीद है कि हुजूर का वह हीरे का कंठा अबकर कारगर होगा।

नानक०। (गम्भीर भाव से) देखो क्या होता है। अगर काम हो गया तो भी लाख इतनी बड़ी रकम के मुकाबले कुछ भी नहीं है, पर यदि नहीं हुआ तो बेशक और ज्यादा अफसोस होगा।

सुजान०। काम क्यों नहीं होगा हुजूर ! रुपये की जूती बड़ों बड़ों का सिर खुला देती है। लाख ऊँचे दर्जे पर कोई हो, जिस वक्त दो लाख कीमत का कंठा अपनी मेम साहब के गले में देखेगा पिघल कर मोम हो जायगा।

नानक०। उम्मीद तो ऐसी ही है, अब देखो किस्मत क्या कराती है !

प्रमानिक ने भी मदद देने को कहा है, अगर कुछ कर गया तो और अच्छा होगा।

सुजान०। जी हाँ हुजूर, अगर उसने अपने अखबार में आपका पक्ष ले लिया तो अफसरों पर पूरा दबाव पड़ेगा। उसकी कलम में बड़ा जोर है।

नानक०। इसमें तो शक नहीं, उसी गंगाविशुन हरनाथराय वाले मामले में देखो, कमिश्नर साहब फिटफिटाते ही रह गये और उसने सजा करा ही दी।

सुजान०। जी हाँ, और धरमपुरा की रानी वाले मामले में भी उसी का पल्ला भारी रहा। बड़े बड़े अँगरेज उससे डरते हैं। वह अगर जोर देगा तो हुजूर वाला मामला भी जरूर फतेह होगा। वे कागज पत्र तो हुजूर ने उसके पास भेज ही दिये होंगे जो उसने माँगे थे?

नानक०। हाँ उसी दिन भेज दिये, पर न मालूम उनसे वह क्या मतलब निकाला चाहता है। अभी तक तो उसने एक लाइन भी मेरे बारे में नहीं लिखी!

सुजान०। जरूर लिखेगा हुजूर! आपने तलब भी तो उसे ऐसी दी है कि उसके मुँह में पानी भर आया होगा। उसकी मजाल नहीं कि मुँह मोड़ सके और फिर अगर जरा भी धौं-चपड़ करेगा तो मैं जो बैठा हूँ! ऐसा छकाऊँगा कि बचाजी भी याद करेंगे!!

नानक०। हाँ तुम्हारे ऊपर तो मुझे बहुत भरोसा है—पर अभी तक तुमसे कोई नाजुक काम मैंने लिया नहीं।

सुजान०। यह मेरी बदकिस्मती है, मैं तो हर वक्त हुजूर की खिदमत में तैयार हूँ और मुश्किल से मुश्किल काम के लिए हरदम मुस्तैद रहता हूँ।

नानक०। ऐसी बात! तब एक काम तुम्हारे सुपुर्द करूँ?

सुजान०। वाह, इससे बढ़ कर क्या हो सकता है! हुजूर एक बार आजमाइश तो करें!

नानक०। समझ रक्खो कि यह काम उन छोटे मोटे कामों की तरह सहज नहीं होगा जो अब तक तुमने किये हैं! (हँस कर) यह अगर जंगल की चिड़ियाएँ लाना था तो इस बार शेरनी पकड़नी होगी!!

सुजान०। (छाती ठोंक कर) मैं हर तरह के काम के लिये तैयार हूँ, सरकार के बस कहने भर की देरी है।

नानक०। अच्छा तो सुनो, मैं चाहता हूँ कि कामिनी रानी को अपने महल में दाखिल करूँ। आखिरी दफे जब वह मेरे पास इस बारे में बात करने आई

थी उसी समय मेरी तबीयत उस पर लट्टू हो गई थी और अब तो यह हालत है कि जब याद आती है दिल तड़प कर रह जाता है। क्या बताऊँ, मामला बड़ी गहरी रकम का है नहीं तो उसकी सब चीजें उसे देकर या जैसे भी वह राजी होती वैसे उसे खुश करता और अपने पर मेहरबान बनाता। अब भी कभी कभी.....! खैर, तो बस मैं यही चाहता हूँ कि चाहे जिस तरह भी हो उस सुन्दरी को अपने बगल में बैठाऊँ। कहो यह तुम्हारे किये हो सकता है?

सुजान०। (कुछ देर चुप रह कर) हुजूर ने काम तो बड़ा मुश्किल सौंपा है, पर इतने दिनों का नमक कब काम आवेगा? मैं सब तरह से तैयार हूँ। चाहे जान भी चली जाय पर जैसे होगा उस नाजनीन को आपके सामने लाऊँगा, बल्कि सच तो यह है कि मैं खुद यह बात सरकार से कहा चाहता था कि अगर कामिनीदेवी आपके बस में हो जायँ तो यह झगड़ा सहज ही में तय हो जाय, न कोई अपनी धरोहर ही माँगे और न किसी को हिसाब ही देना पड़े। हाँ इसमें शक नहीं कि काम मुश्किल जरूर है।

नानक०। मगर अपनी होशियारी दिखाने का ऐसा मौका भी तो तुम्हें कोई दूसरा नहीं मिलने का!

सुजान०। यह तो हुजूर की मेहरबानी है, नहीं तो यह नाचीज हुई क्या! खैर अब तो यह काम हाथ में ले ही लिया। हुजूर का कदम छूकर कसम खाता हूँ कि या तो उस छोकरी को हुजूर के बगल ही में बैठाऊँगा और या फिर अपनी जान ही दे दूँगा! (चौंक कर) हैं, यह क्या!!

यकायक सनसनाती हुई कोई चमकदार चीज खिड़की में से आकर इन दोनों के बीच में रक्खे चन्दन के छोटे टेबुल पर गड़ गई जिससे दोनों आदमी चिहुँक उठे। जब निगाह ठहरी तो देखा कि वह बालिश्त भर लंबी एक छुरी है जो बाहर कहीं से आकर नोक की तरफ से टेबुल पर गड़ गई है और जिसका मुट्ठा अभी तक काँप रहा है।

दोनों आदमी चौंक कर खड़े हो गये और दोनों ही का कलेजा न जाने किस आशंका से काँप गया। आखिर कुछ होश सम्हाल कर राजा नानकचन्द ने कहा, "यह किसने फेंका? देखो तो!" सुजानसिंह ने खिड़की में से झाँक कर चारो तरफ देखा और कहा, "यहाँ तो कोई नहीं है! न जाने यह कहाँ से आया?"

राजा साहब ने भी खिड़की के पास आ चारो तरफ देखा पर कहीं किसी

मनुष्य की सूरत दिखाई न पड़ी। आखिर दोनों पुनः अपनी अपनी जगह वापस आये। उस समय राजा साहब की निगाह एक छोटे कागज के टुकड़े पर पड़ी जो उस छुरी के दस्ते के साथ बँधा हुआ था। काँपते हाथों से उन्होंने वह पुर्जा खोला और पढ़ा। यह लिखा था :—

"इस चीठी के जरिये आपको इत्तिला दी जाती है कि जो कुछ आपने करने का इरादा किया है उसे छोड़ दें वरना धोखा खाएँगे।

"यह दिखाने के लिए कि मुझे आपके सब भेदों की खबर है, मैं आज ही वह कण्ठा साथ करूँगा जो आप बतौर घूस के या जो कुछ आप समझें, किसी को दिया चाहते हैं और जो थोड़ी ही देर में जवहरी की दूकान से आपके पास पहुंचेगा !"

इस मजमून के नीचे 'लाल-पञ्जे' की छाप पड़ी हुई थी जिसे देखते ही राजा नानकचन्द काँप उठे। कागज उनके हाथ से छूट गया और वे बदहवास होकर कुर्सी की पीठ पर उठंग गए।

* * * *

मिस्टर केमिल की मोटर जिस समय उनके बँगले के बरजे पर आकर रुकी उसी समय वर्दी पहिने हुए राजा नानकचन्द के सिपाही ने आगे बढ़ कर उन्हें सलाम किया और चीठी दी। केमिल साहब ने चीठी खोल कर पढ़ी और पढ़ने के साथ ही उनके माथे पर सिकुड़न पड़ गई तथा आँखों के कोने में कुछ लालिमा दिखाई पड़ने लगी। उन्होंने उसी चीठी की पीठ पर जेब से कलम निकाल कुछ लिखा और चीठी सिपाही को देकर कहा, "तुम इसे अभी कोतवाल साहब के पास ले जाओ, मैं राजा साहब के पास चलता हूं।" सिपाही सलाम कर विदा हुआ और केमिल साहब घर के अन्दर पैर रक्खे बिना ही पुनः मोटर पर चढ़ राजा नानकचन्द के मोतीबाग की ओर चले। यद्यपि वे लाट साहब की अवाई के इन्तजाम में दिन भर दौड़ धूप कर थक गये थे पर कर्तव्य-परायणता ने उन्हें आराम करने की इजाजत न दी।

राजा नानकचन्द अपने कमरे में बेचैनी के साथ इधर से उधर घूम रहे थे जब केमिल साहब वहाँ पहुँचे। उन्होंने हाथ मिलाया और तब तुरन्त ही बेचैनी के साथ कहा, "केमिल साहब, इस शैतान लाल-पञ्जे से मेरी जान बचाइये !!"

केमिल०। मैं इस कम्बख्त का नाम सुनते ही खुद परेशान होकर दौड़ा चला आ रहा हूं। कहिये क्या मामला है ?

नानक०। मामला यह है कि कल के दर्बार में पहिनने के लिये मैंने हीरे का एक कण्ठा तैयार करवाया है जो थोड़ी ही देर हुई जवहरी के यहाँ से आया है पर उसके आने के पहिले ही मुझे लाल-पञ्जे की चीठी मिली है जिसमें लिखा है कि 'होशियार हो जाओ, मैं आज ही वह कण्ठा चुरा ले जाऊँगा' !

इतना कह कर नानकचन्द ने विस्तार से मगर कुछ हेर फेर के साथ वह हाल सुनाया, पर लाल-पञ्जे की वह चीठी नहीं दिखाई, केवल छुरी दिखाई, और चीठी के विषय में कह दिया कि न मालूम घबराहट में कहाँ रख दी कि मिलती नहीं। केमिल साहब गौर के साथ यह सब हाल सुन गये और अन्त में बोले, "बड़े ताज्जुब की बात तो यह है कि मुझे कई दिन हुए इस शैतान की एक चीठी मिली थी जिसमें लिखा हुआ था कि मैं एक हफ्ते के अन्दर एक मशहूर जगह पर दो लाख रुपये की चोरी करूँगा। मैं यह चीठी पाकर बड़ा परेशान था और सोचता था कि शायद लाट साहब के सामानों में कोई चीज चोरी न हो जाय जिससे बड़ी बदनामी होगी पर अब मालूम हुआ कि उसका इरादा आप पर वार करने का था। खैर कोई घबराहट की बात नहीं है, आप बिल्कुल बेफिक्र रहें। मैंने कोतवाल साहब को बीस सिपाहियों सहित बुलाया है। बहुत जल्द वे यहाँ आ पहुँचेंगे और पहरे का काफी इन्तजाम हो जायगा। क्या मैं जान सकता हूं कि वह चीज रक्खी कहाँ गई है ?"

नानक०। यही है, मैं अभी आप को दिखाता हूं।

यह कह कर राजा साहब ने "रामू, रामू" कह कर कई आवाजें दीं। रामू उनके खास खिदमतगार का नाम था जो हर दम उनके साथ रहता था। कई आवाज देने पर भी वह रामू तो दिखाई न पड़ा मगर एक मजदूर ने जो शायद वहाँ काम करते हुए सैकड़ों आदमियों में से कोई एक था अन्दर झाँक कर कहा, "सरकार, रामू भैया मैदान में मजूरों को कुछ बताने गये हैं, क्या जाऊँ बुला लाऊँ ?"

राजा साहब बोले, "हाँ" पर फिर तुरन्त ही कुछ सोच उसे रोक कर खुद उठे और आलमारी खोल उसके अन्दर की चमड़े की एक पेटी को तरफ इशारा करके उस आदमी से बोले, "इसे उठा कर साहब के पास ले चलो।" वह आदमी तुरन्त कमरे के अन्दर आ गया और वह पेटी उठा जहाँ राजा साहब ने बताया था वहाँ रख कर पुनः कमरे के बाहर जाने लगा। राजा साहब ने पेटी को अपने पास की ताली से खोला और उसमें से कुछ निकालने के लिये झुके

ही थे कि यकायक चौंक कर पीछे हट गये क्योंकि उन्होंने देखा कि पेटी के बगल ही में एक नाग फन काढ़े हुए खड़ा है जिसकी चमकती हुई आँखें डर पैदा कर रही थीं। राजा नानकचन्द डर कर कई कदम पीछे हट गये पर उस नौकर ने जो अभी तक कमरे के बाहर नहीं हुआ था इस समय गजब की फुर्ती दिखाई। अपने मालिक को खतरे में पड़ा देखते ही वह झपट कर वापस दौड़ आया। अपनी जान पर खेल उसने एक हाथ से उस साँप के फन को और दूसरे से उसकी पूँछ को पकड़ा और उसी बेग में डाल झटके के साथ उसे बन्द करते हुए अपना हाथ बाहर खींच लिया। इसके बाद उसने बेग को उठा कर इस जोर से कमरे के बाहर फेंका कि बाहर का सहन पार करता हुआ वह एक दम केमिल साहब की मोटर के अन्दर जा गिरा।

यह सब काम इतनी फुर्ती के साथ हो गये कि केमिल और नानकचन्द देखते ही रह गये। उन्हें तब होश हुआ जब उन्होंने देखा कि बेग के पीछे पीछे वह मजूरा भी दौड़ कर उसी मोटर पर जा चढ़ा और मोटर तुरन्त फाटक की तरफ दौड़ी। उस समय राजा साहब के मुँह से निकला—"केमिल साहब दौड़िए! उसी बेग में मेरा वह दो लाख रुपये वाला कण्ठा है!"

दोनों आदमी "चोर, चोर! पकड़ो!!" चिल्लाते हुए बाहर को दौड़े, मगर उस तेज भागती हुई मोटर को भला कौन रोक सकता था? दम के दम में वह बाग का फाटक पार कर आँखों की ओट हो गई और लोग पीछा ही करते रह गए।

* * *

जिस समय कोतवाल साहब सुपरिन्टेन्डेन्ट के हुक्म मुताबिक बीस सिपाहियों को लिये मोती महल के फाटक में घुस रहे थे उस समय केमिल साहब दरवाजे के पास पड़े एक कागज को उठा रहे थे। कागज पर सिर्फ लाल-पञ्जे का निशान बना हुआ था जिसे देख उन्होंने गुस्से से दाँत पीसा और घूँसा दिखाते हुए कहा, "भला कम्बख्त! कभी तो तू मेरे हाथ में पड़ेगा!!"

---

[६]

हीरे का मोर

(१)

रात के कोई साढ़े आठ बजे होंगे। प्रसिद्ध जौहरी सेठ लाभचन्द जीवनचन्द की जवाहिरात और सोने चाँदी के बरतनों की दूकान रोशनी से जगमगा रही है। आज इनकी दूकान में भीड़ भी बेहद है, केवल अन्दर ही नहीं बल्कि बाहर भी सैकड़ों आदमी मौजूद हैं और बड़े बड़े हलब्बी शीशों की आलीशान खिड़कियों की राह भीतर की चीजें देख रहे हैं। यों तो नित्य ही रात के समय उनकी दूकान पर भीड़ हो जाया करती है, पर आज विशेष तौर पर होने का कारण यह जवाहिरात जड़ा सुन्दर और बेशकीमत मोर है जो महारानी नेपाल की आज्ञानुसार तैयार किया गया है और केवल एक दिन के लिए लोगों के देखने वास्ते शीशे के ढकने के नीचे ऐसी जगह रक्खा गया है जहाँ सभी आदमी उसे देख सकते हैं।

यह जड़ाऊ मोर जो बिलकुल सोने का है एक छोटे मन्दिर का काम लेने की नीयत से बनाया गया है। इसमें नेपाल की महारानी के खास पूज्य श्री मुरली-मनोहरजी प्रतिष्ठित किये जायेंगे। जिस प्रकार से मशहूर 'तख्ते ताऊस' का वर्णन इतिहास हमें बताता है उसी ढंग पर यद्यपि उससे बहुत छोटा, यह मोर बना है। मोर की पीठ पर लगभग डेढ़ बालिश्त की चौखूटी जगह इस तरह पर खाली है कि वहाँ भगवान का छोटा जड़ाऊ मन्दिर रखा जा सके। तब उस मन्दिर के आगे की तरफ मोर की जवाहिरात से जड़ी नीली गरदन पड़ेगी और पीछे की तरफ पीली हुई पूँछ जिसके अग्रिम रंगों को जवाहिरात और मीने की मदद से तैयार करने में कारीगरों ने अद्भुत सफलता प्राप्त की है। इसके बनाने में कितनी लागत लगी होगी इसका अन्दाजा करना कठिन है, क्योंकि इसमें लगे हुए बहुत

से जवाहिरात रियासत ही के भेजे हुए हैं, केवल तीन चार लाख रुपये के लाभचन्द जीवनचन्द ने लगाये हैं, और सोना भी अधिकांश रियासत का ही भेजा हुआ है केवल थोड़ा ही यहाँ लगाया गया है, हाँ कारीगरी और बनावट बिल्कुल यहाँ की है और सेठ लाभचन्द जीवनचन्द के कारखाने ने बड़े ही परिश्रम से साल भर की मेहनत के बाद इसे तैयार किया है।

इसी विचित्र वस्तु को देखने के लिए आज इस दूकान में इतनी भीड़ लगी हुई है। अमीर लोग भीतर से पास पहुँच कर और साधारण या मध्य-वृत्ति वाले बाहर ही से इस 'मयूर-मन्दिर' को देख रहे हैं। मन्दिर दूकान के बीचोबीच में एक ऊँचे संगमरमर के टेबुल पर गोल शीशे से ढंका हुआ रक्खा है। टेबुल के चारों कोनों पर चार गोरखे नंगी खुखड़ियें हाथ में लिए पुतलों की तरह खड़े हैं। एक बगल में सेठ जीवनचन्द खड़े मुस्कुराते और हँसते हुए अपने मित्रों और ग्राहकों से बातें करते और मन्दिर की खूबियाँ बता रहे हैं तथा दूसरी तरफ एक नेपाली सरदार जिसकी सूरत से वीरता टपक रही है, जेब में हाथ डाले चुपचाप कुरसी पर बैठा बातों से अपनी ऊब इस तरह बचा रहा है कि रंग ढंग से ही पता लगता है कि यह सब भीड़ भड़क्का और शोर गुल उसे बिल्कुल सह्य नहीं हो रहा है। इस सरदार का नाम नरपतिसिंह है। यह नेपाल के सेनापति का लड़का है और इस 'मयूर-मन्दिर' को लाने के लिए नेपाल से भेजा गया है। मन्दिर के साथ साथ लोगों की आश्चर्य भरी निगाहें जब इसकी ओर पड़ती हैं तो इसे और भी असन्तोष होता है और वह मन्दिर के साथ अपने को भी प्रदर्शन की वस्तु बनता देख मन ही मन आधिकाधिक क्षुब्ध होता जाता है। बार बार इसकी निगाह घड़ी की तरफ घूमती है और यह मना रहा है कि किसी तरह नौ बजे, दूकान बन्द हो, और इस आफत से नजात मिले।

(२)

दूकान के सामने, सड़क के उस पार, जहाँ कुछ अँधेरा सा है, दो आदमी खड़े हैं। चेहरे मोहरे और पोशाक से ये बिल्कुल मामूली बल्कि गरीबों की श्रेणी में गिने जाने योग्य मालूम होते हैं पर इनकी बातचीत जो बहुत ही धीरे धीरे हो रही है इनके बारे में कुछ दूसरी ही कहानी कह रही है।

एक०। सरदार, यह चीज हाथ मारने लायक है!

दूसरा०। हाँ है तो बेशक, पर इसका दखल करना आसान नहीं है।

पहिला०। इसमें क्या शक है, महाराज नेपाल ने चुने हुए और विश्वासी पचीस गोरखे सिपाहियों के साथ खास अपने सेनापति के लड़के को इसे लेने भेजा है। यहाँ से भी सरकारी पुलिस का एक दस्ता इसके साथ साथ नेपाल की सरहद तक इसे पहुँचाने जायगा। ले जाने के लिए रेल का खास तौर पर मजबूत डिब्बा आया है जिसमें यह जायगा। सभी कुछ हिफाजत का सामान है, पर फिर यह भी तो है कि ऐसी कीमती रकम कभी किसी के देखने में भी नहीं आई होगी, पाना तो दूर की बात है।

दूसरा०। खैर इसलिए तो नहीं परन्तु इसलिए जरूर कुछ करने का मन करता है कि इस चीज की हिफाजत का बहुत बड़ा प्रबन्ध किया गया है। उनको देखते हुए यह इच्छा होती है कि एक बार चेष्टा कर देखूँ, मगर दिल जरा डरता है!

पहिला०। (हँस कर) आपके दिल में और डर सरदार! इतने.....(रुक कर) यह मोटर पर कौन आया है? यहाँ के पुलिस सुपरिन्टेण्डेन्ट मिस्टर केमिल हैं क्या?

दूसरा०। (गौर से देख कर) हाँ, मालूम तो यही होता है। मगर यह बेवक्त यहाँ क्यों आया?

दोनों आदमी गौर से उधर ही को देखने लगे मगर उसी समय उनका ध्यान एक दूसरे आदमी पर गया जो विचित्र तरह से दबता और झिझकता तथा लँपड़ाता हुआ इन्हीं की तरफ बढ़ा आ रहा था। थोड़ी ही देर में वह पास आ गया और इन दोनों की तरफ गौर से एक निगाह डालने बाद उँगलियों से कुछ इशारा करने लगा। दूसरे आदमी ने भी कुछ इशारा किया जिसके साथ ही वह पास आ पहुँचा और एक लपेटा हुआ कागज उसके हाथ में दे पहिले ही की तरह लँपड़ाता हुआ आगे बढ़ गया।

दूसरे आदमी ने कुछ आगे आ कर सड़क पर लगे एक लम्प की मद्धिम रोशनी में उस कागज को पढ़ा और तब टुकड़े टुकड़े कर जमीन पर फेंकते हुए अपने साथी से कहा, "मिस्टर केमिल को नेपाल में शिकार खेलने का बुलावा आया है और वे इस मयूर-मन्दिर के साथ ही साथ वहाँ जा रहे हैं।"

पहिला०। क्या सचमुच? तब तो इस मन्दिर पर काबू करना और भी कठिन है!

दूसरा०। बेशक, और इसीलिए मैंने इसे लेने का इरादा पक्का कर लिया।

पहिला० । यद्यपि इच्छा तो होती है कि यह भारी शिकार जाने न पावे पर जोखिम बहुत दिखाई पड़ती है ।

दूसरा० । बेशक, मगर तुम अच्छी तरह जानते हो कि मुख्य तौर पर जोखिम ही वह लालच है जिसने मुझे इस तरह के कामों को करने का चस्का लगा दिया है । खैर अब तो मैंने ठान ही ली, अब उपाय सोचना चाहिए । अच्छा सुनो.....

कहते और आपुस में बहुत धीरे धीरे बातें करते हुए वे दोनों एक तरफ को चले गये । उनके जाने के थोड़ी देर बाद एक और आदमी जो न जाने कहाँ छिपा खड़ा था, उस जगह आ मौजूद हुआ । पहिले तो उसने गौर से चारों तरफ देखा और तब जमीन पर बैठ जल्दी जल्दी वे कागज के टुकड़े चुन लिए जो इन दोनों आदमियों ने वहाँ फेंके थे । टुकड़े उठा वह खुद भी फौरन ही कहीं गायबहो गया ।

(३)

घड़ी में टन टन नौ बजने के साथ ही सेठ लाभचन्द जीवनचन्द ने अपने दोस्तों को बिदा करना शुरू किया क्योंकि दुकान बन्द करने का वक्त हो गया था । एक एक करके लोग दूकान के बाहर होने लगे, खिड़कियों के आगे फौलादी परदे गिराये जाने लगे और रोशनियाँ भी गुल की जाने लगीं । ठीक इसी समय एक मोटर उनके दरवाजे पर आकर रुकी और आगरे के पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट मिस्टर केमिल ने दूकान के अन्दर पैर रक्खा ।

दूकान के मालिक सेठ जीवनचन्द केमिल साहब को अच्छी तरह जानते थे । इनको देखते ही वे आगे बढ़ कर इनसे मिले, इन्होंने भी सेठ साहब से बड़े तपाक से हाथ मिलाया और तब सरदार नरपतसिंह से मुलाकात की । इसके बाद ये तीनों आदमी एक तरफ निराले में चले गये और धीरे धीरे कुछ बातें करने लगे जिसे कोई भी सुन न सकता था ।

लगभग दस मिनट तक इन तीनों आदमियों में बातचीत होती रही और इस बीच में दूकान बाहरी आदमियों से एक दम खाली हो गई, यहाँ तक कि उसका बाहर दरवाजा भी बन्द हो गया और केवल सेठजी के कुछ नौकर ही दूकान में रह गये । उस समय वह बेशकीमत 'मयूर-मन्दिर' अपने टेबुल पर से उठा कर लोहे के एक सन्दूक में बन्द किया गया जिसमें अलग अलग तीन ताले लगते थे । सेठ जीवनचन्द ने एक ताला बन्द किया और ताली अपनी जेब में डाल ली । इसके बाद केमिल साहब ने दूसरा ताला बन्द किया और उसकी ताली

अपने पास रक्खी । सब के पीछे नरपतसिंह ने तीसरा ताला बन्द किया और वह ताली अपने पास रख ली । इसके बाद तीनों तालों पर मुहर की गई और तब कई आदमियों ने मिल कर उस सेफ को उठा कर काठ के एक बहुत ही मजबूत और भारी बक्स में रख कर बन्द कर दिया । एक बढ़ई मौजूद था जिसने बक्स का ढकना बन्द करके उसे कीलों से मजबूती से बन्द कर लोहे के बन्द जड़ दिये और इस प्रकार अपनी समझ में उस मयूर-मन्दिर की इतनी हिफाजत कर दी गई कि सेठजी के शब्दों में ब्रह्मा भी उसे चुरा नहीं सकते थे । सरदार नरपतसिंह, उनके साथी चारो गोरखे, और सेठ जी के चार नौकर उस बक्स को घेर कर बैठ गये और तब रात भर के लिए वह बन्द बक्स दूकान में छोड़ दिया गया । कल किसी समय वह स्टेशन पर जायेगा और वहां से नेपाल रवाना होगा । केमिल साहब ने नरपतसिंह और सेठजी से पुनः कुछ बातें कीं और दूकान के बाहर हुए । उनके पीछे दूकान के अन्य कर्मचारी भी बाहर हो गये और दूकान का मजबूत दरवाजा भीतर से बन्द कर लिया गया ।

केमिल साहब आकर अपनी मोटर पर बैठना ही चाहते थे कि किसी ने उनके पास आकर सलाम किया और धीरे से कुछ कहा । बात सुनते ही वे चौंक पड़े और उस आदमी का हाथ पकड़ कर बोले, "क्या ऐसा मामला है ?" जवाब में उसने अपनी बात पर ओर देकर कहा, "जी हां, 'लाल-पञ्जा' इस 'मयूर मन्दिर' को हथियाने की कोशिश में लग गया । आप होशियार हो जाइये ।" केमिल साहब 'लाल-पञ्जा' का नाम सुनते ही एकदम चौंक पड़े और कुछ पूछना ही चाहते थे कि उस आदमी ने कहा, "यहां बात करना उचित नहीं, चलिये रास्ते में सब हाल सुनाऊँगा, मगर पहिले घर न चल कर आप (उँगली से बता कर) उधर मोटर ले चलिये ।" जवाब में बिना कुछ कहे केमिल साहब मोटर पर बैठ गये और उस आदमी को अपने बगल में बैठा उन्होंने हाँकने वाले को मोटर उसी तरफ ले चलने को कहा जिधर इस आदमी ने इशारा किया था ।

लगभग पचास कदम आगे एक अंधेरी गली के सामने उसके कहने से मोटर रोकी गई, साथ ही गली के अन्दर से दो आदमी एक लँगड़े सिक्खमंगे को पकड़े हुए निकले । उस आदमी ने इन तीनों को भी मोटर पर बैठा लिया और तब मोटर केमिल साहब के बँगले की तरफ लौटी । रास्ते में साहब ने अपने साथी से कुछ पूछना चाहा पर उसने अँगरेजी में जवाब दिया, "बूत बनावटी

लँगड़े भिखमंगे के सामने मैं कुछ कहना उचित नहीं समझता।" केमिल साहब यह सुन चुप हो रहे पर उनके मन की उत्कण्ठा और भी बढ़ गई।

थोड़ी ही देर में मोटर साहब के बँगले पर पहुँच गई। केमिल साहब के साथी ने उन दोनों आदमियों को जो भिखमंगे को पकड़े हुए थे बाहरी दालान ही में रुकने को कहा और आप साहब के साथ भीतर कमरे में चला गया। केमिल साहब ने दरवाजा भीतर से बन्द कर लिया और तब एक आराम कुर्सी पर बैठते हुए कहा, "हाँ बताओ भवानीदत्त, यह क्या मामला है, और दुष्ट 'लाल-पञ्जा' अब किस शैतानी पर उतारू हुआ है?"

भवानी०। आपकी आज्ञानुसार मैं और गनपतराम बारी बारी से बराबर गुप्त रीति से सेठ लाभचन्द जीवनचन्द की दूकान पर नजर रक्खा करते हैं। जिस लँगड़े को मैं पकड़कर साथ लाया हूँ इसे हम लोगों ने कई बार उनकी दूकान के आस-पास देखा था पर अभी तक इस पर कोई शक हम लोगों को हुआ न था। आज मैंने उसे आपके बँगले का चक्कर लगाते देखा और यहाँ से डाँट कर दूर भगाने के बाद जब जीवनचन्द की दूकान के पास पहुँचा तो वहाँ भी इसे पाकर कुछ सन्देह हुआ और मैंने इस पर कड़ी निगाह रक्खी। इस समय से कोई आध घंटा पहिले मैं उनकी दूकान से कुछ ही दूर एक आड़ की जगह में खड़ा हुआ था कि दूर से मैंने दो आदमियों को सड़क के दूसरी तरफ इधर से उधर टहलते और लाभचन्द जीवनचन्द की दूकान की तरफ इशारा करके कुछ बातें करते हुए पाया। मुझे कुछ सन्देह हुआ तथा वह और भी बढ़ा जब थोड़ी ही देर बाद मैंने इस लँगड़े भिखमंगे को भी उन्हीं की तरफ बढ़ते देखा। मैं गौर से देखने लगा कि यह क्या करता है। इस लँगड़े ने उनमें से एक आदमी के हाथ में एक कागज दिया और तब लँगड़ाता हुआ दूसरी तरफ चला गया। उस आदमी ने इसके दिए कागज को पढ़ा और तब फाड़ कर टुकड़े टुकड़े कर फेंक देने बाद दोनों कुछ बातें करते हुए वहाँ से चल दिये। मेरा सन्देह बढ़ता जा रहा था अस्तु उनके जाने बाद निराला देख मैंने उन टुकड़ों को बटोर लिया। रोशनी में आकर थोड़ी मेहनत करने से उन टुकड़ों का मतलब मेरे ध्यान में आ गया और मैं जान गया कि वह किसी चीठी के टुकड़े हैं, साथ ही मुझे इस लँगड़े को पकड़ने की भी फिक्र पैदा हुई। पुनः सेठजी की दूकान पर लौटा और आते ही मैंने पुनः इसको दरवाजे

पर खड़े लोगों से भीख माँगते पाया। धोखा दे इसे कुछ दूर ले जाकर पुलिस के हाथ पकड़वा दिया और अब आपके साथ यहाँ लिये आ रहा हूँ। आप इन टुकड़ों पर गौर कीजिए और बताइये कि मेरा सन्देह वाजिब है या नहीं।

इतना कह भवानीदत्त ने कागज के बहुत छोटे-छोटे कई टुकड़े निकाल कर साहब के सामने टेबुल पर रख दिये। साहब ने उनमें से कुछ को उठा कर गौर से देखा और एक टुकड़े पर उभड़े हुए अक्षरों में 'गवर्नमेण्ट हाउस' और दूसरे टुकड़े पर सरकारी मोनोग्राम का एक अंश देखते ही चौंक पड़े। उन्होंने और भी दो चार टुकड़ों पर गौर किया और तब घबड़ा कर जल्दी जल्दी अपने टेबुल पर पड़े कागजों में कुछ तलाश करने लगे। बहुत खोजने पर भी जब वह चीज न मिली जिसकी वे खोज में थे तो उन्होंने एक लम्बी साँस ली और कहा, "भवानीदत्त, तुम्हारा ख्याल ठीक है। यह बेशक लाट साहब के दफ्तर की वही चीठी है जिसकी आज्ञानुसार मुझे नेपाल जाना पड़ रहा है। ताज्जुब की बात है कि यह मेरे इस कमरे से किस तरह गायब हो गई जहाँ हरदम ताला बन्द रहता है। अच्छा मैं उस भिखमंगे से बात करके.....

भवानी०। जरूर बात करिये मगर इसके साथ ही दो बातों पर ख्याल रखिये।

केमिल०। क्या?

भवानी०। एक तो यह कि सिवाय लाल-पञ्जे के और किसी का यह काम नहीं है और यह भिखमंगा जरूर उसका साथी है क्योंकि लाल-पञ्जे के सिवाय और किसी की इतनी हिम्मत नहीं हो सकती कि इतने गुप्त कागज को उड़ा ले।

केमिल०। बेशक इसमें तो कोई सन्देह ही नहीं कि यह उसी दुष्ट का काम है।

भवानी०। दूसरी बात यह कि इस भिखमंगे को पकड़ने या कैद रखने की अपेक्षत ज्यादा अच्छा यह होगा कि इसे छोड़ दिया जाय और देखा जाय कि यह कहाँ कहाँ जाता और क्या क्या करता है।

केमिल०। ठीक है, ठीक है, मैं तुम्हारा मतलब बखूबी समझ गया। अच्छा ऐसा ही होगा, तुम उसे बुलवाओ।

इतना कहते हुए उन्होंने अपने टेबुल पर के उन कागज के टुकड़ों को बीन कर उठा लिया और उधर भवानीदत्त ने बाहर जा कर सिपाहियों से कुछ

कहा जिसे सुन वे दोनों उस भिखमंगे को पकड़े हुए भीतर ले आये। इसकी सूरत रोशनी में देखते ही केमिल साहब ने पहिचान लिया कि यह वही भिखमंगा है जिसे आज कई दिन से वे अकसर अपने बाग के दरवाजे पर पेड़ के नीचे बैठे देखा करते थे बल्कि इसके बारे में कई दफे सोच भी चुके थे कि पुलिस द्वारा इसे हटवा देंगे, फिर भी उन्होंने अपने को बहुत रोका और चेहरे से कुछ भी प्रकट न होने दिया कि उनके दिल में क्या भाव है।

(४)

केमिल साहब कुछ देर तक गौर के साथ इस भिखमंगे की सूरत देखते रहे और तब उन्होंने घूम कर भवानीदत्त से पूछा, "क्यों जी, तुम इसी आदमी का जिक्र कर रहे थे ?"

भवानी०। जी हाँ हुजूर यही आदमी है। यह बड़ा भारी शैतान और दगाबाज मालूम होता है, क्योंकि.....

केमिल०। नहीं नहीं, यह तो बहुत सीधा और गरीब है। कई दफे मैंने इसे अपने फाटक पर देखा है। यह किसी से कुछ बोलता नहीं और न पैसों के लिए कभी किसी को तंग ही करता है! (भिखमंगे से) क्यों जी, तुम्हीं तो हो जो उस दिन मुझसे एक चवन्नी पा चुके हो ?

भिख०। जी हाँ हुजूर, मैं आप का गुलाम हूं। (गिड़गिड़ा कर) मुझे ये साहब जबर्दस्ती पकड़ लाये हैं! मेरा कोई कसूर नहीं, दुहाई सरकार की! (आँखों से आँसू गिराते हुए) साहब आप मेरे माई बाप हैं, मुझे इनसे बचाइये!

केमिल०। (भवानीदत्त की तरफ देख कर) नहीं नहीं, तुम्हें धोखा हुआ। यह तो बहुत ही सीधा सादा आदमी है। तुमने फजूल इस बेचारे को तंग किया। इसका 'लाल-पञ्जे' से कोई सरोकार नहीं हो सकता!

'लाल-पञ्जा' यह नाम केमिल साहब ने जानबूझ कर लिया और यह कहते हुए कड़ी निगाह उस भिखमंगे पर रक्खी, पर उसके चेहरे पर जरा भी हिचक न आई और न कोई अन्तर ही पड़ा। उसका भाव वैसा ही दीन और दुखी बना रहा जैसा पहिले था। केमिल साहब ने मन में कहा, "अव्वल नम्बर का शैतान है!!" और तब ऊपरी मन से लापरवाही दिखाते हुए बोले, "नहीं नहीं, तुम लोगों का शक बिलकुल गलत है! (दोनों सिपाहियों से) इसे छोड़ दो।"

हुक्म पाते ही सिपाहियों ने रस्सी खोल उस भिखमंगे को छोड़ दिया

और दूर हट गये। वह दौड़ कर साहब के पैरों पर गिर पड़ा, पर साहब ने अपने पैर पीछे हटा लिए और जेब से एक रुपया निकाल उसे देते हुए बोले, "जाओ, मगर देखो होशियार रहना। भिखमंगों पर पुलिस की बड़ी कड़ी निगाह रहती है। तुम भीख मांगना छोड़ दो और नौकरी कर लो, उसी से तुम्हारा भला होगा। अगर तुम्हें नौकरी न मिले तो मेरे पास आना, मैं कोई न कोई जगह दिला दूंगा।"

भिखमंगे ने कृतज्ञतापूर्वक उनके पैरों को हाथ लगाया और "जरूर आऊंगा हुजूर" कहता हुआ बाहर चला गया। उसके जाते ही केमिल साहब ने भवानीदत्त की तरफ इशारा किया और वे भी बाहर निकल गये। दोनों कान्स्टेबल भी चले गये। कमरे में सन्नाटा हो गया, केमिल साहब गाल पर हाथ रखे चुपचाप बैठे सोचने लगे कि उस शैतान लाल पञ्जे को किस तरह गिरफ्तार किया जाय जो कई बार उन्हें धक्का पहुँचा चुका है।

(५)

दिन के कोई ढाई बजे होंगे। आगरा के रेलवे स्टेशन पर एक छोटी भीड़ पूरब जाने वाली डाकगाड़ी का इन्तजार कर रही है। यद्यपि सरसरी निगाह देखने से कोई विशेषता नहीं जान पड़ती पर हम जानते हैं कि इस समय कई खुफिया और सादी वरदी के सिपाही प्लेटफार्म पर मौजूद हैं तथा वेटिंग रूम में कई अफसर भी बैठे हैं जो दरअसल पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट मिस्टर केमिल को छुट्टी पर जाती समय उन्हें विदा करने आये हुए हैं।

प्लेटफार्म के सामने की दूसरी लाइन पर दो फर्स्ट क्लास के डिब्बे खड़े हैं। इनमें एक मि० केमिल के लिए रिजर्व है और दूसरे में नैपाल का वह 'मयूर-मन्दिर' तथा उसके रक्षक जा रहे हैं। 'मयूर-मन्दिर' का मजबूत बक्स डिब्बे के बीच में रक्खा हुआ है और बुखड़ियें लिए कई वीर गुरखे उसके चारो तरफ बैठे हैं। इनके सरदार नरपतिसिंह इस समय वेटिंग-रूम में केमिल साहब के साथ सेठ जीवनचन्द तथा अफसरों से बातें कर रहे हैं। डाक आज लेट है। मामूली समय से बीस मिनट अधिक हो चुकने पर भी अभी तक उसका कहीं पता नहीं है।

इसी समय एक नये आदमी ने कमरे में पैर रक्खा जिसे वहाँ मौजूद आदमियों में से कई अच्छी तरह जानते थे क्योंकि वे आगरे के प्रसिद्ध अंग्रेजी दैनिक 'आगरा कूरियर' के सम्पादक मिस्टर एम० ए० प्रमानिक थे। केमिल

साहब इन्हें बहुत अच्छी तरह जानते थे और यद्यपि इधर इन दोनों में कुछ तनातनी सी हो गई थी फिर भी कम से कम ऊपरी शिष्टाचार और बनावट में कोई अन्तर न आया था। इन्हें आते देख मिस्टर केमिल ने आगे बढ़ कर इनसे हाथ मिलाया और कहा, "हल्लो मिस्टर प्रमानिक, क्या आप भी कहीं जा रहे हैं?"

सेठ जीवनचन्द तथा और कई आदमियों से शेकहैन्ड तथा साहब सलामत करते हुए मिस्टर प्रमानिक बोले, "जी हाँ, मैंने अखबार से एक महीने की छुट्टी ली है और 'तराई' जा रहा हूं, वहाँ कुछ शिकार खेलने का इरादा है।"

केमिल०। वाह वाह, तब तो खूब साथ हो गया! मैं भी शिकार ही की लालच से वहाँ जा रहा हूं।

प्रमानिक०। अच्छा! यह तो मैंने सुना था कि आप छुट्टी पर जा रहे हैं पर यह नहीं मालूम था कि आप भी वहीं जा रहे हैं जहाँ मैं और सो भी इसी ट्रेन से! चलिये खूब साथ हो गया।

इसके बाद मामूली बातचीत होने लगी।

ठीक टाइम से आधे घन्टे बाद जिस समय मेल स्टेशन पर पहुंची इतना वक्त नहीं रह गया था कि मिस्टर केमिल का तथा नैपाल वाला डिब्बा ट्रेन के बीचोबीच में लगाया जा सके। स्टेशन मास्टर ने इसके लिए माफी मांगी और गार्ड की गाड़ी के पीछे दोनों डब्बों को लगाने का हुक्म देते हुए केमिल साहब तथा नरपतिसिंह से कहा, "यदि आपकी इच्छा होगी तो अगले किसी बड़े जंकशन पर ये दोनों कम्पार्टमेन्ट बीच ट्रेन में लगा दिये जावेंगे।" इसके जवाब में केमिल साहब बोले, "हाँ मेरी यही इच्छा है। आप ऐसा ही इन्तजाम कर दें जिसमें आगे चल कर ये दोनों डिब्बे ट्रेन के बीच में कर दिये जायें।" हम नहीं कह सकते कि केमिल साहब को दोनों डिब्बे ट्रेन के बीच में कराने का इतना आग्रह क्यों था, पर स्टेशन मास्टर ने "बहुत अच्छा" कहा और चला गया।

मिस्टर प्रमानिक अपने नौकरों और असबाब की फिक्र कर रहे थे कि इसी समय उनका ध्यान उस हो हल्लड़ पर गया जो प्लेटफार्म पर यकायक मच गया था। उन्होंने देखा कि कारचोबी काम के मखमली पर्दों से ढँकी एक पालकी जिसे कई सिपाही मेरे हुए थे स्टेशन पर आकर एक सेकेन्ड क्लास के डिब्बे के सामने लगी और उस पर से जनानी सवारी उतर कर बड़े पर्दे के

साथ डिब्बे के अन्दर जा बैठी जिसकी खिड़कियाँ पहले ही से बन्द की हुई थीं। यद्यपि प्रमानिक को एक ही झलक दिखाई दी फिर भी उन्होंने देख लिया कि वह औरत कमसिन है और कीमती पोशाक पहिरे हुए है। औरत के साथ एक बूढ़ा आदमी भी था जिसके चेहरे और चाल ढाल से शराफत और रोब जाहिर होता था। वह भी उस औरत के साथ साथ उसी डिब्बे में चढ़ गया और कुछ नौकर तथा सिपाही बगल के दूसरे डिब्बे में जा बैठे। इसी समय रेल ने सीटी दी और प्रमानिक अपने डिब्बे में चले गये, ट्रेन चल पड़ी।

केवल प्रमानिक ने ही नहीं बल्कि मिस्टर केमिल ने भी यह बात देखी थी और वे इस समय अपने डिब्बे में खिड़की के पास बैठे सोच रहे थे—"हिन्दुस्तानी अपनी औरतों को कैसी कैद में रखते हैं, और न जाने इनकी औरतें कैसे यह जुल्म बर्दाश्त करती हैं.....!" आदि। रेल सीटी दे चुकी थी और पहियों का घूमना शुरू हो गया जब उन्होंने एक नौजवान को देखा जो भीड़ में धक्कमधुक्का करता हुआ उसी तरफ बढ़ रहा था। नौजवान के हाथ में एक चीठी थी और उसकी आकृति से मालूम होता था कि वह किसी को ढूँढ़ रहा है। मिस्टर केमिल पर निगाह पड़ते ही उसके चेहरे पर संतोष का भाव आ गया। वह दौड़ता हुआ उनके डिब्बे के सामने आया और अदब से सलाम कर वह चीठी उनके हाथ में देने बाद बोला, "यह चीठी आपके उन दोस्त साहब ने दी है जो....." मगर नौजवान की बात पूरी नहीं हुई क्योंकि ट्रेन की चाल तेज हो गई और वह तथा प्लेटफार्म दोनों ही पीछे छूट गये।

ताज्जुब करते हुए मिस्टर केमिल कुछ देर तक तो खिड़की से झाँक कर उस आदमी की तरफ देखते रहे, पर जब वह तथा स्टेशन दोनों आँखों के ओझल हो गये तो घूमे और और लिफाफा फाड़ उन्होंने भीतर की चीठी निकाली। लाल रंग के कागज पर टेढ़े मेढ़े कुढ़ंगे अक्षरों में यह लिखा हुआ था:—

"केमिल साहब, बन्दगी! आपने मेरी दी हुई सौगात वह पगड़ी जिसे प्रमानिक साहब भी देख चुके हैं, बेदर्दी के साथ तोड़ दी। आप तो मेरे दोस्त हैं क्योंकि कई बार मेरा आपका वास्ता पड़ चुका है, तब क्या दोस्त की भेंट की ऐसी बेकदरी करना उचित था!

"खैर सच तो यह है कि इस बात के लिए मैं आप पर बहुत खफा हूं और जिससे आगे आप ऐसा न करें इसलिये आपको एक छोटी सी सजा दे दिया

चाहता हूं। मैंने सुना है कि वह 'मयूर-मन्दिर' जो इस समय आपके पीछे वाले डिब्बे में है हिफाजत के साथ नैपाल दरबार तक पहुँचा देने का काम खास तौर पर आपके सुपुर्द हुआ है। आपके अहं को वैसी ही चोट पहुंचाने के नीयत से जैसी कि आपने मेरी घड़ी तोड़ मुझे पहुंचायी है, मैं वह मन्दिर गायब करूंगा। आपमें ताकत हो तो उसे बचाइये।"

इसके नीचे 'लाल-पञ्जे' का निशान बना हुआ था।

मिस्टर केमिल ने इस पत्र को एक बार पढ़ा, दुबारा पढ़ा, और कुछ ठहर कर फिर तिबारा पढ़ा, इसके बाद उन्होंने आप ही आप मगर कुछ जोर से कहा, "अच्छा यही सही! यदि इस बार तुम उस हीरे के मोर को ले जाओ तो मैं समझूंगा कि कुछ हो!" कह कर वे कुछ मुस्कुरा उठे, मानों उन्हें निश्चय था कि लाल-पञ्जा किसी तरह भी उस 'मयूर-मन्दिर' को ले जा न सकेगा। डिब्बे में उनके दो दोस्त और एक सेक्रेटरी भी थे जो उनके साथ ही जा रहे थे। चिट्ठी के मजमून का उनसे कुछ जिक्र न कर केमिल साहब उन लोगों से बातें करने लगे पर इसमें सन्देह नहीं कि रह रह कर एक छाया की भांति उनके हृदय पर लाल-पञ्जे की धमकी अंधेरा डाल जाती थी।

(६)

सिंहपुर और मुगलसराय के बीच में जमीन पहाड़ी हो जाती है और रास्ते में मीलों तक रेल की लाइन कहीं ऊँची कहीं नीची कहीं घुमाव लेकर और कहीं चक्कर खाती हुई जाती है क्योंकि छोटे मोटे पहाड़ी टुकड़ों के अगल बगल से होकर उसे जाना पड़ता है। स्वभावतः ही यहाँ पहुंचने पर ट्रेन की चाल कुछ धीमी कर देनी पड़ती है, मगर यह सब सिर्फ दो या तीन स्टेशनों तक ही है और इसके बाद आगे लाइन फिर सीधी और समथर हो जाती है।

जिस डाकगाड़ी के द्वारा केमिल साहब और उनके मानापमान का ठेकेदार वह 'मयूर-मन्दिर' जा रहा था उसके ड्राइवर को भी उस जगह पहुंच कर अपनी चाल कम करनी पड़ी। ट्रेन की चाल कम होने और सीटी बजने से केमिल साहब जो इस समय जाग रहे थे समझ गये कि वह स्थान आ पहुंचा। अस्तु खिड़की के बाहर सिर निकाल उन पहाड़ियों का दृश्य देखने लगे जो इस समय के अन्धकार में अजीब डरावनी और पेचीली मालूम पड़ रही थीं। यकायक उन्होंने देखा कि लाइन के पास एक जगह पाँच छः आदमी खड़े हुए कुछ कर

रहे हैं। वे कौन हैं और क्या कर रहे हैं इसको सोचने का मौका पाने के पहिले ही केमिल साहब की तेज निगाह ने वह भी देख लिया कि उनमें से दो आदमी उछल कर एक डिब्बे की पटरी पर चढ़ गये। वे चौंक पड़े और घबड़ा कर अपने साथियों को जगाते हुए बोले, "देखो देखो, दो आदमी ट्रेन पर चढ़े हैं!" तीनों आदमी खिड़की के पास पहुंच झुक कर देखने लगे पर अंधेरे में फिर कुछ नजर न पड़ा।

केमिल साहब के मन में तो चोर बैठा हुआ था। वे हर एक घटना में लाल-पञ्जे की ही छाया देख रहे थे। इस बात को देख कर भी बिजली की तरह उनके मन में यही ख्याल हो आया कि कहीं यह कुछ लाल-पञ्जे की शैतानी न हो। उन्होंने निश्चय किया कि गार्ड को इस बात की खबर देनी चाहिए ताकि वह जाँच कर ले कि क्या मामला है। वे यह सोच ही रहे थे कि यकायक कहीं से किसी औरत के जोर से चीखने की आवाज आई, इसके साथ ही इंजिन ने सीटी दी और ट्रेन की चाल कम होने लगी। उन्हें निश्चय हो गया कि कोई न कोई दुर्घटना हुई है और किसी ने जंजीर खींच कर ट्रेन रोकी है। इस बात का पूरा निश्चय भी तुरन्त ही हो गया जब उन्होंने पुनः किसी औरत को बराबर चीखते सुना और तब कई बार पिस्तौल छूटने की आवाज भी आई।

खड़भड़ खड़भड़ की आवाज और कई झटकों के साथ गाड़ी रुकी मगर पूरी तरह रुकने से पहिले ही मिस्टर केमिल और उनके साथी अपने डिब्बे से कूद चुके थे। वे दौड़ते हुए उस डिब्बे के पास पहुंचे जिसमें से पिस्तौल और चीख की आवाज आई थी और तब उन्हें मालूम हुआ कि यहां कोई घटना ही नहीं बल्कि भयंकर दुर्घटना हो चुकी है। डिब्बे का दर्वाजा खुला हुआ था और खून से लथपथ वह बुड्ढा जिसे मिस्टर केमिल ने उस पर्दानशीन औरत के साथ इस डिब्बे में चढ़ते हुए देखा था गाड़ी के फर्श पर गिरा हुआ था। उसके हाथ में अभी तक पिस्तौल मौजूद थी जिसकी नली में से धुआं निकल रहा था। चारों तरफ खून के छींटे पड़े हुए थे और डिब्बे का सामान ऐसा अस्त व्यस्त हो गया था मानों वहाँ खूब उछल कूद या मारकाट हो चुकी हो। यह सब कुछ था मगर उस औरत का कहीं पता न था, केवल उसकी सफेद चादर जमीन पर गिरी हुई थी जिस पर भी खून के धब्बे पड़े हुए थे।

केमिल और उनके मित्रों के साथ ही साथ और भी बहुत से आदमी वहाँ

ला पहुँचे और सकते की सी हालत में खड़े यह भयानक दृश्य देखने लगे, मगर केमिल साहब ने बहुत जल्दी ही अपने होश हवास दुरुस्त किये और गाड़ी के अन्दर जा उस बूढ़े को सहारा देकर उठाया। वह बहुत जख्मी मालूम होता था पर इन्हें देख उसने बड़ी कोशिश करके अपने को सम्हाला और कहा, "मेरी बेटी, साहब, मेरी बेटी को बचाइये! डाकू उसे जबर्दस्ती पकड़ ले गये हैं! उसके बदन पर पचासों हजार के जेवर हैं!!"

केमिल साहब ने दिलासा देकर कहा, "हाँ हाँ, हम लोग अभी उसकी खोज में जायेंगे, आप बहुत थोड़े में बतायें कि हुआ क्या है?"

रुकती और कमजोर आवाज में बेचैनी के साथ वह बुड्ढा बोला, "साहब, मैं सोया हुआ था। यकायक बेटी की चीख सुन नींद खुल गई तो देखा एक डाकू उसका मुँह दबाये हुए है और दूसरा उसके हाथ से जड़ाऊ कड़ा उतार रहा है। मैंने अपनी पिस्तौल निकाली और उसे गोली मारी जो शायद लगी भी पर उसके साथी ने तुरन्त मुझ पर छुरे का वार किया। (पीठ दिखा कर) बड़ा कारी जख्म है! पर मैंने फिर गोली चलाना शुरू किया जिस पर उन्होंने गाड़ी की जंजीर खींची और ट्रेन की चाल कम होते ही लड़की को खींचते हुए लेकर भाग गये। ओफ मैं मरा! साहब, मेरी बेटी की जान और इज्जत बचाइये! ओफ, ओह! हाय, हाय!"

कहते कहते वह बूढ़ा बेहोश होकर गिर गया। जितने लोग वहाँ मौजूद थे सभी यह हाल सुन घबड़ा गये। आजतक कभी कहीं ऐसी वारदात होते सुनी न गई थी। सबसे पहिले उस औरत और उन डाकुओं का पता लगाना जरूरी था।

केमिल साहब ने अपने जेब से पिस्तौल निकाल ली और कहा, "मेरे साथ और कौन डाकुओं के पीछे चलता है?"

उनके साथी तीनों अंगरेज तुरत तैयार हो गये, पांच छः अन्य मुसाफिर भी तैयार हुए। सब लोग कम्पार्टमेन्ट के नीचे उतरे और सोचने लगे कि किधर जाना चाहिये। गाड़ी के दोनों तरफ वाले दरवाजे खुले हुए थे। अभी कुछ ठीक पता नहीं लग सकता था कि डाकू किस तरफ से उतरे और किधर को गये। वह बुड्ढा भी इस विषय में कुछ कहने के पहले ही बेहोश हो गया था, अस्तु प्रश्न था कि किधर जाना उचित है।

केमिल साहब ठुड्डी पर हाथ रक्खे सोच ही रहे थे कि बगल से किसी ने

कहा, "एक तरफ मैं जाता हूँ, दूसरी तरफ आप जाइये।" केमिल ने घूम कर देखा तो नरपतिसिंह दिखाई पड़े जो अपने दो गोरखों के साथ खड़े थे। केमिल साहब ने कहा, "हाँ यही करना पड़ेगा। मगर आप का जाना उचित नहीं, आप अपने माल की हिफाजत करिये और अपने इन दोनों सिपाहियों को मुझे दीजिये। इनके साथ मैं इधर जाता हूँ और कैप्टेन रिचर्डसन उधर जायें।"

इसी समय जंगलों और पहाड़ियों के घोर अन्धकारमय सन्नाटे को तोड़ती हुई किसी कमसिन औरत की करुणाजनक चीख की आवाज इन लोगों के कानों में पड़ी। अब देर करने की ताब किसी में न थी। दोनों दल दो ओर रवाना हुए और नरपतिसिंह अपने डिब्बे की ओर लौटे। मुसाफिर अपनी अपनी जगह जा बैठे। बूढ़े के पास कोई न रह गया, केवल उसके नौकर लोग उसकी देख भाल करने लगे। इंजिन पर का छोटा सर्चलाइट इधर उधर घुमाया जाने लगा ताकि डाकुओं को पकड़ने गये हुए आदमियों को कुछ मदद मिले पर केमिल और उनके साथी कैप्टेन रिचर्डसन दोनों ही के पास बिजली की बत्तियाँ थीं जिससे वे काम ले रहे थे।

* * * *

इस सब हो-हल्ले में किसी ने न देखा कि सबसे पीछे के डिब्बे का खुटका और जंजीर किसी ने खोल दी है और वह धीरे धीरे ढाल पर नीचे की ओर लुढ़का जा रहा है।

(७)

अकेला डिब्बा धीरे धीरे चाल पकड़ता गया। उसमें इस समय तीन गोरखे थे जिन्हें नरपतिसिंह डिब्बे से बाहर चलती समय अपने सामने मयूर-शोभर के बक्स पर बैठा गये थे और हुक्म दे गये थे कि मेरे आने तक इसी तरह बैठे रहना और चाहे जो भी हो अपनी जगह से पद हिलना। फर्माबरदार सिपाही उसी तरह बैठे हुए थे और कुछ भी नहीं जानते थे कि आगे की तरफ क्या हो रहा है अथवा कैसी दुर्घटना घट चुकी है। अब डिब्बे की जंजीर खोली गई उस समय कुछ आहट सी लगी थी पर साथ ही डिब्बे को खसकते पा उन्होंने समझा कि ट्रेन फिर चलने लगी है। सब खिड़कियाँ और दरवाजे बन्द रहने की वजह से उन पहाड़ियों की समझ में यह ठीक ठीक न आया कि डिब्बा आगे जा रहा है या पीछे, पर वे एक तरह पर कुछ निश्चिन्त से हो

गये। हाँ नरपतिसिंह और अपने साथी सिपाहियों के न आने का ख्याल उन्हें जरूर बना रहा जिसके बारे में उन्होंने सोचा कि शायद केमिल साहब के साथ या बगल वाले किसी डिब्बे में चढ़ गये होंगे।

धीरे धीरे चलते हुए नरपतिसिंह गाड़ी के पीछे की तरफ बढ़े। गार्ड की गाड़ी पार की, केमिल साहब का कम्पार्टमेन्ट तय किया, और साथ ही भौंचक से होकर खड़े हो गये। यह क्या? उनकी आँखें उन्हें धोखा दे रही हैं अथवा इस दुर्घटना ने उनके दिमाग पर असर किया है! जिस डिब्बे में बैठ कर इतनी दूर चले आये, जिसमें उनके साथी बैठे थे, जिसमें वह कीमती हीरे का मोर रक्खा हुआ है, वह डिब्बा कहाँ चला गया? उन्हें दिखाई क्यों नहीं पड़ता? आँखें मल मल कर वे अपने चारो तरफ देखने लगे। आगे देखा, लाइन पर खड़े होकर देखा, पर उनका डिब्बा कहीं हो तब तो दिखाई पड़े! उनके सिर में चक्कर आ गया और वे पागलों की तरह उसी जगह जमीन पर बैठ गये।

(८)

आध घण्टे की लगातार कोशिश के बाद भी केमिल साहब या उनके साथी कुछ पता न लगा सके। सैकड़ों आवाजें दी गईं, कितने ही फायर किये, आस पास के कितने ही टीलों और झाड़ियों की खाक छानी गई, पर न वह औरत ही मिली और न डाकुओं का ही कुछ पता लगा। जाने जमीन उन्हें खा गई या वे हवा में मिल गये। अन्त में लाचार और दुःखी हो वे लोग वापस लौटे।

ट्रेन के पास पहुंचते ही नरपतिसिंह की घबड़ाई हुई सूरत दिखाई पड़ी। इसके पहले कि साहब कुछ बोलें या कहें, नरपतिसिंह रोनी आवाज में बोले, "केमिल साहब, मैं तो मारा गया! मयूर-मन्दिर गायब हो गया!!"

"मयूर-मन्दिर गायब हो गया!" यह बात सुनते ही केमिल की तो यह हालत हो गई कि काटो तो लहू न निकले! बड़ी मुश्किल से उन्होंने पूछा, "क्यों? कैसे?" नरपतिसिंह ने सब हाल सुनाया। बगल में गार्ड और ट्रेन के ड्राइवर भी खड़े थे जिन्होंने कहा, "गाड़ी जोड़ने वाला खुटका और जंजीर किसी ने खोल दी इससे वह डिब्बा ढाल पर नीचे लुढ़क गया है। यह ढाल यहाँ से बराबर दो मील तक चली गई है और यद्यपि निचाई बहुत कम है फिर भी रेल के डिब्बे को ढुलका ले जाने के लिए काफी है। सरदार साहब ट्रेन को पीछे लौटाने को कहते थे पर आप लोग डाकुओं के पीछे गये हुए थे, उधर

न जाने क्या दुर्घटना हो, इसी डर से हम लोग यहाँ से हटे नहीं। अब जो कहिये सो किया जाय?" बेचैन केमिल के मुँह से सिर्फ इतना निकला, "उस बुड्ढे को मैं खबर करता हूं, तुम पूरी तेजी से ट्रेन को पीछे ले चलो।"

दूसरे दर्जे के जिस डिब्बे में वह दुर्घटना हुई थी सब लोग उसमें गये; पर वहाँ कोई भी न था। न तो वह बूढ़ा ही दिखाई पड़ा और न उसके नौकर! गाड़ी खाली थी। केमिल साहब के मुँह से एक "आह" निकली और वे उसी जगह बदहवास होकर बैठ गये।

शायद वह डिब्बा रास्ते में रुक गया हो और ट्रेन से टक्कर खा जाय इस डर से ट्रेन पूरी तेजी से पीछे भी नहीं लौटाई जा सकती थी। बहुत धीरे धीरे चल कर डेढ़ मील रास्ता तय करने के बाद जब ट्रेन एक छोटे नाले पर बने दस बारह हाथ लंबे पुल के पास पहुंची जहाँ लाइन कुछ घूमती थी तो अचानक दिखाई पड़ा कि वहाँ की रेल की पटरी उखड़ी पुखड़ी है। यद्यपि गार्ड ने इशारा किया भी पर रुकते रुकते भी ट्रेन के तीन चार डिब्बे लाइन के नीचे उतर ही गये, कुशल इतनी ही हुई कि वे उलटे नहीं। गार्ड और केमिल तथा नरपतिसिंह और उनके साथी लोग रेल से नीचे उतरे। बिजली की बत्ती की मदद से देखा गया कि वह भागा हुआ डिब्बा एक पुरसा नीचे नाले में टूटा फूटा छितराया हुआ पड़ा है।

केमिल और नरपतिसिंह तथा और कई लोग नाले में उतरे। डिब्बे का बन्द बन्द अलग हो गया था। तीनों गोरखे जिनके सिर फट गए थे और एक कम मुरदे की सी हालत हो गई थी एक तरफ पड़े हुए थे, 'मयूर-मन्दिर' का बक्स चूर-चूर हुआ भया दूसरी तरफ पड़ा था। पास ही में उसके अन्दर वाला सफ खुला पड़ा था, केवल वह हीरे का मोर उसमें न था। केमिल और नरपतिसिंह ने दोनों हाथों से अपने अपने सिर पीट लिये।

कई सायत के बाद केमिल साहब ने अपने को सम्हाला और उस बक्स के पास गये जिसमें सेफ रक्खा गया था। एक तरफ कोने से एक कागज ठोंका हुआ था। केमिल ने उसे उखाड़ा। उस पर कुछ लिखा न था, केवल लाल स्याही से दो पंजों का निशान बना हुआ था।

———

[७]

डाकू पर डाका

(१)

बर्दवान का स्टेशन बहुत बड़ा होते हुए भी इस पिछली रात के सन्नाटे में एक दम सूनसान हो रहा है।

कलकत्ते जाने वाली डाक के आने में यद्यपि आध घण्टे से कम की ही देर है पर अभी तक रात की सर्दी ने किसी मुसाफिर को खुले में आने की इजाजत नहीं दी है। जो लोग प्लेटफार्म पर पहुँच चुके हैं वे भी इधर उधर आड़ और कोनों में अपनी गठरियों के संग चिपके हुए खुद भी गठरी हो रहे हैं और मुँह सिर पर चादर लपेटे दीन-दुनिया को भूले हुए हैं। स्टेशन के कर्मचारी कमरे बन्द किये कुरसियों पर उंघ रहे हैं। स्टेशन की रोशनियाँ आधी से ज्यादा गुल हैं और प्लेटफार्म का एक खासा हिस्सा अंधेरे में डूबा हुआ है।

ऐसे समय हम दो आदमियों को प्लेटफार्म पर इधर से उधर टहलते हुए देख रहे हैं। इन दोनों के सिरों पर के भारी साफे ओवरकोट और पतलूनों ने यद्यपि इनके बदन की अच्छी तरह किलेबन्दी कर रक्खी है फिर भी सर्दी ने अपना रंग सिर पर भी जमाया ही हुआ है जिससे ये स्टेशन के सिर्फ उन्हीं हिस्सों में चहल कदमी कर रहे हैं जिनके ऊपर सायबान पड़ा है, खुले में जाने की हिम्मत शायद इनकी नहीं हो रही है।

इनमें से एक तो आगरे के मशहूर रईस राजा नानकचन्द सी० आई० ई० हैं और दूसरे उनके दिली दोस्त और प्यारे मुसाहिब सुजानसिंह। आइये हम लोग उनके पास चलें और पीछे रह कर सुनें कि इनमें क्या बातें हो रही हैं।

सुजान०। मेरे जासूसों ने ज्यों ही मुझे खबर दी कि कामिनी रानी किसी खास काम से कलकत्ते जा रही हैं त्यों ही मैंने हुजूर को तार दी और खुद दूसरी

गाड़ी से इधर को रवाना हो गया।

नानकचन्द०। तुम्हारा तार पहुंचने के पहिले ही मैं कलकत्ते से चल चुका था। मेरे सेक्रेटरी ने वह तार आगरे लौटा दी होगी, पर मुझे उसकी कुछ भी खबर नहीं। तुम अगर यहाँ बर्दवान में मुझे देख नहीं लेते तो जरूर मैं आगरे ही पहुंच गया होता।

सुजान०। मेरे दिल में सन्देह बना रह गया था कि अगर हुजूर तार पाने के पहिले ही चल पड़े होंगे तो यह खुशखबरी आपके कानों तक न पहुंचेगी, इसलिए मैं यहाँ हुजूर को खोज रहा था, बारे आप मिल भी गये।

नानक०। तुमने बहुत अच्छा किया जो मुझे यहाँ खोज लिया। मगर यह तो बताओ कि कामिनी को बस में करने की क्या तरकीब कर रहे हो? अगर वह हाथ न आई तो मेरी जिन्दगी व्यर्थ हो जायगी। उसके इश्क ने मुझे बरबाद कर रक्खा है।

सुजान०। हुजूर बिलकुल यकीन रक्खें कि मेरी कारीगरी कभी बरबाद न जायगी और जैसे होगा तैसे मैं कामिनीरानी को हुजूर के महल में पहुंचाऊँगा।

नानक०। पहिले भी कई बार तुमने कोशिश की पर कामयाब न हुए।

सुजान०। उसका भाई कम्बख्त बड़ा ही शैतान था। उसी के सबब से मेरी दाल नहीं गलती थी।

नानक०। मगर इस बार भी तो वह उसके साथ ही है!

सुजान०। जी हाँ है मगर उसको रफा दफा करने का बन्दोबस्त किया जा चुका है।

नानक०। हाँ! अच्छा बताओ क्या किया है?

सुजान०। कलकत्ते पहुंचते ही पहिले उसके भाई ही को जो रास्ते का काँटा हो रहा है मैं दूर करूँगा और तब कामिनी को गायब करके ठिकाने पहुंचाऊँगा।

नानक०। सो तो ठीक है मगर उसके भाई को दूर कैसे करोगे?

सुजान०। मैंने उसके.....

एक लँगड़ा भिखमंगा जिसका बदन जाड़े के मारे काँप रहा था बहुत देर से इनके पीछे पीछे घूम रहा था पर डर के मारे उसकी हिम्मत नहीं पड़ती थी कि कोई सवाल लगावे। बात करते करते यकायक कुछ आहट पा सुजान-

सिंह ने पीछे घूम कर देखा और भिखमंगे को देख डपट कर पूछा, "क्यों बे, यहाँ खड़ा क्या कर रहा है ?"

लँगड़ा गिड़गिड़ा कर बोला, "हुजूर ! सरकार ! जाड़ेमें मरत हई ! कुछ दया हो जाय !!"

सुजानसिंह ने भुनभुनाते हुए जेब से एक पैसा निकाल कर उसकी तरफ फेंका और डाँट कर कहा—"ले ! भाग ! जा यहाँ से !!" उसने इसी को गनीमत समझा और पैसा उठा लँगड़ाता हुआ स्टेशन के बाहर की तरफ चला। राजा और मुसाहिब फिर बातें करने लगे, पर अब सुजानसिंह बार बार पीछे घूम घूम कर देखता जाता था।

(२)

पंजाब मेल के फर्स्ट क्लास के एक डिब्बे में इस समय केवल दो ही आदमी हैं, एक स्त्री और दूसरा पुरुष, और ये दोनों ही एक एक बर्थ पर गहरी नींद में इस तरह बेसुध पड़े हैं कि हम इनको बेखौफ अच्छी तरह देख सकते हैं।

मर्द की उम्र पचीस या छब्बीस वर्ष की होगी। बदन गोरा, चेहरा सुन्दर और सुडौल, हाथ पाँव से बहुत ही मजबूत मालूम होता है। इसकी आकृति साफ कह रही है कि यह नैपाली है। ऊपर की सीट पर रक्खी पिस्तौल की पेटी और एक खुखड़ी तथा खूँटी से टँगी फौजी पोशाक यह भी बता रही है कि यह कहीं की फौज का कोई अफसर है।

औरत की उम्र मुश्किल से सत्रह या अट्ठारह वर्ष की होगी और इस निगाह से हम उसे लड़की ही कह सकते हैं, परन्तु इसका बदन खूब भरा हुआ है और यद्यपि नजाकत और सुडौली में किसी तरह का फर्क नहीं पड़ा है फिर भी यह उन नाजनीनों की तरह नहीं मालूम होती जो चलने में अपने हुस्न के बोझ को भी न सम्हाल सकने के कारण कमर पर बल दिया करती हैं ! इसका चेहरा गजब का सुन्दर है, मुँह ठीक खिले हुए गुलाब की तरह है, और बदन का हलका चमकीला रङ्ग गजब कर रहा है। यह भी प्रकट है कि उस मर्द की तरह यह लड़की भी नैपाल की रहने वाली है तथा एक प्रकार के चेहरों की समानता यह भी बता रही है कि ये दोनों शायद भाई बहिन हैं। इस समय यद्यपि यह घोर निद्रा में है पर एक हलकी मुस्कुराहट इसके होठों पर इस समय भी खेलती हुई बता रही है कि यह कोई सुखद स्वप्न देख रही है।

दोनों की नींद इतनी गहरी थी कि बर्दवान स्टेशन के शोरगुल ने भी उसमें किसी तरह का खलल न डाला, पर अब रेल ने वह स्टेशन छोड़ा तो यकायक किसी प्रकार की आहट पा उस औरत की नींद खुल गई। आँख खुलने के साथ ही उसने देखा कि बगल की खिड़की जिसे बन्द करके वह सोई थी, खुली हुई है और एक भयानक सूरत का काला आदमी वहाँ से झाँकता हुआ उसकी तरफ बड़े गौर से देख रहा है। इस आदमी की सूरत ऐसी डरावनी थी कि युवती का नाजुक कलेजा एक दम काँप गया और उसके मुँह से यकायक एक चीख निकल पड़ी।

चीख सुनते ही उस नौजवान की नींद भी उचट गई और उसने जल्दी से उठ कर कहा, "क्यों कामिनी क्या है ?" मगर इतना कहते कहते उसने भी उस भयानक आदमी को देखा जो अब अपना सिर खिड़की के बाहर खींच रहा था। उसे देखते ही वह झपट कर उठा और बाएँ हाथ से उसने एक मुक्का बड़े जोर से उस आदमी के सिर में मारा। यद्यपि देखने वाला चौकन्ना हो गया था पर उस मुक्के की चोट इतनी अचानक और कड़ी लगी कि उसका सिर घिरता गया, खिड़की का छड़ उसके हाथ से छूट गया जिसे पकड़ कर वह डिब्बे की पटरी पर खड़ा था, और नीचे गिरने के साथ ही वह आँखों की ओट हो गया। नौजवान ने एक बार खिड़की से सिर निकाल कर देखा, तब और किसी को न पा खिड़की बन्द कर दी और अपनी बहिन के बगल में बैठ गया जो दोनों हाथों से अपनी आँखें बन्द किये हुए काँप रही थी। उसने प्यार से उसकी पीठ पर हाथ फेरते और दिलासा देते हुए कहा, "कोई डर नहीं बहिन कामिनी, वह बदमाश गिर गया, तुम आँखें खोलो !"

कामिनी ने आँखें खोलीं और खिड़की की तरफ देख उसका नाजुक कलेजा फिर काँप गया, पर नौजवान ने दम दिलासा देकर उसका डर दूर किया। थोड़ी देर बाद दोनों में बातचीत होने लगी।

कामिनी०। नरेन्द्र, यह बदमाश कौन था ?

नरेन्द्र०। कोई चोर होगा, तुम्हारे गहनों की ताक में रहा होगा।

कामिनी०। मैं तो उसे देख कर एक दम डर गई, देखो अभी तक मेरा कलेजा धड़क रहा है !

नरेन्द्र०। अब कुछ डर की बात नहीं। मेरा मुक्का भी ऐसा सच्चा बैठा है कि कुछ दिनों तक बदमाश को याद रहेगा।

कामिनी० । अब तुम यहीं बैठो, उधर मत जाओ, और न सोओ ही ।

नरेन्द्र० । नहीं नहीं मैं सोऊँगा नहीं । (घड़ी देख कर) और अब सुबह भी हुआ ही चाहती है । हम लोगों का सफर खतम ही हुआ समझो ।

कामिनी० । कलकत्ते कितनी देर में गाड़ी पहुंचेगी ?

नरेन्द्र० । ठीक एक घण्टे में ।

कामिनी० । वहाँ ठहरने का कोई बन्दोबस्त हो चुका है ?

नरेन्द्र० । हो ही गया होगा । इसी लिये तो अनन्तबहादुर को दो नौकरों के साथ पहिले ही भेज चुका हूं ।

कामिनी० । अपने साथ तुम कोई भी नौकर न लाये यह गलती की, कलकत्ते के स्टेशन पर जरूर तकलीफ होगी ।

नरेन्द्र० । नहीं नहीं, तकलीफ किस बात की होगी ! अनन्त मौजूद ही रहेगा, और उसके साथ वाले दोनों आदमी भी रहेहींगे ।

कामिनी० । मान लो अनन्त न आया तब ? हम लोग पहिले कभी वहाँ आये नहीं, कहाँ जायेंगे क्या करेंगे ?

नरेन्द्र० । नहीं नहीं, अनन्त जरूर आवेगा । मैं कल उसे तार दे चुका हूँ ।

कामिनी० । शायद न आवे, बीमार हो या और कोई तरद्दुद ही पड़ जाय ।

नरेन्द्र० । (हँस कर) नहीं कोई तरद्दुद नहीं आवेगा, तुम बेफिक्र रहो । आखिर मैं तो साथ हूँ !

कामिनी० । (कुछ देर चुप रह कर) न जाने क्यों मेरा जी डर रहा है, जैसे कोई भारी मुसीबत आने वाली हो । यह देखो आँख भी फड़की, जरूर कुछ आफत आवेगी !

नरेन्द्र० । (हँस कर दिलासा देने वाले ढंग से) मालूम होता है तुमने कोई बुरा सपना देखा है ! मगर तुम बेफिक्र रहो, कोई नुकसान न होगा ।

नरेन्द्र ने कामिनी का हाथ प्रेम के साथ अपने हाथ में ले लिया और दिलासा देने वाली बातें कहने लगा । कामिनी ने आँखें बन्द कर लीं । उसे अपने भाई की बुद्धिमानी और ताकत दोनों ही का भरोसा था, वह समझती थी कि नरेन्द्र के रहते कोई उसका कुछ बिगाड़ न सकेगा । भाई के दिलासा देने वाले शब्दों ने उसका डर बहुत कुछ दूर कर दिया, फिर भी रह रह कर एक कँपकँपी सी उसके देह में आ जाती थी जो उस भयानक आदमी की सूरत याद आने से थी या किसी सबब से यह हम नहीं कह सकते ।

(३)

हवड़ा का विशाल स्टेशन और हजारों आदमियों की भीड़ भाड़ देख कामिनी-देवी भौंचक सी हो गईं । आज तक उन्होंने इतना बड़ा कोई स्टेशन नहीं देखा था और न कहीं इतनी भीड़ ही देखी थी ।

कामिनी और नरेन्द्र को उम्मीद थी कि अपने नौकरों को यहाँ मौजूद पावेंगे पर इसके विपरीत यहाँ किसी को भी न देख उन्हें ताज्जुब हुआ । कुछ देर तक वे उन लोगों की राह देखते रहे, मगर जब कोई न दिखाई पड़ा तो कामिनी का कलेजा फिर धड़का और उसने काँपती हुई आवाज से नरेन्द्र से कहा, "अनन्त तो आया नहीं, अब क्या होगा ?"

नरेन्द्र बोला, "घबड़ाओ नहीं, कोई न कोई जरूर आया होगा, या शायद स्टेशन के अन्दर न आ सके हों, ठहरो मैं उतर कर देखता हूं ।"

कह कर नरेन्द्र गाड़ी के नीचे उतर गया, पर इतनी भारी भीड़ में दो एक आदमियों को खोज निकालना कोई सहज काम न था । वह इधर उधर देखता हुआ आगे बढ़ता गया और थोड़ी देर बाद स्टेशन के दूसरे सिरे की तरफ जा कामिनी की आँखों की ओट हो गया । कामिनी डिब्बे की खिड़की में खड़ी उसकी राह देखने लगी ।

दो मिनट बीता, चार मिनट बीता, दस मिनट बीते, धीरे धीरे देर होने लगी, पर न तो नौकर ही लोग दिखाई पड़े और न नरेन्द्र ही लौट कर आया । अब कामिनी की घबराहट बढ़ने लगी । वह बार बार खिड़की के बाहर सिर निकाल कर देखती, पर वहाँ कोई हो तब तो दिखाई पड़े ! नौकरों को खोजता हुआ नरेन्द्र भी न जाने कहाँ लोप हो गया था ।

धीरे धीरे प्लेटफार्म मुसाफिरों से खाली होने लगा, एक एक करके सभी बाहर चले गये, आधे घण्टे बाद वहाँ सिर्फ रेलवे कर्मचारी रह गये या फिर दो चार काली कमर के नौजवान छोकरे जो कामिनी पर तिरछी निगाहें डाल रहे थे । कामिनी की घबड़ाहट अब बहुत बढ़ गई और उसके दिल ने कहा, "अब कोई मुसीबत मुझ पर आना ही चाहती है ।"

डिब्बे में बैठना फजूल समझ आखिर कुछ देर बाद कामिनी नीचे उतर आई । जो आदमी उधर ही से जा रहा था जो उसे अपनी तरफ आग्रह से देखते पा इज्जत के साथ रुक गया । कामिनी ने उससे पूछा, "मेरे भाई नौकरों को खोजने यहाँ

उतरे पर लौट कर नहीं आये, क्या आप किसी तरह उनका पता लगवा दे सकते हैं ?"

शायद गार्ड को कामिनीदेवी के रुतबे और इज्जत का हाल मालूम हो चुका था। इसकी बात सुन वह अदब से बोला, "आप चल कर वेटिंग-रूम में बैठें, मैं आपके भाई साहब का पता लगाने की कोशिश करता हूं।" कामिनी ने अपनी मीठी बोली में उसे धन्यवाद दिया और कहा, "कृपा कर कुछ कुली बुलवा दें जो मेरा असबाब वेटिंग-रूम तक पहुंचा दें।"

मेहरबान गार्ड ने उचित प्रबन्ध कर दिया बल्कि खुद कामिनीदेवी के साथ जा कर उन्हें वेटिंग-रूम तक पहुंचा भी दिया। उनका असबाब करीने से एक तरफ रख दिया गया और इसके बाद नरेन्द्र का हुलिया पोशाक आदि पूछ गार्ड विदा हुआ। कामिनी गाल पर हाथ रक्खे एक कुर्सी पर बैठ गई और दिल ही दिल में कहने लगी—"बुरी सायत में घर छोड़ा, शुरू से ही मुसीबतें आ रही हैं, देखूं अब क्या होता है !"

कामिनी अपनी फिक्र में इतना डूबी कि उसे कुछ होश ही नहीं रहा कि समय किस तरह बीत रहा है, पर बहुत देर के बाद जब उसने सिर उठाया तो यकायक कांप उठी और उसके मुंह से बेतहाशा एक चीख निकल पड़ी। उसने देखा कि सामने की खिड़की में से वही भयानक आदमी उसकी तरफ एक टक देख रहा है जो रात को उसे दिखाई पड़ा था और जिसे नरेन्द्र ने मुक्का मार कर डिब्बे के नीचे गिरा दिया था। कामिनी डर कर दौड़ती हुई दरवाजे के पास आई और उसे खोल कर बाहर हुआ ही चाहती थी कि उसने गार्ड को भीतर आते देखा जिसने उसे सलाम किया और तब उदास स्वर में कहा, "मैंने बहुत खोजा पर अफसोस आपके भाई साहब का तो कहीं पता न लगा !"

कामिनीदेवी उन औरतों में थीं जो यों तो बहुत ही नाजुक और कमजोर दिल की होती हैं पर आफत आ जाने पर बड़ी ही शान्ति और मजबूती से काम करती हैं। इस समय उन्होंने बड़ी कोशिश करके अपने को सम्हाला और गार्ड से कहा, "न मालूम वे कहाँ चले गये ! खैर मैं उन्हें तलाश करूंगी, फिलहाल अगर आप मुझे किसी होटल का पता बता दें और एक सवारी मंगा दें तो मैं बड़ी ही कृतज्ञ होऊंगी !"

कामिनीदेवी की सुन्दरता ही लोगों को बिना मोल का गुलाम बनाने की

काफी थी, उसके मधुर स्वर ने तो गार्ड को एक दम पानी कर दिया। वह स्वयं दौड़ कर एक किराये की मोटर बुला लाया और कुलियों द्वारा कामिनी का असबाब उस पर रखवाने बाद बोला, "यहाँ का ग्रैण्ड होटल सबसे बड़ा और आरामदेह है। आप वहाँ ही जायँ तो आराम पायेंगी, मोटर वाले को मैंने बता दिया है।"

कृतज्ञता के साथ धन्यवाद दे कामिनी मोटर पर जा बैठी। गार्ड ने स्वयम् मोटर का दर्वाजा बन्द किया और जब भारी शब्द के साथ मोटर चल पड़ी तो टोपी उतार सलाम करते हुए मन ही मन कहा, "संध्या को जरूर मैं ग्रैण्ड होटल जा इनसे मिलूँगा। अहा, क्या रूप है ! कैसी मीठी आवाज है !"

गंगा का पुल पार कर मोटर तेजी के साथ होटल की तरफ दौड़ी। यद्यपि इतने बड़े शहर में अकेली और मुसीबत में पड़ी कामिनी का कलेजा पुरजों उछल रहा था, फिर भी वह अपने को सम्हाले हुए बड़ी सावधानी से दोनों तरफ देखती जाती थी कि शायद कहीं पर नरेन्द्र दिखाई पड़ जाय। यकायक एक बड़े फाटक वाले मकान के सामने पहुंच वह कुछ देख कर चौंक उठी और साथ ही उसने मोटर वाले को मोटर रोकने को कहा। झटके के साथ मोटर रुकी और तब खिड़की में से पीछे की तरफ झाँक कर कामिनी ने देखा कि उसके भाई नरेन्द्र को कई पुलिस वाले पकड़े हुए उसी फाटक के अन्दर ले जा रहे हैं। उसने मोटर वाले को गाड़ी पीछे ले चलने को कहा और हाथ का इशारा कर वह मकान बताते हुए पूछा, "वह इमारत क्या है ?" मोटर वाला बोला, "थाना है।" कामिनी ने कहा, "वहाँ ले चल कर फाटक पर गाड़ी खड़ी करो।"

थाने के सामने मोटर के आते ही कामिनी उस पर से कूद पड़ी और दौड़ती हुई फाटक के अन्दर घुसी। दर्वाजे पर खड़ा सिपाही शायद उसे रोकता पर उसके हुस्न के रोआब में आकर खड़ा रह गया बल्कि बोला, "इन्स्पेक्टर साहब सामने वाले दालान में हैं।"

कामिनी लपकती हुई सामने के दालान में पहुंची और वहाँ जाते ही उसकी निगाह नरेन्द्र पर पड़ी जिसे कई आदमी रस्सियों से बाँधे पकड़े खड़े थे। नरेन्द्र को देखते ही कामिनी बदहवासों की तरह उसकी तरफ यह कहती हुई लपकी, "भाई नरेन्द्र, तुम कहाँ चले गये थे ? और यह किस मुसीबत में पड़ गये हो ?"

ताज्जुब की बात थी कि नरेन्द्र को देख कामिनी जिस तरह खुश हुई थी

वैसी कोई खुशी नरेन्द्र के चेहरे पर कामिनी को देख कर जाहिर न हुई। जिस समय एक कांस्टेबल ने मुलायमियत पर मजबूती के साथ कामिनी को रोका और कहा, "लेडी साहबा, आप यहाँ बैठ जायँ और मुजरिम से बात करने के पहिले इन्स्पेक्टर साहब की इजाजत ले लें।" तो कामिनी रुक गई और उसके दिल की तकलीफ उसकी आंखों से जाहिर हो गई, पर नरेन्द्र के चेहरे का रंग इस पर भी ज्यों का त्यों ही बना रहा, यहाँ तक कि उसकी सूरत देख कोई यह भी नहीं कह सकता था कि कामिनी का भाई है या उसे जानता भी है। उसका चेहरा पहिले की ही तरह गम्भीर और भावहीन बना रहा और कामिनी की बातों का उस पर कोई असर न पड़ा। वह पुतले की तरह चुपचाप अपनी जगह पर खड़ा रहा।

कामिनी इन्सपेक्टर की तरफ घूमी जो कुर्सी पर बैठा ताज्जुब के साथ उसकी तरफ देख रहा था और बोली, "इन्सपेक्टर साहब, ये मेरे भाई हैं। हम दोनों एक साथ ही आज सुबह हबड़ा स्टेशन पर उतरे हैं, पर वहाँ पहुंचते ही ये गायब हो गये और अब मैं इन्हें यहाँ इस हालत में देख रही हूं। क्या इनसे कोई कसूर हो गया है या किसी तरह का जुर्म इन पर लगाया गया है?"

सभों की तरह इन्सपेक्टर पर भी कामिनी के रूप ने अपना जादू डाला था। वह उसकी बात सुनते ही खातिर के साथ बोला, "लेडी, इन पर बहुत संगीन जुर्म लगाया गया है, पर उसका हाल कहने के पहिले मैं यह समझना चाहता हूँ कि ये भी आपको जानते हैं या नहीं!"

कामिनी ने हँस कर नरेन्द्र की तरफ देखा, पर हैं, यह क्या! वे ठीक सुन रही थीं या उनके कानों का भ्रम था! नरेन्द्र ने मजबूत आवाज में कहा, "मैं इस लड़की को बिल्कुल नहीं जानता और न मेरी इसकी किसी तरह की रिश्तेदारी है। मैं इसके संग आया भी नहीं। आज कितने ही दिनों से मैं कलकत्ते में हूं पर आज तक मैंने कभी इसकी सूरत भी नहीं देखी।"

अपने उस भाई के मुंह से जो उसे जान से बढ़ कर मानता था ऐसी बातें सुन कामिनी की तो यह हालत हो गई कि काटो तो लहू नहीं। वह बदहवासी की तरह एक कुर्सी पर बैठ बल्कि यों कहना चाहिये कि गिर गई।

(४)

आगरे के पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट मिस्टर केमिल अपने बँगले के पूरब तरफ वाले बारामदे में बैठे हुए हैं। उनके बगल में दो तीन कुरसियां और पड़ी हैं सामने एक छोटे टेबुल पर कुछ चाय पानी का सामान रक्खा हुआ है, पर हैं इस समय वे बिल्कुल अकेले ही। उनके मुंह में एक मोटा सिगार है और धुंए का गुब्बारा छोड़ते और उसकी लहरदार उठान पर गौर करते हुए वे कुछ सोच रहे हैं।

थोड़ी देर के बाद केमिल साहब उठ खड़े हुए और अंगड़ाई लेकर हाथ का सिगार फेंकने बाद बगल के दर्वाजे की चिक उठा कर उस कमरे के अन्दर घुसे जिसमें उनकी पत्नी और लड़की बैठा करती थीं। इस समय ये दोनों ही वहाँ मौजूद थीं। मिस्टर केमिल भी उन्हीं के पास जाकर बैठ गये।

केमिल की पत्नी विक्टोरिया और उनकी लड़की रोज से पाठकों की पहिले भी भेंट हो चुकी है अस्तु इन्हें देखते ही पहिचान लेंगे। विक्टोरिया की उम्र ज्यादा हो जाने पर भी उसका शरीर अभी भी सुडौल और चेहरा सुन्दर था और रोज तो इस समय आगरे भर की अंगरेज लड़कियों में सबसे सुन्दर मानी जाती थी। इस समय ये दोनों माँ बेटी एक ही टेबुल पर झुकी हुई कुछ देख रही थीं। अपने पिता को आकर बैठते देख रोज बोली, "पापा, देखिये मेरे लिए कैसी सुन्दर सौगात आई है!"

केमिल साहब ने टेबुल पर झुकते हुए पूछा, "क्या? किसने भेजा है?" जवाब में विक्टोरिया ने एक मखमली केस उनके आगे बढ़ा दिया और कहा, "कामिनीदेवी ने यह सौगात रोज के लिए भेजी है।"

केमिल ने वह केस देखा, उसमें छोटी खुरपड़ी के शक्ल की हीरे और मोतिक की बनी हुई कपड़े में लगाने की एक पिन थी। पिन बहुत ही खूबसूरत बनी हुई थी और उस पर के जवाहिरात भी बहुत ही कीमती थे। इस चीज को देख और भेजने वाले का नाम सुन कर केमिल साहब के सामने कामिनी की भोली सूरत फिर गई और उन्हें उस समय की याद आ गई जब वह मदद लेने के लिए उनके पास घबराई हुई पहुंची थी। थोड़ी देर तक वह उस पिन को देखते रहे और तब बोले—"कामिनीदेवी को कोई चीठी भी आई है?"

रोज बोली, "हाँ यह चीठी है। इसमें उन्होंने लिखा है—'अफसोस कि जब मुझारे पिता यहाँ आवेंगे उस समय मैं नेपाल में न रहूंगी। मुझे अपनी जायदाद के सम्बन्ध में कुछ झगड़े निपटाने के लिए फोर्ट विलियम जाना पड़ रहा है। हाँ यदि वे कुछ ज्यादा दिनों तक नेपाल में रहे या मैं ही कलकत्ते से जल्दी वापस हो सकी तो बहुत मुमकिन है कि उनसे मेरी मुलाकात हो जाय।"

केमिल साहब ने चीठी लेकर देखा और पढ़ कर वापस कर दिया। उनकी स्त्री ने कहा—"मालूम होता है उन्हें यह नहीं मालूम हुआ कि तुम्हारा नैपाल जाना किस मुसीबत के सबब रुक गया।"

केमिल०। यह समाचार तो तब पहुंचा होगा जब कामिनीदेवी नैपाल छोड़ चुकी होंगी।

विक्टो०। उस मामले में कुछ सूराग लगा?

केमिल०। किस मामले में?

विक्टो०। उसी हीरे के मोर के बारे में।

केमिल०। हाँ कुछ पता तो लगा है। भवानीदत्त और गनपतराम ने बड़ी कोशिश करके दो तीन भेदों का पता लगाया है जिससे उम्मीद होती है.....

इसी समय नौकर ने अन्दर आकर भवानीदत्त और गनपतराम के आने की इत्तिला दी जिसे सुनते ही केमिल साहब उठ खड़े हुए और अपनी पत्नी तथा लड़की को वहीं छोड़ बाहर के मुलाकाती कमरे में जा पहुंचे जहाँ दोनों आदमी बैठे थे। केमिल साहब को देखते ही वे दोनों उठ खड़े हुए। साहब सलामत के बाद केमिल साहब ने पूछा, "क्यों कुछ पता लगा?"

गनपत०। जी हाँ बहुत कुछ।

केमिल०। (खुश हो कर) क्या मालूम हुआ?

गन०। अगर हम लोगों का खयाल ठीक है तो हम लोगों ने 'लाल-पञ्जे' के उस अड्डे का पता लगा लिया है जहाँ से वह यह सब शैतान रचा करता है।

केमिल०। (बहुत खुश होकर) हाँ!! वह कौन सी जगह है?

गन०। वह बेगमपुरा का एक बहुत पुराना मकान है। आस पास के लोगों में वह भयंकर रूप से भुतहा मशहूर है और इसी से दिन में भी कोई उसके पास नहीं जाता, मगर कम से कम मुझे तो इस बारे में कोई शक नहीं रह गया है कि 'लाल-पञ्जे' का वही सदर मुकाम है और वह अकसर वहाँ रहा करता है।

केमिल०। वाह वाह, तब तो उसे हम लोग सहज ही में पकड़ सकते हैं। अच्छा बताओ कि उस जगह का पता क्योंकर तुम लोगों को लगा?

गनपतराम ने इधर उधर देखा और तब जेब से एक छोटी सी किताब जो नोटबुक की तरह और एक रेशमी फीते से बँधी हुई थी निकाल कर केमिल साहब के सामने रख दी। केमिल साहब ने फीता हटा कर उस किताब को खोला

और साथ ही कुछ देख कर चौंक उठे।

(५)

एक बहुत बड़े और विचित्र तरह के सामानों से भरे कमरे में हम पाठकों को ले चलते हैं जिसमें शायद पहिले भी वे एक बार आ चुके हैं।

यह वही कमरा है जिसके चारो तरफ की दीवारों पर सब जगह चमड़े के मोटे गद्दे चढ़े हुए हैं और भीतर का हिस्सा तरह तरह की मशीनों से भरा है। इस समय इसकी खिड़कियों या दरवाजों पर भी चमड़े के गद्दे चढ़े हुए हैं जिससे उनका कोई भी निशान कहीं दिखाई नहीं पड़ता और इसी कारण इस जगह इस समय एक दम अन्धकार हो रहा है, परन्तु हमारे पाठकों को इससे घबराने की कोई जरूरत नहीं है। वे हमारे साथ बेधड़क चले आवें और उन कुरसियों में से किसी पर बैठ जायें जो इधर उधर फैली हुई हैं। ताज्जुब नहीं कि उन्हें यहाँ कोई विचित्र तमाशा दिखाई पड़ जाय।

कुछ ही देर बाद यकायक झटके के साथ किसी यन्त्र के चलने की आवाज आई और साथ ही उस कोठरी में एक तरह की हरकत सी मालूम पड़ने लगी। ऐसी जान पड़ा मानों वह कोठरी ऊपर को उठ रही है, मगर यह बात कुछ ही देर बाद बन्द हो गई और साथ ही उस यन्त्र के चलने की आवाज भी बन्द हो गई। उस समय एक ऐसी आहट आई जैसे कोई ताला खोला गया हो और दूसरे ही सायत में एक तरफ की गद्दी हट कर वहाँ दर्वाजे की सूरत दिखाई पड़ने लगी जिसे खोल कर कोई आदमी भीतर आया। इसने आते ही न जाने क्या तर्कीब करी कि कोठरी की छत में लगे कई बिजली के लम्प रोशन हो गये और वहाँ दिन की तरह उजाला हो गया।

इस आने वाले आदमी का तमाम बदन और चेहरा यहाँ तक कि हाथ पाँव की उँगलियाँ भी काले कपड़े से एक दम ढँकी हुई थीं जिसमें सिर्फ आँख के पास देखने के लिए दो छेद बने हुए थे, इससे हम इसकी सूरत शक्ल के बारे में कुछ भी नहीं कह सकते कि यह गोरा है या काला अथवा अधेड़ या जवान, पर इसकी चाल ढाल और रंग ढंग से इतना पता जरूर लगता था कि यह मजबूत और लम्बा चौड़ा आदमी है। इसके हाथ में एक छोटी सी गठरी थी जिसे इसने जमीन पर रख दिया और आप एक कुर्सी पर इस तरह बैठ गया मानों बहुत दूर से सफर करके आता हुआ एक दम थक गया हो।

उसे बैठे कुछ ही मिनट हुए होंगे कि बीच के टेबुल पर रक्खे टेलीफोन की घण्टी बज उठी। वह विचित्र आदमी उठा और पास जा कर चोंगा कान से लगाया। किसी की आवाज सुनाई पड़ी जो कह रहा था, "मैं हूं, ग्यारह।" जवाब में उस आदमी ने कहा, "कहो क्या है?"

आवाज०। मैंने आज आने को कहा था पर आ न सकूँगा।

विचित्र आदमी०। क्यों?

आवाज०। एक जरूरी काम से इसी समय कलकत्ते जा रहा हूं।

वि० आ०। क्या काम है?

आवाज०। आपको उस नेपालिन लड़की की याद है जिसका जिक्र नानकचन्द ने एक बार किया था?

वि० आ०। हाँ हाँ, कामिनीदेवी?

आवाज०। हाँ, वही इस समय वहाँ जा रही है और सुनता हूं उस पर नानकचन्द कोई घात करने वाले हैं।

वि० आ०। हैं! घात कैसी?

आवाज०। यह मैं अभी तो नहीं कह सकता लेकिन अगर आप डाक के वक्त स्टेशन पर मिलें तो जो कुछ मालूम हो बता सकता हूं।

वि० आ०। मैं जरूर सुनना चाहूंगा और इसी लिए ठीक वक्त पर स्टेशन पहुंच जाऊँगा।

आवाज०। ठीक है, हाँ यह तो कहिये क्या वह मामला निपट गया?

वि० आ०। हाँ बिलकुल ठीक उतरा।

आवाज बन्द हो गई और उस विचित्र आदमी ने टेलीफोन का चोंगा हाथ से रख दिया। कुछ देर तक वह गौर में डूबा हुआ उसी जगह खड़ा रहा, तब उसने अपने भीतरी जेब में हाथ डाला और एक छोटी सी तस्वीर निकाली। यह तस्वीर जिस खूबसूरत नौजवान लड़की की थी उसे हमारे पाठक भी अगर देखे तो बखूबी पहिचान लेंगे क्योंकि यह कामिनी रानी की है जिसका हाल ऊपर कई बार लिखा जा चुका है।

विचित्र आदमी देर तक एकटक उस तस्वीर को देखता रहा। उसका चेहरा काले नकाब से ढंका होने के कारण हम उस पर आये भावों का कोई वर्णन तो नहीं कर सकते, पर यदि उस ठंडी साँस से कुछ मतलब निकल सके जो इस तस्वीर

को देख कर उस विचित्र आदमी के मुँह से निकल गई तो हमें अवश्य कहना पड़ेगा कि इस लड़की की खूबसूरती ने उसके दिल पर गहरी चोट पहुंचाई है।

बहुत देर तक वह विचित्र आदमी एकटक उस तस्वीर को देखता रहा मगर दीवार में लगी एक छोटी घन्टी के बजने ने उसका ध्यान भंग किया। उसने तस्वीर जेब में रख ली और उस दीवार के पास गया। घण्टी के नीचे एक प्रकार की घड़ी सी लगी हुई थी जिसमें चारो तरफ बहुत से अंक बने हुए थे तथा बीच में एक सूई लगी हुई थी जो इस समय इक्कीस के अंक पर थी जिसे देख विचित्र आदमी ने धीरे से मन ही मन कहा, "नम्बर इक्कीस इस समय क्यों आया है?" जरा देर कुछ सोचता रहा, तब उसने एक छोटे से बटन को दबाया जो उस घड़ी के नीचे ही बना हुआ था।

बटन दबते ही उत्तर तरफ की दीवार में से एक जगह की चमड़े की गद्दी हट गई और एक खिड़की दिखाई पड़ने लगी। ताली लगा कर विचित्र आदमी ने उसे खोला और कहा, "भीतर आ जाओ।"

बड़े ही मैले कुचैले और गन्दे तथा फटे कपड़े पहिने हुआ एक लंगड़ा भिखमंगा अन्दर आया और विचित्र मनुष्य को सलाम कर खड़ा हो गया जिसने खिड़की पुनः बन्द कर दी और तब उस भिखमंगे से पूछा, "कहो नम्बर इक्कीस, क्या बात है?"

भिखमंगा०। सरदार, बड़ी भयानक खबर है!

सरदार०। सो क्या?

भिखमंगा०। रात वाले मामले में आपने अपनी नोटबुक उसी पहाड़ी नाले में गिरा दी, और वह कैमिल साहब के पास पहुंच गई।

सरदार०। (चौंक कर) हैं, मेरी नोटबुक!!

कहने के साथ ही उसका हाथ जेब में गया जिसे खाली पा उसके मुँह से एक 'आह' निकल गई, पर उसने तुरन्त ही अपने को सँभाला और कुर्सी पास खींच उस पर बैठ सिर झुका कुछ सोचने लगा। थोड़ी देर बाद उसने सिर उठाया और भिखमंगे से कहा, "मुझसे भारी गलती हो गई। खैर जिस तरह हो वह नोटबुक तो कैमिल से वापस लेनी ही होगी। कैमिल को वह कब मिली है?"

भिखमंगा०। आज शाम को चार बजे गनपतराम ने उसे कैमिल साहब के पास पहुंचाया है।

सरदार०। आज ही शाम को ?

भिखमंगा०। जी हाँ।

सरदार०। खैर तब तो.....अच्छा तुम अपनी जगह पर जाओ और सब तरह से चौकन्ने रहो, अगर कोई बात हो तो डाक के वक्त स्टेशन पर मिल कर मुझसे कहना, उस समय मैं वहीं रहूँगा।

"बहुत अच्छा" कह उस भिखमंगे ने सलाम किया और इस आदमी के खिड़की खोल देने पर उसी राह कमरे के बाहर निकल गया, मगर ताज्जुब की बात है कि इस समय उसकी चाल में लंगड़ाहट नहीं थी। उसके जाते ही उस विचित्र आदमी ने पुनः दर्वाजा बन्द कर लिया और तब अपनी जगह पर जा हथेली पर ठुड्डी रख गौर में डूब गया।

(६)

देर तक केमिल साहब बहुत गौर के साथ उस नोटबुक को देखते रहे।

यह नोटबुक बहुत ही छोटे साइज की थी और मुश्किल से पचास या साठ पेजों की होगी। ऊपर चमड़े की खूबसूरत मुलायम जिल्द थी जिसमें रेशमी फीता लगा हुआ था। भीतर के पेजों में तरह तरह की भाषाओं में तरह तरह की बातें लिखी थीं पर उनका मतलब समझना बहुत ही कठिन था क्योंकि ज्यादातर वे इशारों और अंकों में लिखी हुई थीं। किसी पेज में तरह तरह के रंगों में तरह तरह की शक्लें बनी थीं तो किसी में अंकों की कतार थी, किसी में नक्शे बने थे तो किसी में चिड़ियाओं और जानवरों की शक्लें। यकायक देखने से यह पहिचानना कठिन था कि यह किसी भले चंगे आदमी की नोट बुक है या किसी पागल की, मगर केमिल साहब तुरन्त समझ गये कि इस कापी में बहुत से भेद भरे हैं और इन शक्लों रंगों नक्शों और अंकों की आड़ में बहुत सी भयानक बातें छिपी हुई हैं।

कापी में कहीं अंगरेजी कहीं हिन्दी और कहीं अन्य भाषाओं में भी कुछ बातें लिखी थीं। उन्हीं को देखते हुए एक जगह केमिल साहब ने पढ़ा—

नं० १०७४, बेगमपुरा
बे. खु. का. म.
* २७—१९

केमिल साहब कुछ देर तक इसे देखते रहे और तब दोनों जासूसों की तरफ देख कर बोले, "शायद तुमने इसी मजमून को देख कर समझा है कि लाल-पञ्जे का हेड आफिस बेगमपुरा में है?"

गनपत०। जी हाँ, 'नं० १०७४, बेगमपुरा, पढ़ते ही हम लोगों को इस बात का ख्याल हुआ और हमने तुरन्त वहाँ पहुंच कर पता लगाया। जैसा कि मैंने पहिले कहा, वह एक बहुत ही पुराना खंडहर है। मुहल्ले वाले उसे भुतहा समझ कर उसके पास भी नहीं जाते मगर जाँच करने से वहाँ लोगों की आवा-जाही के निशान पाये गये और यह भी शक करने का मौका मिला कि इसी में जरूर 'लाल-पञ्जे' का भी आना जाना होता रहता है। जरूर उसमें कोई छिपी हुई कोठरी या तहखाना है। अगर हम लोग कुछ अधिक कोशिश करते तो बेशक पता लग जाता मगर आपको खबर देना जरूरी था इससे देर न कर सीधे यहाँ चले आये। अब आप जैसा उचित समझें करें।

केमिल साहब कुछ जवाब दिया ही चाहते थे कि बाहर जाने की पोशाक पहिने मिस रोज ने दर्वाजा खोल कर भीतर झांका और कहा, "पापा, आप कैप्टेन के डान्स में नहीं चलियेगा ? वक्त तो हो गया है।"

केमिल साहब चौंक कर बोले, "ओह मैं बिल्कुल ही भूल गया था ! अच्छा तुम लोग चलो, मैं एक जरूरी काम निपटा के जल्दी ही आता हूँ।" रोज चली गई और केमिल साहब फिर दोनों जासूसों की तरफ घूम कर बोले, "इसके विषय में और तो जो कुछ करना होगा किया ही जायगा मगर सब से पहिले किसी होशियार आदमी को वहाँ पहरे पर बैठा देना चाहिये जो उस मकान में आने जाने वालों की टोह लेता रहे।"

भवानी०। सो प्रबन्ध हम लोगों ने कर दिया है। इस समय दो चालाक आदमी उस मकान के दो तरफ छिपे हुए हैं और बराबर उनकी बदली होती रहेगी।

केमिल०। हाँ यह तो ठीक है, पर अच्छा यही होता कि तुम लोगों में से कोई वहाँ मौजूद रहता। मामूली आदमियों से 'लाल-पञ्जे' ऐसे शैतान और उन पर निगाह रखने का काम लेना बहुत सुफल न पैदा करेगा। मुमकिन है कि उसे कुछ शक हो जाय और वह वहाँ से अपना डेरा डंडा उठा ले।

गनपत०। जी हाँ, यह खयाल आपका ठीक है। यद्यपि आदमी तो हमने होशियार ही मुकर्रर किये हैं पर हम लोग खुद भी निगाह रखेंगे।

भवानी०। मगर मेरा तो दिल यह कहता है कि ज्यादा विलम्ब न करके तुरन्त उस मकान की तलाशी ले डाली जाय।

केमिल०। अगर तुम लोग जरूरी समझते हो तो उसका इन्तजाम मैं कर दूंगा, मगर क्या यह अच्छा न होगा कि कुछ ज्यादा सूत्र हाथ लग जाने बाद यह काम किया जाय?

धनपत०। जैसी आपकी मर्जी।

केमिल०। हाँ, और मुझे यह भी विश्वास होता है कि ये जो तरह तरह की शक्लें रंग बिन्दियां और अंक बने हुए हैं ये सब 'कोड' हैं और कोशिश करने से इनका मतलब भी जरूर समझ में आ सकता है। पूरा मतलब जान लेने बाद अगर हम लोग कार्रवाई करेंगे तो वह ज्यादा कारगर होगी।

धनपत०। जी हाँ, यह तो बेशक ठीक है मगर इन इशारों का मतलब समझना सरल काम न होगा। इसमें बहुत समय और बड़ी मेहनत लगेगी और इस बीच में 'लाल-पञ्जा' जिसे अपनी नोटबुक के गायब होने के सबब से जरूर फिक्र पैदा हो गई होगी, अपने बचाव का बहुत कुछ बन्दोबस्त कर लेगा। तब उसके खिलाफ कुछ करना मुश्किल हो जायगा।

केमिल०। हाँ, यह बात भी ठीक है। अच्छा आज रात भर मैं इस कापी के साथ सर लड़ाऊंगा, कुछ काम निकला तो ठीक नहीं कल तुम्हें सर्च-वारंट मिल जायगा।

दस पन्द्रह मिनट तक दोनों जासूस केमिल साहब से बातें करते रहे, तब विदा हुए। उनके जाने बाद कुछ देर तक केमिल साहब वहीं बैठे उस पाकेटबुक के पन्ने उलटते रहे और तब उसे जेब में रख उठ खड़े हुए। आज कैप्टन रिचार्डसन के यहाँ दावत और नाच था जिसमें जाना मिस्टर केमिल के लिए बहुत जरूरी था। उनकी पत्नी और लड़की पहिले ही जा चुकी थीं अस्तु वे भी कपड़े पहिनने चले गये।

दस मिनट के भीतर ही सब तरह से लैस होकर केमिल साहब बैठक के कमरे में आ गये और इस बात की राह देखने लगे कि उनकी पत्नी और बेटी को पहुंचा कर मोटर लौटे तो वे भी चलें। उन दोनों को गये घंटे भर के करीब हो गया था और अब तक कभी का उनकी मोटर को वापस आ जाना चाहिये था पर केमिल साहब ने यह सोच कर मन को सब्र दिलाया कि शायद किसी

दूसरे काम से विक्टोरिया या रोज ने भेज दिया होगा, और वे एक कुरसी पर बैठ इन्तजार करने लगे। समय काटने के लिए उन्होंने अपने भीतरी जेब से 'लाल-पञ्जे' की नोटबुक पुनः निकाल ली और उसके इशारों पर गौर करने लगे।

इसी समय बाहर से मोटर की आवाज आई और केमिल साहब को मालूम हो गया कि उनकी मोटर लौट आई है। उन्होंने वह पाकेटबुक फिर जेब के हवाले की और कुरसी से उठ खड़े हुए। इसी समय उनका ड्राइवर वहां आ पहुंचा और साहब को सलाम कर उसने एक लिफाफा उनके हाथ में दिया।

केमिल साहब ने लिफाफा लेते हुए कहा, "तुमको वहां से लौटने में इतनी देर क्यों लगी?" शोफर बोला, "मिस साहब ने बेगमपुरा ले चलने को कहा, इससे उन्हें वहां पहुंचा कर तब आ रहा हूं।"

'बेगमपुरा' नाम सुनते ही केमिल साहब का माथा ठनका। उन्होंने घबड़ा कर पूछा, "क्या रोज बेगमपुरा गई है?" शोफर ने जवाब दिया, "जी हाँ, कप्तान साहब के अहाते में घुसते ही उन्हें किसी ने एक चीठी दी जिसे पढ़ वे कुछ घबड़ा सी गईं और तब लेडी साहबा से कुछ बातें कर मोटर पर वापस आकर मुझसे बोलीं, "बेगमपुरा चलो।" हुक्म के मुताबिक मैंने वहां ही उन्हें पहुंचाया। वे उतर कर और मुझे ठहरने को कह कर कहीं चली गईं। बहुत देर तक मैं राह देखता रहा, इसके बाद एक चपरासी ने आकर यह चीठी दी और कहा कि 'मिस साहब कैप्टन के यहां लौट गईं, तुम जाकर साहब को वापस में ले जाओ और यह चीठी भी उन तक पहुंचा दो, खास उन्हीं के हाथ में देना'—सो मैं लौट आया।"

यह बात सुन कर केमिल साहब चौंक गये और किसी आशंका से उनका हृदय कांप उठा। वे मोटर ड्राइवर से और भी कुछ पूछते पर उसी समय लिफाफे पर उनका ध्यान गया और उन्होंने जोड़ के ऊपर की मोहर पर एक छोटे पंजे का निशान देखा। वे घबराहट के साथ चौंक पड़े और जल्दी से लिफाफा खोल डाला। मैले कागज का एक टुकड़ा निकला जिस पर कुछ लिखा हुआ था। केमिल साहब ने उसे पढ़ा और तब अपना सिर पकड़ कर कुर्सी पर बैठ गये।

चीठी का मजमून यह था—

"केमिल साहब,

"मेरी एक किताब नोटबुक आपके जासूसों ने आपके पास पहुंचाई है। उस पर मेरा हक है और मैं उसे वापस चाहता हूं। अगर अब तक मालूम न हुआ

हो तो यह साथ की चीज देखने से आपको विश्वास हो जायगा कि आपकी लड़की मिस रोज मेरे कब्जे में हैं। जिस घड़ी मेरी पाकेटबुक मुझे वापस मिल जायगी उसी घड़ी वे भी सही सलामत आपके पास पहुंचा दी जायँगी। शहर के बाहर पीपल महादेव के मन्दिर में वह किताब रख देने से मुझे मिल जायगी।"

इसके नीचे लाल स्याही से दो पञ्जों का चिह्न बना हुआ था।

थोड़ी देर के लिये कैप्टिल साहब की वह हालत हो गई कि काटो तो लहू न निकले, इसके बाद अपने को सम्हाल उन्होंने पुनः लिफाफा देखा। कोई और चीज भी उसके अन्दर थी। उन्होंने लिफाफा उलटा और एक जड़ाऊ पिन जो खुखड़ी की शकल की थी निकल कर उनके हाथ पर आ गिरी। यह वही पिन थी जिसे आज ही मिस रोज ने कामिनी से सौगात की तरह पाया था। इसे लगा कर ही आज वह कप्तान के यहाँ गई थी।

(७)

कामिनीदेवी की हालत पागलों की सी हो रही थी। अपने जिस भाई को लड़कपन से वह देखती आई और जो उन्हें अपनी आँख की पुतली की तरह रखता था वही आज उनके सामने खड़ा होकर कह रहा था—"मैंने तुम्हें कभी देखा भी नहीं, मैं नहीं जानता कि तू कौन है।" इससे भी बढ़ कर ताज्जुब की बात क्या कोई और हो सकती थी?

पुलिस इन्स्पेक्टर और सब सिपाही ताज्जुब के साथ कामिनीदेवी की तरफ देख रहे थे, केवल एक वही मुजरिम जिसे कामिनी अपना भाई समझती थी चुपचाप खड़ा जमीन की तरफ देख रहा था। थोड़ी देर बाद कामिनीदेवी ने सिर उठाया और नरेन्द्र की तरफ देख कर कहा, "भाई नरेन्द्र, क्यों मुझसे हँसी करके मेरा खून सुखा रहे हो !!"

नरेन्द्र ने जमीन की तरफ देखते हुए कहा, "मैं बार बार कह रहा हूँ कि मैं तुम्हें बिल्कुल नहीं जानता और आज के पहिले मैंने कभी तुम्हारी शक्ल भी नहीं देखी, फिर भी न जाने क्यों तुम्हें विश्वास नहीं होता और तुम जबर्दस्ती मुझे अपना भाई बताती जा रही हो !!"

कामिनी०। क्या तुम मेरे साथ नैपाल से आज ही यहाँ नहीं पहुंचे हो और क्या तुम मुझे ट्रेन में ही छोड़ नौकरों को खोजने उतर कर गायब नहीं हो गये थे?

नरेन्द्र०। मैं कह चुका कि आज महीनों से मैं इसी शहर में हूं! सिर्फ मैं

ही यह बात नहीं कह रहा हूँ बल्कि यह तमाम पुलिस इस बात को जानती है जिसने मुझे खून के जुर्म में पकड़ा है। (इन्स्पेक्टर की तरफ देख कर) मैं आप से प्रार्थना करता हूँ कि आप इनको यहाँ से जाने को कहें। इनकी बदौलत मैं अपने मुंह से आप मुजरिम बन रहा हूं। इनका भाई—चाहे वह कोई भी हो और कहीं भी हो—जरूर दो चार रोज में इन्हें मिल ही जायगा, फिर ये फजूल मुझे क्यों तंग कर रही हैं!"

कामिनी ने ये बातें सुन डबडबाई आँखों से नरेन्द्र की तरफ देखा। उसकी समझ में नहीं आता था कि वह क्या कहे या क्या करे। इन्स्पेक्टर कुछ देर तक उनकी और नरेन्द्र की सूरत देखता रहा और तब मुलायमियत के साथ कामिनीदेवी से बोला, "बेशक आप पर बहुत बड़ा तरद्दुद आ पड़ा है मगर आप बिल्कुल न घबड़ायें, हम लोग आपकी मदद करने को तैयार हैं। अगर आप थोड़ी देर के लिए तकलीफ कर उस (हाथ से बता कर) मेरे आफिस में चली जांय तो मैं मुजरिम का इजहार खतम करके वहीं आता और आपकी बातें सुनता हूँ। मुजरिम का कहना बहुत ठीक है और मुमकिन है कि आपसे बातचीत करने में उसे अपने को आप ही फंसा देने वाली कोई बात कहनी पड़ जाय, इससे आपका यहाँ रहना उसके हक में ठीक न होगा!"

एक लम्बी साँस लेकर कामिनी उठ खड़ी हुई। डबडबाई आँखों से उसने एक बार नरेन्द्र की तरफ देखा और तब रूमाल से अपना मुंह दबाए उस कमरे की तरफ चली जिसकी तरफ इन्स्पेक्टर ने इशारा किया था। यह कमरा फाटक के बगल ही में पड़ता था और इसमें कई कुरसियां तथा एक मेज रक्खी हुई थी। कामिनी एक कुरसी पर बैठ गई और आँखों से गर्म गर्म आँसू गिराती हुई सोचने लगी—"नरेन्द्र को क्या हो गया जो वह मुझसे इस तरह की बातें करने लगा है!!"

न जाने कब तक कामिनीदेवी इसी तरह बैठी रहीं, पर यकायक कमरे का दरवाजा खुलने की आहट पा वे चौंकीं। उन्हें ख्याल हुआ कि शायद इन्स्पेक्टर नरेन्द्र का इजहार खतम करके आ रहा है, पर घूम कर देखने से मालूम हुआ कि यह कोई मामूली नौकर है जिसने कामिनी को अदब से सलाम किया और पास आकर धीरे से कहा, "बाहर मोटर पर एक नौजवान आदमी बैठे हुए हैं जो अपना नाम नरेन्द्रसिंह बताते और आपसे मिलना चाहते हैं।"

इतना ही कामिनी चौंक कर उठ खड़ी हुई और उस आदमी से बोली, "कौन? नरेन्द्र! कहाँ है वह?" उस आदमी ने बगल का एक दरवाजा खोला और कहा,

"आप इधर से आइये, मैं आपको उनके पास ले चलता हूं।" कामिनी तुरन्त उसके पीछे चल खड़ी हुई। दो तीन कमरे पार कर वह आदमी एक छोटे दरवाजे के सामने पहुंचा जो बगली सड़क पर खुलता था। दर्वाजा खोलते ही सामने सड़क की दूसरी ओर खड़ी एक बन्द और बहुत बड़ी मोटर दिखाई पड़ी जिसमें कोई आदमी बैठा हुआ था। दूर से कामिनी को यही मालूम हुआ कि नरेन्द्र बैठा हुआ है। वह पागलों की तरह दौड़ती हुई वहाँ पहुंची। मोटर का दरवाजा खुल गया और भीतर बैठे आदमी ने हाथ का सहारा देकर कामिनी को अन्दर कर लिया। कामिनी को वहाँ तक ले आने वाला आदमी भी साथ ही चढ़ गया और मोटर तुरन्त चल पड़ी। उस समय कामिनी ने देखा कि जिसको उसने नरेन्द्र समझा वह कोई दूसरा ही आदमी है। उसके मुँह से चीख की आवाज निकल पड़ी मगर उस आदमी ने मुँह पर हाथ रख दिया और साथ ही दूसरे आदमी ने क्लोरोफार्म से तर एक रूमाल उसकी नाक पर रक्खा। दो ही चार सांस के बाद कामिनी को तनोबदन की सुध न रह गई।

(८)

अपने नौकरों को खोजता हुआ नरेन्द्र ट्रेन से उतर कर स्टेशन के बाहर तक आ गया पर कहीं भी उसे उनकी सूरत दिखाई न पड़ी। वह बहुत घबड़ाया और एक तरफ खड़ा हो सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये।

अचानक सामने से दौड़ कर आते हुए किसी आदमी ने नरेन्द्र से टक्कर ली। टक्कर इस जोर की थी कि नरेन्द्र लड़खड़ा गया और बड़ी मुश्किल से उसने अपने को गिरने से रोका। उस आदमी ने नर्मी से कहा, "माफ कीजि[ये]गा!" और तब आगे बढ़ना चाहा मगर यकायक रुक गया और बो[ला] "हैं! आप नरेन्द्रसिंह तो नहीं हैं!!"

नरेन्द्र ने ताज्जुब से उसकी तरफ देखा और यकायक पहिचाना कि [यह] उसका लड़कपन का दोस्त और स्कूल का साथी खड्गसिंह है। उसने घबड़[ाहट] हाथ पकड़ कर पूछा, "अरे खड्गसिंह! तुम यहाँ कहाँ?" खड्गसिंह ने [घबड़ा]ई हुई आवाज में कहा, "भाई कुछ पूछो मत! मुझ पर बड़ी भारी [आफत] आ गई है। इधर आओ तो मैं अपना हाल सुनाऊं। अगर तुम मेरी इस [आफत में] कोई मदद कर सको तो मैं जानूं कि मेरे सच्चे दोस्त हो!!"

यह कह नरेन्द्र का हाथ पकड़े हुए खड्गसिंह पुनः स्टेशन के अन्दर [ले]

गया और तेजी के साथ चल कर कोने के एक अंधेरे कमरे में पहुंचा जहाँ इस समय कोई भी नहीं था। यहाँ पहुंचते ही उसने जमीन पर गिर कर नरेन्द्र के दोनों पैर पकड़ लिये और रोती आवाज में कहा, "भाई नरेन्द्र, मेरी जान बचाओ, तुम अगर मदद नहीं करोगे तो मैं जीता न बचूंगा!"

नरेन्द्र ने घबड़ा कर उसको पैरों पर से उठाया और पूछा, "आखिर मामला क्या है जो तुम इस तरह घबड़ाए हुए हो? कुछ कहो भी तो सही! मैं दिलो-जान से तुम्हारी मदद करने को तैयार हूँ मगर मुझको कुछ मालूम भी तो हो!"

खड्ग काँपता हुआ बोला, "मुझसे बड़ा भारी कसूर हो गया है! मैं एक खून करके भागा हूँ और पुलिस मुझे पिछियाए हुए है। मुझे बचाओ!"

नरेन्द्र०। (ताज्जुब से) खून करके भागे हो!

खड्ग०। हाँ, एक औरत के कारण मुझसे ऐसा काम हो गया, पर सचमुच बात तो यह है कि उसने मुझसे इतना गुस्सा दिलाया कि मैं पागल हो गया। अगर [मु]झे एक रोज का भी मौका मिले तो मैं अपने को बेकसूर साबित कर सकूंगा, लेकिन अगर अभी पकड़ गया तो फिर कुछ नहीं कर सकता और जरूर फांसी पा जाऊंगा। भाई नरेन्द्र, अगर तुम्हें अपने खड्ग का कुछ भी ख्याल है और स्कूल के दिनों की जरा भी याद है तो एक दो दिन के लिए मुझे पुलिस के हाथ पड़ने से बचाओ!

स्कूली जमाने में यह खड्गसिंह नरेन्द्र का दिली दोस्त था और यद्यपि [स्कू]ल छोड़ने के बाद से आज तक उसने इसे कभी भी देखा न था फिर भी उसकी [बा]त बराबर बनी हुई थी। उसी खड्ग पर इतनी बड़ी मुसीबत आने का हाल [सु]न नरेन्द्र का दिल पिघल गया और उसने मुलायम स्वर में कहा, "बताओ तुम क्या चाहते हो? मैं सब तरह से तुम्हारी मदद करने को तैयार हूँ!"

खड्ग०। (कृतज्ञता से नरेन्द्र का हाथ दबा कर) बस मैं यही चाहता हूँ कि तुम मेरे कपड़े पहिन लो और मैं तुम्हारी वर्दी पहिन लूं। बर्दवान जाने [वा]ली गाड़ी तैयार खड़ी है। मैं उस पर चढ़ कर भागता हूँ। एक बार वहाँ पहुंच [ग]या तो फिर कोई मेरा कुछ बिगाड़ न सकेगा, मगर इस अपनी पोशाक में [मु]झे तो जरूर फंस जाऊंगा!

नरेन्द्र०। बस इतनी ही बात है? तो लो मैं अपनी वर्दी अभी उतारे देता [हूं] तुम इसे पहिन लो।

नरेन्द्र ने अपनी फौजी वर्दी उतार दी और खड्ग ने अपने कपड़े उतार

उसे पहिन लिया। नरेन्द्र ने देखा कि सचमुच सिर्फ पोशाक बदल देने से यह हालत हो गई कि कोई यकायक देख कर अब खड़ग को पहिचान नहीं सकता था।

खड़ग ने सब तरह से लैस हो नरेन्द्र की तलवार और पिस्तौल तथा बाद में कारतूसों की पेटी भी चढ़ा ली और तब आँखों में आँसू भर कर कहा, "भाई नरेन्द्र, आज तुमने मेरी जान बचा ली! इस अहसान को मैं कभी चुका न सकूँगा। अब तुमसे बस इतनी ही प्रार्थना है कि आज शाम तक चुप रहना और किसी से कुछ न कहना। अगर पुलिस तुम्हें पकड़ भी ले तो शाम के बाद उसको सच्चा हाल कहना, इसके पहिले कुछ न बताना न अपने किसी रिश्तेदार या दोस्त से मिलना और न किसी से यही कहना कि आज ही यहाँ पहुंचे हो। तुम्हारी बहिन भाई या बाप माँ भी अगर मिलें तो जरा भी मत जाहिर करना कि तुम उनको जानते हो। उनका सामना हो जाय तो बिल्कुल अजनबी बने रहना। बस सिर्फ शाम तक, इसके बाद जो तुम्हारे जी में आवे सो कहना और करना। अच्छा अब मैं चला, भगवान तुम्हारा भला करें बड़े मौके पर तुमने मदद की! अब मेरी जान जरूर बच जायगी!!"

इतना कह और नरेन्द्र का हाथ प्रेम से दबा खड्गसिंह दूसरी तरफ का दरवाजा खोल इस कमरे के बाहर निकल गया। थोड़ी देर तक नरेन्द्र वहाँ बैठा तरह तरह की बातें सोचता रहा और तब उसे याद आया कि वह अपनी बहिन को ट्रेन में ही छोड़ आया है जहाँ वह सकेली घबरा रही होगी। जल्दी जल्दी उसने खड्ग के उतारे हुए कपड़े पहिने और बाहर की तरफ बढ़ा। दरवाजे के पास पहुंचते ही रुक गया। बाहर से कुछ शोर गुल की आवाज आई साथ ही कमरे का दरवाजा खुला और पुलिस के कई सिपाही अन्दर घुस आये। एक ने आगे बढ़ कर कहा, "यही है! यही वह खड्गसिंह है जो उस आदमी का खून करके भागा है! पकड़ो इसको!" पुलिस के सिपाहियों ने चारों तरफ से उसे घेर लिया और देखते देखते वह रस्सियों से जकड़ दिया गया।

बेचारा नरेन्द्र अपने दोस्त को बचाने आकर खुद आफत में पड़ गया। मगर दोस्त!! क्या खड्ग नरेन्द्र का दोस्त था? नहीं नहीं, वह दोस्त नहीं बल्कि दोस्ती के बाने में छिपा हुआ जानी दुश्मन, रुपये की थैली में छिपा हुआ काला नाग, तकिया में छिपी जहरीली छुरी या रोटी में छिपा हुआ हलाहल जहर था। राजा नानकचन्द के रुपयों ने खड्ग का ईमान खरीद लिया था और

इस समय वह भले बुरे और उचित अनुचित के विचार को ताक पर रख कर सुजानसिंह के कहे अनुसार चलना ही अपना मुख्य कर्तव्य समझे हुए था। उसने बेचारे सीधे साधे नरेन्द्र को बुरा धोखा दे आफत में फँसा दिया और बेचारी कामिनी को नानकचन्द के चंगुल में डाल दिया।

(२)

नरेन्द्र की पोशाक में खड्गसिंह को देख कामिनी ने दूर से उसे अपना भाई ही समझा और धोखे में पड़ कर मोटर पर चढ़ गई पर जब पहिचाना तो जान गई कि उसने कितना भारी धोखा खाया है। उसके मुँह से चीख की आवाज निकली पर सुजान और खड्ग ने मिल कर केवल उसका मुँह ही नहीं बन्द कर दिया बल्कि तुरन्त क्लोरोफार्म से उसे बेहोश भी कर दिया।

पाठक सोचते होंगे कि बेचारी कामिनी अब इन हरामजादों के पंजे में बुरी तरह फँस गई और उसको बचाना असम्भव है, मगर नहीं, ईश्वर ने उसके एक बड़े भारी मददगार को वहाँ भेज दिया था।

एक लम्बी और तेज जाने वाली रॉलिस मोटर न जाने कब से उस थाने के दरवाजे के सामने खड़ी थी जिस पर दो आदमी बैठे गौर से चारों तरफ देखते हुए धीरे धीरे आपस में कुछ बातें भी करते जाते थे। अचानक हाँकने वाले सीट (व्हील) के पास बैठे आदमी ने कुछ देख कर अपने साथी का ध्यान उस तरफ दिलाया। दोनों ने देखा कि एक औरत थाने के दरवाजे से निकल कर सामने खड़ी मोटर की तरफ बढ़ी और मोटर के अन्दर से किसी के हाथों ने उसे भीतर खींच लिया। दोनों ने एक दूसरे से चार आँखें कीं और एक के मुँह से निकला, "कामिनी देवी!!" दूसरे ने सिर हिला कर "हाँ" कहा और साथ ही हाँकने वाले ने इञ्जिन स्टार्ट करने वाला बटन दबाया। बड़ा इञ्जिन भारी शब्द से बोल उठा और मोटर झपट कर आगे बढ़ी।

आगे वाली मोटर इस समय तेजी से रास्ता तय करती हुई शहर के बाहर की तरफ भागी जा रही थी। यद्यपि वह मोटर बहुत बड़ी और शानदार थी मगर पिछली मोटर चाल में उससे कहीं तेज थी अस्तु बात की बात में उसके पास पहुंच गई और तब उससे कुछ पीछे हटी जाने लगी।

देखते देखते कलकत्ता शहर पीछे छूट गया और अब वह आगे वाली मोटर मुख्य सड़क को छोड़ कर एक ऐसी सड़क पर से जाने लगी जिस पर लोगों की आवाजाही बहुत ही कम थी और दोनों तरफ के पेड़ों की डालों ने आपस में

मिल कर संध्या के इस समय में कुछ अंधेरा सा भी कर रक्खा था। यकायक अगली मोटर धीमी हुई, उसके इञ्जिन में कोई खराबी पैदा हो गई थी। शॉफर ने कार रोकी और बाहर कूद कर इञ्जिन के पास जा उसका ढक्कना उठा जाँच करने लगा। उसका ध्यान उस पिछली मोटर की तरफ नहीं गया क्योंकि वह उससे कोई पचास कदम पीछे ही रुक गई थी और इस पर सवार दोनों आदमी नीचे उतर कर पेड़ों की आड़ लेते हुए धीरे धीरे उसी तरफ को बढ़े आ रहे थे।

इञ्जिन की जाँच कर ड्राइवर पीछे की तरफ आया और पहियों के पास पहुंच जमीन पर बैठ कुछ देखने लगा। यकायक दोनों तरफ से दो आदमी झपट कर उसके पास पहुंचे। एक ने उसका मुँह दबाया और दूसरे ने कोई कपड़ा उसके नाक पर रक्खा। कपड़े में कुछ ऐसी तेज दवा लगी हुई थी जिसके असर ने ड्राइवर के मुँह से एक बात भी निकलने न दी और वह बदहवास हो गया। पहिले आदमी ने फुर्ती से उसका कोट और टोपी उतार कर खुद पहिन ली और दूसरा बेहोश ड्राइवर तथा अपने साथी की पोशाक को उठा पीछे की तरफ भागा। देखते देखते वह अपनी मोटर पर पहुंच गया। ड्राइवर लापरवाही के साथ भीतर फेंक दिया गया और वह आदमी ह्वील पर जा बैठा।

यह नया आदमी मोटर के कल पुर्जों से बखूबी वाकिफ मालूम होता था, क्योंकि उसने शीघ्र ही ऐब पकड़ लिया और गलती दुरुस्त कर मोटर के अन्दर जा बैठा। मोटर पुनः चल पड़ी।

यह सब काम कुछ इस फुर्ती चालाकी और शान्ति से हुआ कि मोटर के अन्दर वालों को जरा भी पता न लगा कि उनका विश्वासी ड्राइवर पकड़ लिया गया और कोई दूसरा आदमी अब उसकी जगह आ बैठा है।

* * *

एक आलीशान मकान के पीछे वाले नजरबाग में राजा नानकचन्द बेचैनी के साथ इधर उधर टहल रहे हैं। उनकी निगाह बार बार फाटक की तरफ घूमती है और थोड़ी थोड़ी देर पर वे घड़ी निकाल कर देखते हैं। उनकी आकृति से साफ प्रकट हो रहा है कि वे बड़ी बेचैनी के साथ किसी के आने की राह देख रहे हैं।

अचानक फाटक पर से मोटर की आवाज आई। सुनते ही नानकचन्द चौंक कर उधर देखा और अपनी मोटर को आकर रुकते तथा सुजानसिंह को उस पर से उतरते देख आशा उत्कण्ठा और खुशी के साथ खुद भी इधर को लपके। उनको आते देख सुजानसिंह ने भी फुरती की और अपने साथी को

कुछ कह और कहीं बिदा कर वे भी राजा साहब की तरफ बढ़े। पास पहुंचते ही उन्होंने लम्बी सलाम की और कहा, "हुजूर के इकबाल से काम फतेह हो गया! कामिनी रानी आपकी खिदमत में हाजिर हैं!!"

खुशी के मारे राजा साहब की बाछें खिल गईं और चेहरा दमकने लगा। उन्हें ऐसा मालूम हुआ मानों आकाश का चाँद उनको मिल गया हो। उन्होंने तुरन्त अपनी उँगली से कीमती अंगूठी उतार सुजानसिंह के हाथ पर रख दी और बोले, "बेशक तुमने तारीफ का काम किया, अच्छा मोटर को भीतर बुलाओ।"

सुजान ने झुक कर सलाम किया और ड्राइवर को आवाज दी, "गोपी, मोटर भीतर लाओ।" मगर राजा साहब को इतनी ताब कहाँ कि तब तक ठहरें! वे खुद उस तरफ बढ़े और लपकते हुए फाटक के पास आ पहुंचे। मोटर की खिड़की में से कामिनी का पीला चेहरा दिख रहा था जो बेहोशी की हालत में भी घायल किये देता था। राजा साहब दोनों हाथ फैला कर उस तरफ बढ़े।

मगर यह क्या? यकायक ड्राइवर ने कड़क कर कहा, "बस खबरदार, आगे पैर मत बढ़ाना!" और तब एक चीठी उनकी तरफ फेंक मोटर भगा ले गया। राजा साहब अपने दोनों हाथ हवा में बढ़ाए ताकते ही खड़े रह गये।

सुजानसिंह ने आगे बढ़ कर वह चीठी उठाई। सिर्फ इतना लिखा हुआ था—

"होशियार, बदला लिये बिना न छोड़ूंगा!!"

नीचे लाल स्याही में दो पञ्जों का निशान बना हुआ था।

* * *

तेजी से मोटर भगा कर मोटर ड्राइवर देखते देखते दूर निकल गया मगर पन्द्रह बीस मिनट के बाद एक चौमुहानी पर पहुंच कर उसने मोटर रोक दी। काले कपड़ों से अपना तमाम बदन छिपाये एक नौजवान न जाने कब से उसी जगह कहीं छिपा खड़ा था जो मोटर देखते ही उसके पास आ गया और ड्राइवर से बोला, "क्या कर आए?" ड्राइवर ने जवाब दिया, "आइये, काम फतेह है!" सुनते ही काली पोशाक वाला खुश हो गया और दरवाजा खोल मोटर के अन्दर कूद पड़ा। मोटर पुनः आँधी की तरह भागी।

मैदान की ठंडी ठंडी हवा लगने से कामिनीदेवी को होश आने लगी। उनके बदन में कंपकंपी आई और साथ ही एक लम्बी साँस ले उन्होंने आँखें खोल दीं। एक खूबसूरत नौजवान उनके ऊपर झुका हुआ गीले रुमाल से उनका चेहरा तर कर रहा था। दोनों की चार आँखें हुईं कामिनी रानी चौंक गईं, फिर देखा, और तब हँसकर अपने हाथ उसकी तरफ बढ़ाये। नौजवान ने झुककर उन्हें दबा लिया।

———

[८]

सेर पर सवा सेर

(१)

आगरे के कोतवाल मिर्ज़ा रहमतबेग तथा दो तीन थानेदार और दारोगा कोतवाली की इमारत के सामने वाले रमने में कुरसियों पर बैठे हैं और तरह तरह की गपें लड़ रही हैं।

बातें करते करते यकायक कोतवाल साहब बोल उठे, "क्यों साहब इर्फ़ान अली, आपके पण्डित गोपालशंकर अभी आये या नहीं ?"

दारोगा इर्फ़ान अली०। जी हाँ वे तो कई दिन हुए लौट आये।

कोतवाल०। सुना इस दफ़ा वे मिसर गये थे ?

इर्फ़ान०। जी हाँ, वहाँ के पिरामिडों और पुरानी इमारतों पर की लिखावटों के बारे में कुछ जांच करने गये थे जिस पर वे एक किताब लिख रहे हैं, सात महीने बाद लौटे हैं।

कोत०। सुनता हूँ दुनिया में कोई ऐसी ज़ुबान नहीं जिसे वे न जानते हों।

इर्फ़ान०। जी हाँ लोग तो ऐसा ही कहते हैं। एक साहब तो यहाँ तक फ़रमाते थे कि बहुत सी मुर्दा ज़ुबानें भी वे अच्छी जानते हैं और मिसर की वह चिड़ियाओं की शकल वाली लिखावट जिसे आज तक कोई भी पढ़ नहीं सका वे बहुत कुछ समझ लेते हैं। बहुत से जर्मन और अमेरिकन अभी तक जिन लिखावटों को नहीं पढ़ सके उन्हें भी इन्होंने पढ़ डाला है। (रुक कर) हैं, यह कौन आ रहा है ? ओ हो, बाबू गनपतराम हैं ! आइये जनाब बाबू गनपतराम साहब, कहिये क्या हाल है ?

गनपत०। (साहब सलामत के बाद बैठते हुए) हाल सब अच्छा ही है मगर पहिले यह बताइये कि यह आप किसका ज़िक्र कर रहे थे ?

कोतवाल०। मुझसे सुनिये, दारोगा इर्फ़ान अली के एक पुराने दोस्त पंडित गोपालशंकर का अभी अभी ज़िक्र हो रहा था। ये पण्डित साहिब बड़े साइन्सदाँ हैं और तरह तरह की ज़ुबानें लिखने और पढ़ने में इन्हें कमाल हासिल है। लोग कहते हैं कि दुनिया की कोई लिखावट ऐसी नहीं जिसे ये पढ़ न सकें। मैं बहुत दिनों से इनसे मिलने की सवाहिश कर रहा था मगर ये हज़रत कभी दुनिया के एक सिरे पर रहते हैं तो कभी दूसरे सिरे पर। अभी भी ये मिसर की सैर कर महीनों बाद वापस लौटे हैं, मैं कितना चाहता हूँ कि इनका मेयाज हासिल करूँ मगर मौका ही नहीं मिलता।

गनपत०। बेशक ऐसे अनुभवी विद्वान का दर्शन सब को करना चाहिये, मगर (इर्फ़ानअली की तरफ़ देख कर) दारोगा साहब, आपके पण्डितजी जब तमाम दुनिया की लिखावट पढ़ सकते हैं तो क्या वे इस छोटे टुकड़े का मतलब मुझे बता सकेंगे ?

इतना कह गनपतराम ने कागज़ का एक टुकड़ा जेब से निकाल कर इर्फ़ानअली के सामने रख दिया। दारोगा साहब ने लम्प की रोशनी में उसे देखा। कागज़ पर बहुत से अंक अक्षर और शक्लें बनी हुई थीं, बहुत सी टेढ़ी सीधी और बेढ़ी लकीरें इधर उधर खिंची हुई थीं, तथा कितने ही तरह के अजीब अजीब ढंगों के निशान भी बने हुए थे। इर्फ़ानअली कुछ देर तक तो इस कागज़ को देखते रहे और तब बोले, "यह आप मेरे साथ कोई मज़ाक कर रहे हैं क्या ? यह कोई लिखावट तो नहीं है हाँ किसी चुलबुले लड़के की शैतानी चालबाज़ी हो सकती है !"

गनपत०। (मुस्कुरा कर) जी नहीं, यह किसी लड़के की शैतानी नहीं है बल्कि एक बहुत ही ज़रूरी भेद है जिसको जान लेने से आप लोगों का सब से बड़ा दुश्मन काबू में आ जायगा।

कई लोग ताज्जुब से बोल उठे, "सो कौन, सो कौन?" गनपतराम ने जवाब दिया, "वही आप लोगों का दोस्त 'लाल-पञ्जा' ! उसी की नोटबुक का यह एक पन्ना है जिसे मैंने ज्यों का त्यों नक़ल कर लिया है। अगर इसका ठीक ठीक मतलब हम लोग जान सकें तो फिर उस शैतान को पकड़ना कोई मुश्किल न होगा।"

'लाल-पञ्जा' यह नाम सुनते ही सब लोग सन्न हो गये। यह नाम अब शैतान की तरह मशहूर हो चुका था और छोटा बड़ा जो कोई भी इसे सुनता काँप

जाता था। इस समय वहाँ जितने लोग बैठे थे करीब करीब सभी को कभी न कभी इस भयानक नाम से वास्ता पड़ चुका था और सभी इससे घबराते थे, अस्तु यह जान कर कि इस लिखावट का उसी भयानक नाम से कोई सरोकार है थोड़ी देर के लिये वहाँ सन्नाटा हो गया। आखिर कोतवाल साहब ने उस सन्नाटे को यह कह कर तोड़ा, "यह कागज क्या लाल-पञ्जे की किसी नोट-बुक की नकल है ?"

गनपत०। जी हाँ।

कोत०। यह नोटबुक आप लोगों के हाथ क्योंकर लगी और अब किसके पास है।

गनपत०। 'हीरे के मोर' वाली वारदात का हाल तो आपको मालूम ही है जिसके जरिये लाल-पञ्जे ने खास केमिल साहब को शह दी और नेपाल सरकार का पचास लाख रुपया मार दिया ?

कोत०। हां हां, भला उसका हाल क्यों न मालूम होगा ? अभी उसी दिन की तो बात है। हम लोग दौड़ते दौड़ते हार गए पर खाक पता न लगा कि वह कीमती मोर कहाँ गायब कर दिया गया ! तो क्या आपने उसका कुछ सुराग पाया है ?

गनपत०। सिर्फ इतना ही कि एक पाकेट बुक को खोज निकाला है जो इस वारदात के मुकाम के पास ही गिरी हुई थी। भाग्य से ही वह मुझे दिख गई और मैंने उठा लिया मगर उसका कोई मतलब निकाल न सका क्योंकि पूरी किताब इसी तरह की लिखावटों से भरी हुई है जिनका कुछ सिर पाँव समझ में नहीं आता। उसी के एक पन्ने की यह ज्यों की त्यों नकल है, और इसको मैंने इस लिए उतार लिया है कि शायद कभी कुछ मतलब समझ में आ जाय पर अभी तक तो खाक पत्थर भी कुछ समझ में न आया।

कोत०। और वह नोटबुक अब कहाँ है ?

गनपत०। वह मैंने केमिल साहब को दे दी और अब उन्हीं के पास है। उन्हें उससे बहुत कुछ मदद मिलने की उम्मीद है और उनका खयाल है कि 'लाल-पञ्जे' के कई गुप्त स्थानों का पता उसमें लिखा है। उम्मीद है कल सुबह आपको उसकी खबर देंगे।

कोतवाल०। मैं खुद उनसे मिल कर इसके बारे में पूछूँगा। इस कम्बख्त 'लाल-पञ्जे' की बदौलत मुझे बार बार जिस तरह जक उठाना और अफसरों

की झिड़कियाँ खानी पड़ रही है वह मैं ही जानता हूँ। खुदा करे उस कम्बख्त का भंडा फूटे और वह शैतान पकड़ जाय। हम लोगों को तो उसके मारे रात को नींद आना हराम हो गया है !

गनपत०। बेशक, इसमें क्या शक है, और इसी लिए तो मैं भी इस फिक्र में लगा हुआ हूँ कि इस कागज का मतलब समझूँ। अगर हमारे दोस्त इर्फान अली मदद कर दें तो मुमकिन है कि वह काम हो जाय।

इर्फान०। मुझे आपसे ज्यादा फिक्र हो गई है। कल सुबह आप मेरे थाने पर आइये, मैं आपको लेकर पण्डितजी के पास चलूँगा। अगर यह शैतान की आँत की सी लिखावट कुछ भी मतलब रखती है तो मुझे उम्मीद है कि पंडितजी जरूर इसका मतलब लगा सकेंगे।

गनपत०। अच्छी बात है, मैं कल सुबह हाजिर होऊँगा, आप तैयार रहियेगा।

कोतवाल०। बल्कि आप लोग इधर ही से जाएँ, अगर हो सका तो मैं भी.....यह क्या टेलीफोन की घण्टी है ?

सब लोगों का ध्यान उधर ही चला गया। उसी समय एक सिपाही ने आकर कहा, "हुजूर को सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब टेलीफोन पर बुला रहे हैं।"

कोतवाल साहब यह कहते हुए उठे, "इस वक्त साहब को क्या काम याद आ गया !" और भीतर चले गये जहाँ टेलीफोन था। सब लोग उनके वापस लौटने की राह देखने लगे।

कोई दस मिनट के बाद कोतवाल साहब लौटे, मगर इस समय उनकी अजीब हालत थी, चेहरे पर बदहवासी छाई हुई थी, हवाइयाँ उड़ रही थीं, और माथे पर पसीना आया हुआ था। आते ही वह धम्म से कुरसी पर गिर गये।

लोगों ने ताज्जुब से पूछा, "क्या बात है ? क्या मामला है ?" बड़ी मुश्किल से रुकते रुकते कोतवाल साहब बोले, 'लाल-पञ्जा' केमिल साहब की लड़की को चुरा ले गया है और उनसे बोला है कि जब तक उसकी पाकेट-बुक वापस न की जायगी तब तक मिस रोज को वह वापस न देगा !!"

(२)

आगरा शहर के बाहरी हिस्से में बने हुए एक बहुत बड़े और खूबसूरत बाग में हम पाठकों को ले चलते हैं।

यह बाग आजकल के फैशनेबुल बागों की तरह का नहीं है, अर्थात् इसमें

मनुष्य ने प्रकृति को तोड़ मरोड़ कर भद्दा नहीं कर दिया है बल्कि उसकी सहायता कर उसके स्वाभाविक सौन्दर्य को और भी बढ़ाया है। यकायक इस जगह आने वाला यही समझेगा कि हम किसी घने जंगल में आ गये हैं। छोटे छोटे इधर से उधर निकल जाने वाले रास्ते पगडंडियाँ और नाले, फल और फूलों से लदे पेड़, सुहावनी बोली बोलने वाली चिड़ियों से भरी झाड़ियाँ, और घास से ढँकी जमीन यह शक पैदा करती है कि हिमालय की तराई का कोई हिस्सा है जिसे प्रकृति ने अपने हाथों से सँवारा है—पर नहीं, यह पंडित गोपालशंकर का वही बाग है जिसे बड़ी मेहनत से उन्होंने अपने विचार के अनुसार तैयार करवाया है और इसी के अन्दर उनके रहने का बंगला भी है। इस समय इस समूचे बाग की सैर करना कठिन है और उसकी कोई आवश्यकता भी दिखाई नहीं पड़ती मगर उस टीले की सैर हम अपने पाठकों को जरूर करावेंगे जो बाग के दक्खिन तरफ है और जिसके ऊपर नीचे और चारो तरफ पंडितजी ने तरह-तरह के जानवर पाल रक्खे हैं।

यह टीला जो बहुत बड़ा तो नहीं है मगर जिसे देखने से छोटी पहाड़ी का भ्रम होता है, एकदम बनावटी बना हुआ है। पंडितजी ने अपने इस पचासों बिघहे के बाग की सिंचाई के लिए कई बड़े ही आलीशान कूएँ और तालाब बनवाये हैं और उन सभों की मिट्टी इसी स्थान पर इकट्ठी कर तथा उसके ऊपर अनगढ़ पत्थरों और ढोकों को सजा कर यह छोटा पहाड़ तैयार कराया है। इसके चारो तरफ कितनी ही पगडंडियाँ दिखाई पड़ती हैं जो घूमती फिरती ऊपर तक चली गई हैं जहाँ चढ़ जाने वाले को चारो तरफ दूर दूर का दृश्य तो दिखाई देगा ही पर इसके सिवाय उसे कुछ और भी चीजें ऐसी नजर पड़ेंगी जिन्हें देख ताज्जुब नहीं कि उसके दिल की चाल में फर्क आ जाय। बात यह है कि इस टीले में जगह जगह बहुत सी मांदें बनी हुई हैं जिनके अन्दर और आस पास तरह तरह के खूंखार और दरिन्दे जानवर चलते फिरते और बैठे दिखाई पड़ते हैं। कहीं शेर, कहीं रीछ, कहीं भेड़िया, कहीं लँडुआ, और कहीं चीता देख कर यकायक दिल काँप जाता है और यह जानते हुए भी कि ये जानवर स्वतन्त्र नहीं और इनसे किसी तरह का नुकसान पहुंचने का डर बहुत ही कम है, मन एक दफे डर ही जाता है क्योंकि वे जंगले छड़ दीवारें या खाइयाँ जो इन भयानक जानवरों को कैद किए हुए हैं इस सफाई और खूबसूरती से छिपाई

गई हैं कि यकायक देखने से यही जान पड़ता है कि ये जानवर बिलकुल स्वतंत्र हैं।

सूर्योदय होने में कुछ ही देर बाकी है। ठंडी ठंडी हवा चल रही है और खुशबूदार फूलों की महक के साथ ही सुहावनी बोलियों को भी उड़ाती ला रही है जो खूबसूरत चिड़ियों के गले से निकल रही हैं। ऐसे समय में पंडित गोपालशंकर अपने बाग के एक सफाटे हिस्से में चक्कर लगा रहे हैं। उनका सिर जमीन की तरफ झुका हुआ है और किसी गम्भीर चिन्ता में ऐसा डूबे हुए हैं कि अपने चारो तरफ की कुछ भी होश उन्हें नहीं है।

इस जगह उनकी सूरत शक्ल के बारे में कुछ बयान कर देना बुरा न होगा। पंडित गोपालशंकर का कद लम्बा है और बदन छरहरा, मगर पैर की पिंडलियाँ और हाथ की कलाइयाँ उनकी मजबूती की गवाह देती हैं। दोनों पैर मामूली से कुछ अधिक लंबे हैं और एक साथ बहुत देर तक बैठे और झुके हुए पढ़ते लिखते रहने के कारण कंधे आगे की तरफ कुछ झुका हुआ सा जान पड़ता है। चेहरा लंबा, ठुड्डी चौड़ी और आगे की तरफ निकली हुई, होंठ पतले और लाल, नाक लंबी और माथे की एक दम सीध में है, तथा आँखें मोटी भौंहों के भीतर छिपी हुई मगर बड़ी चमकदार हैं। दोनों भौंहों के बीच में पड़ी दो बड़ी लकीरें उनकी विचारशीलता का परिचय दे रही हैं मगर आँखों के दोनों बगल पड़ी पतली लकीरें यह भी बता रही हैं कि खोजी और चिन्ताशील विद्वान होने पर भी यह आदमी हँसी और मजाक पसन्द करने वाला है, कोई मनहूस-सूरत नहीं।

संक्षेप में इनके बारे में यहाँ इतना ही कह हम आगे बढ़ते हैं, हाँ इतना अवश्य यहीं कह देना चाहते हैं कि गोपालशंकर अमीर आदमी हैं और अपने पुरखों की कई करोड़ की जायदाद के अकेले स्वामी होने पर भी इन्हें किसी तरह का कोई वैसा ऐब लगा हुआ नहीं है जिसमें अक्सर अमीर खानदान डूबे रहते हैं।

किसी गहरी चिन्ता में सिर झुकाये गोपालशंकर इधर से उधर टहल रहे हैं। उनके माथे की सिकुड़न और होठों का भाव बताता है कि ये किसी बड़ी ही गूढ़ गुत्थी में इतना उलझे हुए हैं कि इन्हें अपने चारो तरफ की कुछ भी होश नहीं है और ये इतना भी नहीं देख रहे हैं कि इनके एक दम पास ही में क्या हो रहा है।

टीले पर से काले चीते 'हब्शी' ने सुबह की ठंडी हवा खाकर आँखें खोलीं और एक मदमस्त औरत की तरह अंगड़ाई लेता हुआ अपने पंजों पर खड़ा हो

गया। सूर्य की पहली किरणें उसकी माँद के अन्धकार को भेदती हुई उसकी आँखों पर गिरीं और उसने मुँह फेर कर पुनः अंगड़ाई ली। धीरे धीरे एक एक कदम रखता और किसी नाजुक-बदन की तरह चलता हुआ वह माँद के बाहर आया और यहां उसकी तेज निगाहों ने तुरन्त ही एक नई बात देखी। उसकी माँद के चारो तरफ कुछ दूर पर जो जंगला लगा हुआ था और जिसके पास खड़े होकर उसने कई बार अपने नीचे के मैदान को देख कर फिर एक दफे स्वतंत्र होने की इच्छा की थी—उसकी शक्ल आज उसे कुछ बदली हुई सी दिखाई पड़ी। रात की आंधी में एक पेड़ की डाल टूट कर उसके ऊपर आ गिरी थी जिससे कई छड़ टेढ़े होकर झुक गये थे, डाल उन पर से होती हुई भीतर आकर जमीन पर टिक गई थी, और इस तरह बाहर निकलने के लिए एक पुल सा बना गया था। शायद 'हबशी' के खूंखार दिमाग में भी विचार करने की कुछ शक्ति मौजूद थी जिसने उसे बता दिया कि वह इस डाल पर से होकर सहज ही में जङ्गले के बाहर हो आ सकता है। बहुत दिनों की इच्छा के अचानक पूरा होने का अवसर आया देख 'हबशी' ने सोच विचार में समय नष्ट करना उचित न समझा। वह मस्त चाल से चलता हुआ उस डाल के पास पहुंचा और बड़ी होशियारी से सम्हाल कर कदम रखता हुआ डाल पर से होकर जंगले के ऊपर हो गया। डाल इस जगह खतम हो गई थी पर उसे इसकी अब कोई परवाह भी न थी। उसने अपने चारो तरफ एक निगाह डाली, दूर पर चरते हुए कुछ मवेशियों को देख एक बार अपनी जुबान बाहर कर मोटे होंठ चाटे, और तब एक हलकी छलांग मार वहाँ से कूद एक झाड़ी में पहुंच गया। भयानक और खूंखार काला चीता अब स्वतन्त्र था।

यकायक गोपालशंकर के मुँह से एक खुशी की आवाज निकली और उन्होंने बाएँ हाथ की खुली हथेली पर दाहिने हाथ से मुक्का मारते हुए कहा, "मार लिया! शैतान 'लाल-पञ्जे' का भेद अब छिपा न रह जायगा! मैंने....." मगर उनकी बात पूरी न हुई। पीछे से कुछ आहट के साथ साथ एक हलकी गुर्राहट की आवाज सुनाई पड़ी और दूसरी सायत में किसी मजबूत जानवर के हमले को न सम्भाल कर वे जमीन पर गिर पड़े। भयानक काला चीता 'हबशी' उनकी पीठ पर सवार हो गया और अपने दोनों पंजों से उसने उनके कन्धों को दबोच लिया।

(३)

नजदीक ही था कि हबशी के दांत गोपालशंकर की गरदन में घुस जाते; मगर उसकी इच्छा पूरी न हुई। यकायक पीछे से झपट कर आने वाले किसी आदमी ने अपनी मोटी छड़ी उसके मजबूत जबड़े के अन्दर दे दी और दोनों तरफ से पकड़ कर जोर से पीछे की तरफ खींचा। इस अचानक के उपद्रव ने हबशी को पछाड़ दिया, मगर तभी तुरन्त ही वह अपने शिकार को छोड़ अपने ऊपर आक्रमण करने वाले से बदला लेने को घूम पड़ा। मजबूत और फुर्तीले गोपालशंकर को मौका मिला। वे झपट कर चीते के नीचे से निकल गये और तुरन्त ही उनके हाथ में एक पिस्तौल दिखाई देने लगी।

हबशी के मजबूत जबड़ों में उस छड़ी के चिथड़े उड़ गये थे और वह भयानक रूप से उस आदमी पर टूटा था जिसने उसके काम में दस्तन्दाजी की थी, परन्तु गोपालशंकर की एक आवाज ने ही 'हबशी' को चीते से बिल्ली बना दिया। उन्होंने कड़क कर आवाज दी, "खबरदार हबशी! हट एक तरफ!!" हबशी ने मालिक को पहिचान लिया। उसने धोखे में अपने मालिक पर ही हमला किया था इसकी उसे बहुत शर्म भी मालूम हुई। और मौकों पर शायद वह न भी मानता पर इस समय उसे गोपालशंकर का हुक्म मानना ही पड़ा। उसने उस अजनबी पर हमला करने का इरादा छोड़ दिया और गोपालशंकर के पास आ अपनी लम्बी और मोटी खुरदरी जुबान से उनके पैर चाटने लगा। गोपालशंकर ने उसके सिर पर प्यार से हाथ फेर कर दो चार बार थपथपाया और तब अजनबी की तरफ मुखातिब हुए।

अजनबी एक खूबसूरत गोरा जवान था जिसकी हलकी अंगरेजी फैशन की दाढ़ी ने उसके चेहरे का निचला हिस्सा छिपाया हुआ था। गोपालशंकर ने अपना हाथ बढ़ाते हुए कहा, "क्या मैं उस मेहरबान का नाम जान सकता हूं जिसने इस समय ऐसे खूंखार जानवर से मुझे बचाया?" अजनबी ने गोपालशंकर से हाथ मिलाया और कहा, "मेरा नाम एम० ए० प्रमाणिक है—और मैं समझता हूं कि मैं प्रसिद्ध विद्वान और पर्यटक पंडित गोपालशंकर को अपने सामने देख रहा हूं!"

गोपाल०। जी हाँ, मैं गोपालशंकर ही हूं, और आप शायद वे ही मिस्टर प्रमाणिक हैं जिनका सम्पादित 'आगरा कूरियर' इस समय उत्तरी भारत का सर्वश्रेष्ठ दैनिक है?

प्रमानिक ने सिर झुका कर 'हाँ' कहा और इसी समय उनकी निगाह दो आदमियों पर पड़ी जो अपने हाथों में कपड़े के मजबूत रस्से लिए इसी तरफ आ रहे थे। ये रखवारे थे और इन्हें देखते ही तथा इनकी एक डपट सुनते ही हबशी का बचा खुचा जोश खरोश भी ठण्डा हो गया। इन्होंने रस्सों से हबशी का गला बाँध लिया और तब गोपालशंकर से कहा, "हुजूर, रात की आँधी में एक डाल टूट कर इसके बँगले पर गिर पड़ी जिससे यह निकल भागा, बारे कोई नुकसान न कर पाया!" गोपालशंकर ने सुन कर सिर हिला दिया और हाथ के इशारे से चीते को ले जाने को कहा। जब वे दोनों 'हबशी' को लेकर चले गये तो उन्होंने प्रमानिक का हाथ पकड़ते हुए कहा, "आशा है आप इस गरीब का घर पवित्र किये बिना न लौटेंगे और कुछ चाय पानी अवश्य करेंगे।" प्रमानिक बोले, "भला आप ऐसे विद्वान का साथ कौन पसन्द न करेगा!" और तब उनके साथ हो गये।

गोपालशंकर प्रमानिक को लेकर उस तरफ चले जिधर उनका बँगला था, रास्ते में दोनों में बातें भी होने लगी।

गोपाल०। भगवान ने आपको बड़े अवसर पर भेज दिया, नहीं तो आज 'हबशी' मेरा खून पी चुका था।

प्रमा०। मैं अचानक ही घूमता हुआ इधर निकल आया। आप के फाटक के सामने से जब जा रहा था तो मैंने एक काले जानवर को टीले पर से उतरते देखा और इस लिए ठिठक गया कि पहिचानूँ वह कौन जानवर है क्योंकि उसकी चाल आदमी सा पैदा करती थी। बात की बात ही में वह पास आ पहुंचा और इधर आप पर निगाह पड़ी, फिर क्योंकर रुक सकता था।

गोपाल०। मगर आपने भी बड़ी हिम्मत का काम किया। इस तरह निहत्थे एक चीते का मुकाबला करना कमजोर दिल वालों का काम नहीं है.....

प्रमानिक०। मगर मैं तो देखता हूं कि वह चीता दूसरों ही के लिये खूंखार था! आपकी एक ही डाँट ने उसे बिल्ली बना दिया और वे दोनों आदमी तो उसे इस तरह लिए जा रहे हैं जैसे कोई पालतू कुत्ता हो।

गोपाल०। (हँस कर) बात यह है कि हबशी को उसके बचपन ही से मैं पाला है। बहुत दिनों तक तो वह कुत्तों की तरह मेरे साथ खुला घूमा करता था पर धीरे धीरे उसकी प्रवृत्ति बदलती देख इधर कुछ ही दिनों से मैंने उसे बन्

करा दिया है परन्तु अब भी वह मुझे पहिचानता और मेरा हुक्म मानता है।

प्रमानिक०। कोई चीता तो हमारे देश में पाया नहीं जाता! आपको यह कहाँ मिल गया?

गोपाल०। मैंने इसे अफ्रिका में पाया था, इसके पाने का हाल भी बड़ा ही विचित्र है जो मैं कभी आपको सुनाऊँगा।

गोपालशंकर के सुन्दर और बड़े बँगले के सामने वाले घास के रमने पर कई छोटे बड़े टेबुल और कुरसियाँ रक्खी हुई थीं तथा एक तरफ चाय का सामान सजाया हुआ था। बात करते हुए दोनों आदमी वहीं पहुंचे और गोपालशंकर ने प्रमानिक की अच्छी तरह खातिरदारी की। दोनों ही प्रसिद्ध और दूरदर्शी विद्वान थे अस्तु बातचीत में दोनों इस तरह मग्न हो गये कि समय का कुछ ध्यान ही न रहा। जिस समय प्यादे ने आ कर कहा, "कोतवाल साहब और बाबू गनपतराम आये हैं" तो गोपालशंकर यकायक चौंके और कलाई घड़ी की तरफ देख कर बोले, "ओफ ओह, आठ बज गये! बातचीत में मुझे कुछ खयाल ही न रहा कि मैंने आठ बजे इन सज्जनों से मिलने का वादा किया हुआ है। आप जो जिक्र कर रहे थे मिस्टर प्रमानिक वह इतना दिलचस्प था कि मैं अपने आपको भूल गया! मालूम होता है आपने भी इस विषय पर बहुत कुछ विचार किया है?"

प्रमानिक०। जी हाँ, अपने फुरसत के दिनों में जब कि इस अखबार का तरफुद मैंने अपने सिर पर नहीं लिया था मुझे इस तरफ कुछ रुचि मालूम हुई थी और उन्हीं दिनों मैंने 'ईजिप्शियन ममीज' नामक यह एक किताब भी लिखी थी।

कह कर प्रमानिक ने जेब से एक छोटी किताब निकाल कर गोपालशंकर को दिखाई जिन्होंने जल्दी जल्दी उसके कई पन्ने उलट कर देखे और कहा, "ओहो, तब तो आपसे कई कामों में बहुत मदद मिलेगी! मैं नहीं जानता था कि मिश्र की पुरानी सभ्यता के एक ऐसे जानकार मेरे पास ही रहते हैं। मैं इस विषय में कई बातें आपसे इसी समय पूछना चाहता था, अगर आप दस मिनट की मोहलत दे सकें तो मैं उन लोगों को विदा कर अभी आता हूँ, कहीं कि आपका कोई हर्ज न हो।"

प्रमा०। नहीं नहीं, आप खुशी से जांय, मुझे आज इस समय कोई भी जरूरी काम नहीं।

गोपाल०। तो मैं अभी आता हूं, तब से आप का यदि मन चाहे तो मेरे ग्रीन-हाउस की सैर कीजिए। इस बार के सफर में मैं कई विचित्र पौधे लाया हूं जो शायद हिन्दुस्तान में आप को कहीं और दिखाई न देंगे।

कह कर गोपालशंकर ने बीचे के बने एक लम्बे चौड़े ग्रीन-हाउस की तरफ इशारा किया जो बंगले के पूर्वी हिस्से से सट कर शुरू होता हुआ दूर तक चला गया था। प्रमानिक बहुत खुशी के साथ उठ खड़े हुए और उन्हें उसके दरवाजे तक पहुँचा गोपालशंकर बंगले के अन्दर चले गये।

(४)

गोपालशंकर ने कोतवाल और रामपदराम को अपने मुलाकाती कमरे में दो कुरसियों पर बैठे आपस में कुछ बातें करते पाया। उन्होंने दोनों से हाथ मिलाया और तब एक कुरसी खींच कर पास ही बैठ गये।

कोतवाल साहब ने उनके बैठते ही पूछा, "कहिये जनाब, उस पुर्जे से कुछ मतलब निकला?"

"जी हाँ कुछ तो जरूर लगा है।" कह कर गोपालशंकर ने अपने थैले का बराज खोला और उसमें से कई कागज निकाले। गोपालशंकर ने उन्हें कोतवाल साहब के सामने रक्खा और उनमें से एक कागज उठा कर बोले "जो कुछ मैं इस कागज से पता लगा सका हूं उससे मालूम पड़ता है कि 'लाल-पञ्जे' ने कुछ दिन हुए बेगम खुरशेदबानू का पन्ने का कंठा चुराया था।"

कोतवाल०। जी हां और उनका खून भी किया था, मगर हम लोग अब तक न जान सके कि वह खून किस तरह हुआ और सब दरवाजे भीतर से बन्द रहने पर भी खूनी क्योंकर निकल गया!

गोपाल०। इस कागज से मालूम होता है कि बेगम साहब के मकान के बगल में कबूतर की कोई छतरी थी जिसका ऊँचा सिरा बेगम साहबा के ऊपर मंजिल वाली खिड़की तक पहुँचा था। उसी की मदद से लाल-पञ्जे ने ऊपर तक पहुँच कर रोशनदान की राह बंगले में घुस बेगम का कंठा चुराया और फिर उसी राह लौट भी गया।

इतना कह गोपालशंकर ने हाथ वाला कागज कोतवाल साहब के आगे रख दिया जिसे उन्होंने उठा कर देखा। इसमें एक तरफ तो तरह तरह के निशान अंक तथा अक्षर बने हुए थे जो लाल-पञ्जे की नोट-बुक में पाये

गये थे और दूसरी तरफ उनके सामने लिखने वाले वे अक्षर या शब्द लिखे हुए थे जिन्हें गोपालशंकर ने अपनी बुद्धिमानी और मेहनत से इन निशानों अंकों और अक्षरों के अर्थ के रूप में खोज कर निकाला था।

गोपालशंकर फिर बोले, "आप देखते हैं कि अन्तिम कुछ अक्षरों और चिन्हों के सामने कोई मजमून नहीं है। उनका ठीक मतलब मैं अभी तक नहीं समझ पाया हूं मगर मुझे शक होता है कि वे सब उस जगह का पता बताते हैं जहाँ बेगम का खजाना छिपाया गया है। शायद आप लोग कोशिश करें तो उस जगह का पता लगा सकें।"

इतना कह गोपालशंकर चुप हो गये और इस तरह इन दोनों आदमियों की तरफ देखने लगे मानों उनके सुपुर्द जो काम किया गया था उसे वे कर चुके और अब उन्हें इस मामले में कोई और दिलचस्पी नहीं रह गई है, मगर कोतवाल साहब उन्हें इतने सहज में छोड़ने वाले जीव न थे। वे कुछ देर तक उन कागजों को देखते रहे और तब गोपालशंकर से बोले, "सचमुच पण्डितजी, मैं आपकी जैसी तारीफ सुनता था आप वैसे ही बल्कि उससे भी बढ़ कर हैं, मगर मुझे उम्मीद है कि आप इतना ही करके रह न जायेंगे बल्कि हम लोगों की और मदद करेंगे और इस लाल-पञ्जे को पकड़ने में हमारा हाथ बटाएँगे।"

गोपालशंकर यह सुन बोले, "मुझसे जो कुछ हो सकेगा मैं हर वक्त करने को तैयार हूं।"

कोतवाल०। आपसे बहुत कुछ हो सकेगा। जिस तरह आपने इस कागज का मतलब निकाला है उसी तरह अगर आप उसकी नोट-बुक में छिपे हुए बाकी भेदों को भी रोशनी में ले आवें तो उस कम्बख्त को पकड़ लेना कोई मुश्किल न होगा।

गोपाल०। जो कुछ हो सकेगा मैं करूंगा पर एक तो मुझे इस तरह के कामों में कुछ भी दिलचस्पी नहीं मालूम होती जो वास्तव में आप लोगों अर्थात् पुलिस और जासूसों के काम हैं, दूसरे मैं जल्दी ही फिर एक लम्बे सफर पर जा रहा हूं जिसकी तैयारी से मुझे बहुत कम फुरसत मिल रही है इससे मुझे उम्मीद नहीं कि मैं आपकी कुछ ज्यादा मदद कर सकूंगा।

कोत०। आप जो कुछ भी कर सकेंगे उतना ही हम लोगों के लिये बहुत होगा। आप इधर बहुत दिनों बाद यहाँ लौटे हैं इसी वजह से आपको यह बिल्कुल खबर नहीं है कि इस शैतान लाल-पञ्जे ने हमें किस तरह तंग कर डाला है

और बार बार हम लोगों के हाथों से क्योंकर निकल जाया करता है। जब तक इसके कुछ छिपे भेद हमें मालूम न होंगे तब तक हम इसे कभी पकड़ न सकेंगे यह मुझे यकीन है, और यह तो अब जाहिर ही है कि यह काम सिर्फ आप ही उसकी नोट-बुक की मदद से कर सकते हैं और कोई नहीं।

गोपाल०। (कुछ सोच कर) अच्छा आप वह नोट-बुक मेरे पास लाइयेगा मैं कोशिश करूँगा।

कोतवाल०। (खुश होकर) बहुत अच्छा, बल्कि अगर आप तकलीफ करके एक दफा केमिल साहब से मिल लेते तो बड़ी मेहरबानी होती। मैंने आपका जिक्र उनसे किया था जिसे सुन कर उन्होंने आपसे मिलने का बहुत शौक जाहिर किया था।

गोपाल०। अच्छा किसी फुरसत के मौके पर मैं उनसे भी मिलूँगा।

कोत०। मैंने बिना आपकी इजाजत लिये ही इतनी जुर्रत कर डाली है कि आज शाम को पाँच बजे का वक्त इस मुलाकात के लिये उनसे कह दिया है। उम्मीद है कि उस वक्त आप किसी काम में मशगूल न होंगे और चल सकेंगे।

गोपाल०। खैर जब आप तय कर ही चुके हैं तो मैं चला चलूँगा।

कोत०। (खुशी से) ये गनपतराम साहब पौने पाँच में यहाँ आ जायेंगे और आपको खुद साहब के पास ले जायेंगे।

गोपाल०। बहुत खूब, मैं तैयार रहूँगा।

इतना कह गोपालशंकर इस प्रकार उठ खड़े हुए मानों बात चीत खतम हो गई है और अब वे ज्यादा समय नहीं दे सकते। कोतवाल साहब और गनपतराम भी खड़े हुए। गोपालशंकर ने दोनों से हाथ मिलाया और कमरे के दरवाजे तक पहुंचाया। इसके बाद इन दोनों को बिदा कर वे लौट ही रहे थे कि किसी तरह की आवाज सुन रुक गये। उन्होंने देखा कि कोई चमकती हुई चीज एक खिड़की की राह बाहर से आई और उसी टेबुल पर गड़ गई जिसके पास अभी कुछ ही देर पहिले ये तीनों आदमी बैठे हुए थे। गोपालशंकर चौंक गये और फुर्ती से उसके पास पहुंचे। देखा तो वह करीब एक बालिश्त लम्बी छुरी थी जिसकी नोक टेबुल में गड़ी हुई थी और दस्ते के साथ एक पुर्जा बँधा हुआ था। गोपालशंकर ने पुर्जा खोला। टेढ़े मेढ़े कुछ अक्षरों में यह लिखा हुआ था—"खबरदार, पुलिस की मदद कर अपनी जान के ग्राहक मत बनो!" और नीचे 'लाल-पञ्जे' का निशान बना था।

कुछ देर तक गोपालशंकर इस कागज को गौर से देखते रहे। इस बीच उनके चेहरे पर कई बार मुस्कुराहट की निशानी आया और अन्त में गम्भीरता का भाव आ गया। उन्होंने एक बार लापरवाही के साथ गर्दन हिलाई और तब छुरी को टेबुल के दराज में बन्द कर तथा कागज को जेब के हवाले कर वे कमरे के बाहर निकल कर बाग में आ गये जहाँ मिस्टर प्रमानिक इधर उधर टहलते हुए कुछ बेचैनी के साथ उनकी राह देख रहे थे।

(५)

संध्या के समय आगरे के पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट मिस्टर केमिल अपने बंगले के नजरबाग में सुस्त और उदास अकेले टहल रहे हैं।

आज तीन दिन से उनकी प्यारी लड़की रोज गायब है। आगरे की तमाम पुलिस और प्रबेश की पूरी जासूसी ताकत भी उसका पता नहीं लगा पाई है। न जाने वह कहाँ चली गई या किसके फेर में पड़ गई है कि लाख सिर मारने पर भी कुछ पता नहीं लग रहा है। सर्वसाधारण तो यद्यपि उसके गायब होने के विषय में इससे अधिक और कुछ नहीं जानते कि वह घर से केमिल साहब के किसी दोस्त के यहाँ नाच में शामिल होने के लिए निकली पर रास्ते ही से नहीं गायब हो गई—मगर मिस्टर केमिल और कुछ चुने चुने लोग बखूबी जानते हैं कि यह काम लाल-पञ्जे का है और नोट-बुक वापस पाने की नीयत से उसी ने मिस रोज को कहीं छिपा दिया है।

टहलते टहलते केमिल साहब बाग के पिछले हिस्से की तरफ जा निकले जहाँ के बनावटी पहाड़ के पास जरा रुक कर एक लम्बी साँस ले दर्द भरे गले से उन्होंने कहा, "अफसोस, अब तो सिवाय इसके कोई तदबीर नहीं सूझती कि नोट बुक लाल-पञ्जे को वापस करूँ और रोज को पाऊँ। न जाने वह बेचारी इस कम्बख्त की कैद में कितनी मुसीबत उठा रही होगी। अफसोस, उस नोट-बुक से कितनी मदद मिलने की उम्मीद थी, पर सब पर पानी फिर गया....."

यकायक पीछे से किसी ने कहा, "नहीं मिस्टर केमिल, आप इस तरह नाउम्मीद न हों।" केमिल साहब ने चौंक कर पीछे की तरफ देखा और एक विचित्र सूरत शक्ल के आदमी को खड़ा पा चमक गए। सरसरी निगाह से देखने में यह आदमी कोई फकीर या साधु मालूम होता था क्योंकि उसकी लम्बी दाढ़ी, जिसमें बहुत से सुफेद बाल भी दिखाई पड़ रहे थे, और लांबा

बेहद्दा चोगा यही कहता था, पर उसकी तेज और चमकदार आँखें कुछ दूसरी ही कहानी कह रही थीं। केमिल साहब ताज्जुब और गौर के साथ इस आदमी की तरफ देखने लगे जिसे आज के पहिले उन्होंने कभी देखा न था। उनकी यह हालत देख उस आदमी ने इनके पास आ एक कार्ड इनके हाथ पर रख दिया और केमिल साहब ने पढ़ा—"पण्डित गोपालशंकर।" पढ़ते ही वे खुश हो गये और अपना हाथ उनकी तरफ बढ़ाते हुए बोले, "आइये आइये पण्डितजी, मिर्जा रहमतबेग के मुँह से आपका जिक्र सुन कर मैं बहुत बेचैनी के साथ आपके आने की राह देख रहा हूँ।"

गोपालशंकर ने हाथ मिलाते हुए कहा, "जी हाँ, मैंने पाँच बजे आपसे मिलने का वादा किया था मगर वक्त से आधा घण्टा पहले ही और इस विचित्र शक्ल में आना पड़ा जिसका सबब यह चीठी है।"

कह कर उन्होंने एक कागज केमिल साहब की तरफ बढ़ाया जिसे उन्होंने ले लिया और उस पर यह लिखा हुआ पाया—"खबरदार, पुलिस की मदद कर अपनी जान के ग्राहक मत बनो!!" इसके नीचे लाल-पञ्जे का निशान देखते ही वे सब मामला समझ गये और कागज लौटाते हुए बोले, "मगर यह चीठी पा कर भी आपका आ जाना मुझे उम्मीद दिलाता है कि आपसे मुझे कुछ मदद मिलेगी, और मैं समझता हूँ कि शायद इसीलिए आपने अपनी असली सूरत छिपाई हुई भी है।"

गोपाल०। जी हाँ, मामूली शक्ल में और ठीक वक्त पर आपसे मिलने आने पर मुमकिन था कि मुझे लाल-पञ्जे का निशाना बन जाना पड़ता इसी से मैंने इस तरह आना पसन्द किया।

इतना कह गोपालशंकर ने अपने सिर का बालों वाला कंटोप हटाया और मूँछ और दाढ़ी के बाल एक सायत के लिए हटा कर अपनी असली सूरत केमिल साहब को दिखाई मगर इसके बाद तुरन्त ही पुनः पहिली सी कर ली। केमिल साहब ने जो उनके चेहरे की सिर्फ एक ही झलक देख पाये थे कहा, "मैंने आपकी बहुत तारीफ सुनी थी मगर यह पता न था कि आप सूरत बदलने में भी आलियों के कान काटते हैं!"

गोपाल०। (हँस कर) मिसर की अजायबातों की खोज करने में मुझे तरह तरह के रूपक बदलने पड़े हैं और कई बार तो औरत बन कर भी

राओं के महलों में हफ्तों तक रहना पड़ा है, क्योंकि वहाँ वाले अपने पुराने भेदों को कुछ इस तरह छिपाये रहते हैं कि किसी परदेशी को देख कर ही चौकन्ने हो जाते हैं और कछुए की तरह गरदन भीतर सिकोड़ लेते हैं। उनसे तो उन्हीं का देशवासी बन कर ही काम निकाला जा सकता है, और इसी से मैं तरह तरह की सूरतें बदलना जानने पर मजबूर हुआ हूँ। मगर खैर अब मैं अपने मतलब पर आना चाहता हूँ क्योंकि अगर मैंने यहाँ देर लगाई तो शायद लाल-पञ्जा होशियार हो जाय और तब लेने के देने पड़ जायँगे।

केमिल०। बेशक आपको जल्दी ही यहाँ से लौट जाना चाहिये। आपने उसकी नोट-बुक के एक पेज का मतलब जिस सफाई से लगाया उससे मुझे उम्मीद होती है कि और इशारतों का भी मतलब लगा सकेंगे।

गोपाल०। जी हाँ, मुझे भी यही उम्मीद है और इसीलिए यहाँ आया भी हूँ। अगर आप वह नोट-बुक मुझे दे दें और साथ ही दो दिन की मोहलत भी दें तो शायद मैं थोड़ा बहुत कुछ कर सकूँ।

केमिल०। मैं बड़ी खुशी से उसे देने को तैयार हूँ।

गोपाल०। वह शायद आपके बँगले में होगी मगर मुझे वहाँ जाना पसन्द नहीं है, कदाचित लाल-पञ्जे का कोई भेदिया देख ले तो ठीक न होगा, और इसी खयाल से मैं आपसे इस जगह मिला भी हूँ।

केमिल०। ठीक है, आप यहीं, ठहरें, मैं अभी उसे ला कर आपको देता हूँ।

केमिल साहब फुर्ती से उस जगह से हटे और अपने बँगले की तरफ बढ़ गये तथा गोपालशंकर उसी जगह पेड़ों के एक झुरमुट की आड़ में टहलने लगे। कुछ ही मिनटों में लाल-पञ्जे की नोट-बुक लिए हुए केमिल साहब वापस लौटे और उसे गोपालशंकर के हाथ में देकर बोले, "मैं ईश्वर से मनाता हूँ कि वह आपको इस नोट-बुक का भेद खोलने की ताकत दे क्योंकि मेरी बेचारी भोली लड़की उस कम्बख्त लाल-पञ्जे के फेर में पड़ी है और शायद तब तक वापस न आ सकेगी जब तक या तो वह दुष्ट पकड़ा नहीं जाता या यह नोट-बुक ही उसे वापस नहीं मिलती।"

गोपालशंकर ने उलट पुलट कर सरसरी निगाह से नोट-बुक को देखा और उनके चेहरे पर खुशी की एक निशानी दौड़ गई जिसे दबा कर वे बोले, "अगर मेरी मेहनत कुछ कर सकती है तो मैं कोशिश करने से न चूकूँगा

और मुझे उम्मीद है कि मिस रोज को आप जल्द ही देखेंगे। अच्छा अब मैं इजाजत चाहता हूँ—"

गोपालशंकर ने केमिल साहब से हाथ मिलाया और तब नोट-बुक को कपड़ों में छिपा और अपने चेहरे को अच्छी तरह ढाँक वहाँ से विदा हो गए। तेजी से चलते हुए वे जिस समय फाटक पर पहुँचे उस समय एक मोटर कम्पौण्ड के अन्दर आ रही थी। कोई अफसर होंगे शायद यह सोचकर, अथवा न जाने किस विचार से, गोपालशंकर ने एक फर्शी सलाम मोटर सवारों को बजाई और फुर्ती से बाहर निकल गये।

सड़क से कुछ हटकर बाईं तरफ एक छोटा टीला पड़ता था। तेजी से चलते गोपालशंकर उसके पीछे पहुंचे जहाँ मोटर साइकिल पकड़े एक आदमी खड़ा था। उनको देखते ही वह आगे बढ़ा और सलाम कर बोला, "कहिये काम बना ?" गोपालशंकर ने खुशी खुशी कहा, "हाँ" और साइकिल पर चढ़ गये, पैर के धक्के से इञ्जिन स्टार्ट किया और तब जेब से एक चीठी निकाल उस आदमी के हाथ में दे कर बोले, "इसे अभी पहुंचा दो।" वह आदमी "जो हुक्म" कह पीछे मुड़ा और धूएँ का गुब्बार उड़ाती हुई मोटर साइकिल आगे निकल गई।

* * *

केमिल साहब के कान में मोटर कार की आवाज गई, वे उसकी तरफ बढ़े। बंगले के पास पहुँच कर मोटर रुकी और उस पर से जासूस गनपतराम और कोतवाल रहमत बेग उतरे। सब के पीछे लांबे कद का एक आदमी नीचे उतरा।

कोतवाल साहब और गनपतराम ने केमिल साहब को सलाम किया और तब पीछे की तरफ घूम उस लांबे कद के आदमी की तरफ बता कर कहा, "यही वे पण्डित गोपालशंकर हैं जिन्होंने लाल-पञ्जे की लिखावट का मतलब निकाला है।"

इतना सुनते ही केमिल साहब के मुँह से चीख की आवाज निकल गई और उनके पैर इस तरह लड़खड़ाने लगे मानों वे बेहोश हो कर गिरा चाहते हैं। काँपते हुए स्वर में उनके मुँह से निकला—"क्या वे पण्डित गोपालशंकर हैं !! तब वह कौन था जिसे मैंने नोट-बुक दे दी ?"

चपरासी ने आकर इसी समय एक लिफाफा उनके हाथ में दिया।

हाथों से उन्होंने उसे लिया और खोल कर पढ़ा। यह लिखा हुआ था :—

"आपकी, आपके पुलिस की, और आपके जासूसों की कारीगरी मैंने देख ली ! क्या कहूँ, मुझे बेचारी रोज की हालत पर तरस आता है—इसीसे आपको और तंग न कर सिर्फ नोट-बुक लेकर ही सूखा छोड़ देता हूँ। मिस रोज आधे घन्टे में सही सलामत आपके पास पहुंच जायेगी।"

इसके नीचे लाल-पञ्जे का वही मशहूर निशान था।

केमिल साहब के मुँह से एक दूसरी चीख निकली मगर इस बार ताज्जुब के साथ मिली कुछ खुशी उससे जाहिर हो रही थी। उन्होंने गोपालशंकर की तरफ देख कर कहा, "पण्डितजी, अफसोस है कि आपके आने के कुछ ही पहिले कम्बख्त लाल-पञ्जा आपकी सूरत बन कर आया और मुझको धोखा दे अपनी नोट-बुक ले गया !!"

गोपालशंकर ने कहा, "वह साधू जो हम लोगों को फाटक पर मिला था ! कहीं वही तो....."

केमिल साहब बोले, "जी हाँ, जी हाँ, वही अपने को गोपालशंकर बता मुझसे नोट-बुक ले गया, कम्बख्त कहीं से आपका विजिटिंग कार्ड भी उड़ा लाया था जिससे और धोखा हो गया। इधर आइए तो मैं आपको सब हाल सुनाऊँ, मगर मुझे अफसोस यही है कि आपका आना बर्बाद गया !"

गोपालशंकर बोले, "फिर भी मेरे काम के लिए काफी मसाला मौजूद है। आप मेहरबानी करके सब हाल खुलासा कह जायें।"

केमिल साहब सभी को लिए हुए अपने बैठक के कमरे की तरफ बढ़े मगर उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि रोज के लौटने की उम्मीद पर खुश हों या लाल-पञ्जे की नोट-बुक के जाने का गम करें।

———

[६]

लाल-पञ्जा

(१)

आगरा शहर के बाहर की तरफ यहाँ के प्रसिद्ध रईस राजा नानकचन्द का 'मोती-बाग' और 'मोती-महल' है। बाग बहुत ही सुन्दर और बड़ा है तथा महल भी अपनी सजावट के लिए मशहूर है। महल के पीछे की तरफ एक बहुत बड़ी झील है जिसके बीचोबीच में बना संगमर्मर का छोटा मकान तालाब में कमल की सी शोभा देता है और खास कर चाँदनी रात में तो बड़ा ही सुन्दर मालूम होता है। झील पार कर इस बीच वाले मकान में जाने के लिए केवल दो तीन छोटी छोटी किश्तियाँ हैं जो घाट पर बंधी रहा करती हैं।

शाम का वक्त है। राजा नानकचन्द अपने इसी तालाब वाले मकान में मसनद पर लेटे हुए हैं। बगल में बड़ी फर्शी है जिसका नल उनके हाथ में है और वे रह रह कर धुएँ के गुब्बार छोड़ रहे हैं। उनके सामने एक खूबसूरत नाजनीन बैठी हुई अपनी मीठी मीठी बातों से राजा साहब की तबीयत खुश कर रही है। इन दोनों के सिवाय वहाँ और कोई भी नहीं है हाँ बाहर वाले बालाखाने में राजा साहब का वफादार नौकर राघू जरूर बैठा हुआ हुक्म का इन्तजार कर रहा है।

हुस्नपरस्त राजा नानकचन्द उस खूबसूरत के दामन में बेतरह उलझे हुए हैं जो 'मोतीजान' की शक्ल में उनके सामने बैठी हुई है। उसकी बातों में इस समय इतना डूबे हुए हैं कि दीन दुनिया को भूल गये हैं। किसी तरफ को कुछ होश उन्हें नहीं है। उनकी अधखुली आँखें एक टक मोतीजान ही की तरफ देख रही हैं जिसकी एक एक अदा पर वे पानी पानी हुए जा रहे हैं।

न जाने मोतीजान ने क्या बात कही कि नानकचन्द ने बेताब हो उसका हाथ पकड़ कर अपनी तरफ खींच लिया और उसकी गुस्ताखी की भरपूर सजा

उसे दे दी। बड़ी मुश्किल से उसने अपने को छुड़ाया और नखरे के साथ कुछ दूर हटती हुई बोली, "जाइये, आप मुझे तंग करते हैं, मैं आपके पास नहीं बैठूँगी!"

नानकचन्द ने फिर उसे पकड़ कर अपने पास खींच लिया और बगल में दबाते हुए कहा, "नहीं नहीं मैं तुम्हें तंग नहीं करता बल्कि प्यार करता हूँ! मैं सच कहता हूँ, मैंने अब तक बहुतों को देखा पर तुम्हारी आँखों ने मुझे जैसा घायल किया वैसा और किसी ने न किया। तुम तो मेरी आँखों की पुतली और शरीर की जान हो!!"

मोती०। (हाथ झटका कर) जाइये जाइये, फजूल की बातें न कीजिये!

नानक०। नहीं फजूल की बात नहीं, मैं बिल्कुल ठीक कह रहा हूँ।

मोती०। (साथ सट कर) ठीक कहते हैं? मेरी कसम?

नानक०। हाँ तुम्हारी कसम, बिल्कुल सच कहता हूँ?

मोती०। अच्छा अगर ऐसी बात है तो इसका कुछ सबूत दीजिये।

नानक०। जो कहो करने को तैयार हूँ, रुपया पैसा, जेवर जवाहिरात कपड़ा.....

मोती०। यह सब आपकी बदौलत मेरे पास काफी है, मैं यह सब कुछ नहीं चाहती।

नानक०। तब क्या चाहती हो?

मोती०। बस मैं एक बार उन्हीं लक्ष्मीजी का दर्शन किया चाहती हूँ।

नानक०। (चौंक कर) कौन लक्ष्मी?

मोती०। वही, आपके घराने की मशहूर सोने वाली लक्ष्मी, उल्लू पर सवार, जिनका उस दिन आपने जिक्र किया था!

नानक०। (गर्दन हिला कर) नहीं नहीं, उन्हें तुम नहीं देख सकतीं! घराने के मालिक के सिवाय और किसी को भी उन्हें देखने की इजाजत नहीं है।

मोती०। (मचल कर और नानकचन्द की छाती से चिपट कर) मगर मैं तो देखूँगी!

नानक०। कैसे देखोगी बावा? मैं तुम्हें सुना चुका हूँ कि सिवाय दीवाली वाले दिन के उस खजाने का दर्वाजा और किसी दिन नहीं खुलता और उस वक्त भी सिर्फ मैं ही उसके अन्दर जाता और लक्ष्मीजी की पूजा करके तुरन्त बाहर आ जाता हूँ। कोई गैर आदमी तो उसे देख ही नहीं सकता, इसके लिए

बड़ी कड़ी कसमें हम लोगों को पड़ी हुई हैं।

मोती०। (राजा साहब के गले में हाथ डाल कर) जो कुछ हो, मगर मैं तो देखूंगी !!

नानक०। लेकिन भई कैसे ? मेरे घर वाले सुनेंगे तो क्या कहेंगे ?

मोती०। जो चाहें कहें मगर मैं तो देखूंगी !

नानक०। अब यह तो तुम बेमतलब की जिद कर रही हो ! भला जो बात हो ही नहीं सकती उसे मैं कैसे कर सकता हूं !!

मोती०। (टेढ़ी निगाह से देख कर) मेरे लिए भी नहीं कर सकते !

नानक० (सिर हिला कर) नहीं, यह बिल्कुल असम्भव है। मैं तुम्हारे लिए जान दे सकता हूं मगर यह काम नहीं कर सकता। (उसका हाथ पकड़ कर और दबा कर) तुम इसके सिवाय और जो कुछ.....

मोती० (तिनक के और हाथ झटक दूर हट के) चलो हटो, जान देने वाले हजारों देखे, काम करने वाला एक न देखा ! एक छोटी सी बात मेरी न रखी गई तो और न जाने क्या करोगे ! जाओ जाओ, देख लिया तुमको !

कह कर मोतीजान ने दुपट्टे में मुंह छिपा लिया और उसकी बड़ी बड़ी आँखों से आंसू गिरने लगे। हमारे राजा साहब पर तो इन आंसुओं ने गजब का असर किया। झपट कर उसके पास पहुंचे और अपने रूमाल से आंसू पोंछे और पीठ पर हाथ फेरते हुए बोले, "रोओ नहीं रोओ नहीं, तुम्हारे आंसू मुझसे देखे नहीं जाते।"

मोती०। (डबडबाई आँखों से देख कर) तो वादा करो कि मुझे वह मूर्ति दिखलाओगे ?

नानक०। (लाचार होकर) अच्छा कोई मौका आवेगा तो दिखा दूंगा।

यह सुनते ही मोतीजान ने राजा साहब के गले में हाथ डाल दिया और उसकी आँखों के आंसू न जाने कहाँ काफूर हो गये। इसी समय नौकर ने आवाज लगाई और राजा साहब के "क्या है ?" पूछने पर कहा, "बाबू सुजानसिंह आये हैं।" राजा साहब बोले, "आने दो।"

मोतीजान कुछ सम्हल कर बैठ गई, राजा साहब भी तकिया के सहारे हो गये।

इन सुजानसिंह को तो पाठक बहुत अच्छी तरह जानते हैं। राजा नानक चन्द के ये खास मुसाहिबों में ही न थे बल्कि राजा साहब के कितने ही गुप्त

काम इन्हीं की मारफत हुआ करते थे।

सुजानसिंह का चेहरा खुशी से दमक रहा था जब उन्होंने उस कमरे में पैर रक्खा। आते ही उन्होंने एक लम्बी सलाम राजा साहब को अदा की और तब मुस्कुरा कर मोतीजान की तरफ देखा। मोतीजान ने भी मतलब से भरी एक तिरछी निगाह उनकी तरफ डाली और राजा साहब की नजर बचा कर कुछ गुप्त इशारा भी किया जिसका मतलब सुजानसिंह ने बखूबी समझ लिया। मगर उसी समय राजा साहब ने उनसे पूछा, "कहो, कब लौटे !"

सुजान ने हाथ जोड़ कर कहा, "बस हुजूर, सीधा कलकत्ते से चला आ रहा हूं।"

राजा०। तुम्हारे चेहरे पर खुशी की निशानी देख रहा हूं, मालूम होता है कोई अच्छी खबर लाये हो ?

सुजान०। हुजूर के एकबाल से हमेशा ही खुशी की खबरें सुनाने का आदी हो गया हूं, फिर भी इस समय मैं बहुत ही खुश हूं और आपको मुबारकबाद देने आया हूं।

राजा०। हाँ ! क्या कुछ काम हुआ ?

सुजान०। कुछ ? हुजूर पूरा पूरा हुआ ! अब हुजूर को कामिनीदेवी के मामले में कोई भी तरद्दुद करने की जरूरत नहीं रह गई।

राजा०। (खुश होकर) अच्छा ! वाह वाह, तब तो बेशक मुझे बेहद खुश होना पड़ा। मगर बताओ तो क्या क्या हुआ ? सेक्रेटरी साहब से मुलाकात हुई ?

सुजान०। जी हाँ, आपकी सौगात उनकी लेडी साहबा की नजर कर दी गई और उसने माकूल काम भी किया। उन्होंने आपकी सिफारिश लाट साहब से की और उनको बिल्कुल हुजूर के माफिक कर दिया। उनका प्राइवेट सेक्रेटरी खुद मुझसे मिल कर कह गया कि अब राजा साहब को कोई तरद्दुद करने की जरूरत नहीं, लाट साहब ने सब मामला अच्छी तरह समझ लिया है और उनको यकीन हो गया है कि कामिनीदेवी का दावा बिल्कुल झूठा है, नैपाल सरकार को इसमें दखल देने की कोई जरूरत नहीं, और न गवर्नमेन्ट इस मामले में किसी तरह की दस्तन्दाजी करना मुनासिब समझती है।

राजा०। (खुशी से उछल कर) वाह वाह, खूब खूब, यह बड़ा भारी मरहला मार लिया गया ! अब कामिनीरानी मेरा कुछ भी नहीं कर सकती।

बहुत करेंगी अदालत में मुकदमा ला सकती हैं मगर उनके पास कोई सबूत नहीं है और इस बारे में जो कुछ कागजात हैं वे मेरे.....हाँ ठीक याद आया, मिस्टर प्रमानिक से फिर मुलाकात हुई ?

सुजान०। जी हाँ, दो दफा। एक बार तो वे हुजूर से मिलने की नीयत से आये थे पर हुजूर इधर चले आये थे इससे मुझी से मिल कर चले गये। उस वक्त उन्होंने मुझसे कहा था कि 'मैं राजा साहब के मामले में पूरी कोशिश कर रहा हूँ और उम्मीद है कि बहुत जल्द लाट साहब से भी इस बारे में पूरी बातचीत कर सकूंगा' और दूसरी दफे सेक्रेटरी साहब के मकान पर मेरी उनकी बातचीत हुई थी। उस वक्त उन्होंने मुझसे कहा था कि 'लो मैं खुद लाट साहब से ही मिल आया। राजा साहब वाला मामला मैंने उन्हें अच्छी तरह समझा दिया और अब उस बारे में सरकार की तरफ से कोई भी कार्रवाई न की जायगी। राजा साहब को मेरी मुबारकबाद देना और कहना कि मैं बहुत जल्द आगरा वापस आकर उनसे मिलूंगा—अपना वादा याद रक्खें'। क्या हुजूर ने उनसे किसी तरह का वादा किया था ?

राजा०। (सिर लटका कर) हाँ मैंने उससे कहा था कि अगर वह कामिनी वाले मामले में मुझे जिता देगा तो मैं पचास हजार रुपया और चकला बाग तथा तालाब वाली कोठी उसे दे दूँगा। अफसोस, अगर मुझे मालूम होता कि यह मामला इस तरह सिर्फ मेरी अपनी ही कोशिश से तय हो जायगा तो इतना देने का वादा कभी न करता !

सुजान०। बेशक बेशक, और अब भी अगर उसे हुजूर कुछ न दें तो वह कर ही क्या सकता है ? अगरचे वह डींग बहुत कुछ मारता है मगर मैं समझता हूँ कि उसने किया कुछ भी न होगा, सिर्फ झूठ मूठ ही इनाम ले लिया चाहता है। उसे कुछ थोड़ा बहुत दे दिला कर टाल देना शायद मुश्किल न होगा।

राजा०। (सिर हिला कर) नहीं नहीं, वह कम्बख्त एक ही शैतान है और उसका अखबार भी गजब की ताकत रखता है। बना हुआ मामला भी वह सत्यानाश ही में बिगाड़ देगा ! और फिर वे कागजात भी तो अभी तक उसी के पास हैं जिन पर इस मामले का दारोमदार है और जिन्हें मैं खुद उसे दे आया था। वह बिना वादा पूरा कराये उन्हें लौटाने का नहीं—कम्बख्त एक ही लालची है।

सुजान०। (मुँह बना कर) तब तो फिर लाचारी है।

राजा०। तुम्हें कुछ मालूम है कि वह अभी यहाँ लौट आया या नहीं ?

सुजान०। जी इस बारे में तो मैं कुछ भी नहीं कह सकता। सेक्रेटरी साहब की बात सुनते ही मैं सीधा हुजूर को खुशखबरी देने दौड़ आया क्योंकि मुझे यकीन था कि आप इस बारे में परेशान होंगे।

राजा०। बेशक मुझे इस बारे में बड़ा तरद्दुद था क्योंकि रकम बहुत गहरी थी, मगर अब यह तरद्दुद जाता रहा। हाँ यह तो कहो कामिनी रानी का क्या हाल है ? उसका कुछ पता लगा ?

सुजान०। जी नहीं, कुछ भी नहीं। लाल-पञ्जा उसे छुड़ा कर जो चम्पत हुआ तब से कुछ भी खबर नहीं कि वह कहाँ गई या क्या हुई और मैंने भी लाल-पञ्जे के डर से उसके बारे में किसी तरह की जाँच पड़ताल या कोशिश न की।

राजा०। अच्छा ही किया। मैं खुद उस कम्बख्त से बड़ा ही डरता हूँ। खास कर जब से वह मेरा कण्ठा ले गया तब से तो मैं उससे पनाह ही माँगता रहता हूँ, मगर यह नहीं मालूम हुआ कि उसे कामिनी से क्या लगावट है जो उसको मेरे पंजे से छुड़ा ही नहीं ले गया बल्कि उस तरह की धमकी भी देता गया।

सुजान०। इसमें कुछ न कुछ फेर तो जरूर ही होगा, कहिये तो जाँच करूँ ?

राजा०। (काँप कर) नहीं नहीं, इस मामले को अब जाने ही दो। मैं नहीं चाहता कि उसकी टेढ़ी निगाह फिर से मुझ पर पड़े मगर अफसोस बेशक दिल में रह ही जायेगा, हाय कामिनी !

कह कर राजा साहब ने एक ठंडी साँस ली। सुजानसिंह ने उनके बगल ही में बैठी मोतीजान से चार आँखें की और तब बात बदलने की नीयत से कहा, "उसके भाई नरेन्द्र को पुलिस वालों ने छोड़ दिया क्योंकि किसी तरह का सबूत उसके खिलाफ मिला नहीं, और मैंने भी फिर कुछ कार्रवाई करना मुनासिब न समझा।

राजा०। अब वह कहाँ है ?

सुजान०। मैंने उसकी एक झलक कलकत्ते में देखी थी पर फिर कुछ पता न चला कि वह कहाँ गया या क्या कर रहा है।

राजा०। कहीं मेरे खिलाफ कुछ न कर रहा हो ?

सुजान०। किया करे, अब वह कर ही क्या सकता है ? जब लाट साहब आपके तरफदार हैं और पोलिटिकल सेक्रेटरी आपके नीचे दबे हैं तो कोई कुछ नहीं कर सकता।

कुछ देर तक सुजानसिंह वहाँ ठहर कर खुशामद की बातें करके राजा साहब का मन बहलाता रहा और तब यह कह कर विदा हुआ—"मैं स्टेशन से सीधा इधर ही आया हूँ और लम्बे सफर के सबब से बिल्कुल चूर चूर हो रहा हूँ, अब कुछ देर आराम करूँगा तो तबीयत ठिकाने होगी।" राजा साहब ने खुशी खुशी उसे जाने की इजाजत दी मगर धीरे से कुछ और भी कह दिया जिसे सुन उसने एक आलमारी से निकाल कर बोतल और प्याला उनके सामने रख दिया और तब एक टेढ़ी निगाह मोतीजान पर डालता हुआ बाहर चला गया। राजा नानक-चन्द ने एक हाथ से मोतीजान को अपनी तरफ खींचते हुए दूसरे हाथ से बोतल उठाई और इस तरह अभी अभी सुनी हुई खुशखबरी का पूरा आनन्द लेना आरम्भ किया।

(३)

रात के कोई दस बजे होंगे। अपने बंगले के ऊपरी मंजिल के एक कमरे में पंडित गोपालशंकर एक बड़े टेबुल के आगे खड़े कुछ कर रहे हैं।

उनके सामने एक तरफ फोटो के कई प्लेट पड़े हुए हैं और दूसरी तरफ उन पर से छपी हुई फोटो रक्खी हैं। ये फोटो किसी आदमी या जगह की नहीं बल्कि इनमें तरह तरह के अंक अक्षर तथा नक्शे बने हुए दिखाई पड़ रहे हैं और कई इस तरह की पेचीली और टेढ़ी मेढ़ी लकीरें दीख रही हैं मानों किसी खुलबुले लड़के ने स्याही में कलम डुबो कर यों ही खींच दी हो। गोपालशंकर के हाथ में इन्हीं में से एक फोटो है और वे एक आईग्लास की मदद से बड़े गौर से उसे देख रहे हैं और कभी कभी कागज पर कुछ नोट भी करते जा रहे हैं।

वे फोटो गिनती में पाँच थे। धीरे धीरे इसी तरह गोपालशंकर उनमें से हर एक को देख गये पर मालूम होता था कि इससे उनका कोई मतलब सिद्ध न हुआ और न उन्हें संतोष ही हुआ क्योंकि आखिरी फोटो हाथ से रख कर गौर में डूबे हुए वे एक कुरसी पर बैठ गये और मन ही मन सोचने लगे—

"इसमें तो कोई शक नहीं कि इन कागजों में कोई बड़ा ही गुप्त भेद भरा हुआ है। केमिल साहब ने बड़ा ही अच्छा किया जो इनका फोटो ले लिया। मगर मुश्किल यही है कि इनका कोई भी मतलब मालूम नहीं होता। दो घंटे से माथा पच्ची कर रहा हूँ पर यह गुत्थी किसी तरह सुलझती ही नहीं दीखती। न जाने 'लाल-पञ्जा' कितने बड़े दिमाग का आदमी है जिसने अपनी बातचीत

ऐसी गुप्त रीति से लिखी है कि मैं भी जिससे संसार की कोई भी भाषा छिपी नहीं है उसे समझ नहीं पाता और न जाने उस नोट-बुक में जिसे वह बहुत बुरा धोखा दे कर केमिल साहब से ले गया, इस तरह के और भी कितने भेद भरे होंगे? तारीफ तो मैं लाल-पञ्जे की अवश्य करूँगा जिसने आगरे की पुलिस के छक्के छुड़ा दिये और हिन्दुस्तान के बड़े बड़े जासूसों के दिमाग चक्कर में डाल दिये हैं। ऐसे दिमाग का आदमी जो न कर डाले थोड़ा है। न जाने उसने अपनी शक्ति और तरफ न लगा खून चोरी और डाके में क्यों लगा रक्खी है, मगर इसमें भी कोई भेद जरूर है क्योंकि वह कोई मामूली आदमी नहीं मालूम होता। लेकिन अब तो मुझे भी जिद्द हो गई है कि चाहे जैसे भी हो उस शैतान का भंडा फोड़ूँगा ही। अगर इन कागजों का मतलब मालूम हो जाता तो बड़ी मदद मिलती, मगर यह भेद किसी तरह खुलता नहीं दिखाई देता! वह पहिला कागज जो गनपत-राम लाये थे सहज ही में हल हो गया था लेकिन यह.....अच्छा कहीं.....हाँ ठीक तो है!.....नहीं, खैर, करके देख ही क्यों न लूँ.....।"

एक आलमारी खोल कर गोपालशंकर ने एक बड़ी सी खुर्दबीन निकाली और उसके लैम्प वगैरह ठीक करके उन प्लेटों में से एक उनके नीचे रक्खा। बिजली की तेज रोशनी उस प्लेट पर पड़ने लगी और वे भी बड़े ही गौर से यंत्र पर आँख लगा देखने लगे। उस प्लेट पर की एक एक लकीर कई हजार गुना बड़ी होकर उनकी आँखों के सामने आने लगी और वे बहुत ध्यान से प्लेट को इधर से उधर घुमाते हुए उन्हें देखने लगे।

यकायक गोपालशंकर के मुँह से खुशी की एक चीख निकल गई। उन्होंने जोर से टेबुल पर हाथ मारा और बोले, "ठीक है, बेशक यही बात है, अब इन कागजों का मतलब जानना कुछ मुश्किल न होगा!!"

टेबुल के दूसरे सिरे पर एक बड़ा सा बक्स रखा हुआ था जिसकी शकल कुछ कुछ सिनेमा की तस्वीर दिखाने वाले यन्त्र की तरह थी। गोपालशंकर ने उसके पास जाकर उसका तेज लम्प रौशन किया और फोटो के प्लेटों में से एक को उठा कर यन्त्र के बाहर की तरफ बने एक खाने में डाल दिया। लेन्स को कुछ आगे पीछे करने के साथ ही सामने की सुफेद दीवार पर बहुत बड़ी छाया पड़ने लगी और प्लेट पर के अक्षर लकीरें और निशान गज गज भर के होकर वहाँ साफ दिखाई पड़ने लगे। गोपालशंकर दीवार के पास चले गये और बड़े गौर से उसे

देखने लगे। थोड़ी देर के बाद लौटे और वह प्लेट हटा कर एक दूसरा प्लेट उसकी जगह रक्खा। इसकी छाया को भी उन्होंने बड़े गौर से देखा और तब इसी प्रकार उन्होंने बाकी के तीनों प्लेटों को भी देख डाला। कुछ देर तक एक कागज पर कुछ लिखते रहे और तब बड़े गौर से दो प्लेटों को चुन कर एक साथ यंत्र में लगाया। दोनों की सम्मिलित छाया जो दीवार पर पड़ी उसे देखते ही वे चौंक पड़े। मोटे मोटे अक्षरों की साफ लिखावट में उन्होंने एक मजमून वहाँ पर लिखा हुआ पाया।

मजमून के बाद फिर कुछ ऐसी लिखावट थी जो साफ साफ पढ़ी नहीं जाती थी मगर गोपालशंकर भी सहज में छोड़ने वाले जीवे न थे। वे कागज पेन्सिल ले दीवार के पास जा खड़े हुए और एक एक निशान पर गौर करने लगे। थोड़ी देर में उन्होंने उसका भी मतलब लगा ही लिया और तब खुशी खुशी अपनी कुर्सी पर आकर बैठ गये। उनके मुँह से कुछ अस्पष्ट शब्द निकलने लगे जो उनके दिल के भाव बताते थे—"कम्बख्त ने मजमून के हर अक्षर का कोई अंक नोट-बुक के एक तरफ के कागज पर लिखा था तो कोई दूसरी तरफ! तभी तो यह पढ़ा नहीं जाता था.....अब दोनों भागों को मिला कर पढ़ा तब समझ में आया.....मगर यह आखिरी बात तो उसने बड़ी भयानक लिखी है! अगर ऐसा हुआ तो...मगर मैं उसे रोकूँगा, चाहे जैसे हो उसका मतलब पूरा न होने दूँगा!.....वह सच्ची तारीख को वैसा करने वाला है.....मगर सच्ची तारीख तो आज ही है!.....तब क्या (घड़ी देख कर) ओफ! ग्यारह बजना ही चाहता है! अच्छा पहिले बाकी के प्लेटों को भी देख लूँ।"

बाकी के तीनों प्लेटों को भी बारी बारी से दो दो मिला कर गोपालशंकर ने उसी तरह देखा पर कोई अर्थ समझ में नहीं आया। वे मन ही मन बोले "इनमें कोई दूसरी कारीगरी की गयी मालूम होती है। खैर इन पर फिर गौर करूँगा। आज अगर वह दुर्घटना रोकनी है तो अभी ही कोई कार्रवाई करनी होगी, समय बहुत कम है!"

गोपालशंकर ने फिर उस लिखावट पर गौर किया जो दीवार पर ले ली थी और उस नक्शे को भी गौर से देखा जो उसके निचले हिस्से में बना हुआ था। इसके बाद सब चीजें अपने अपने ठिकाने रख वे कमरे के बाहर निकल आये। दरवाजे में ताला बन्द किया और बगल के एक दूसरे कमरे में चले गये। इस कमरे में तरह तरह की पोशाकें तथा बन्दूक तलवार पिस्तौल आदि हथियार

दीवारों पर लटके हुए थे। गोपालशंकर ने एक काला चोगा पहिना, सिर पर साफा बाँधा और दो पिस्तौलें भर कर जेब में रक्खीं, कुछ कारतूस जेब में डाले, एक आलमारी में से कुछ सामान निकाल कर उनकी गठरी बाँधी और तब एक काला नकाब चेहरे पर लगा कर बाहर निकले।

मकान भर में सन्नाटा था। केवल उनका वफादार नौकर मुरारी दर्वाजे के पास बैठा ऊँघ रहा था जो उनके निकलने की आहट पा उठ कर खड़ा हो गया। गोपालशंकर ने धीरे धीरे उससे कुछ बातें कीं और वह गठरी उसके हाथ में दे बाहर निकल गये। उसी समय पास के गिरजाघर की घड़ी ने ग्यारह बजाये।

(४)

शराब और उससे भी ज्यादा नशा पैदा करने वाली मोतीजान की मतवाली आँखों की सोहबत में दो तीन घंटे बिता चुकने के बाद राजा नानकचन्द की यह हालत हो गई थी कि बुद्धि और ज्ञान को लेकर उनकी विचार-शक्ति हवा में उड़ गई थी और उनके लिये संसार में अगर कोई चीज थी तो सिर्फ एक मोतीजान!

उनको इस हालत में देख मोतीजान ने फिर वही पुराना राग छेड़ा और उनके गले में हाथ डाल अपने बदन का बोझ उनकी छाती पर डालती हुई बोली—"प्यारे, मुझे अपना खजाना दिखाओ!"

नशे और इश्क में चूर नानकचन्द अब तक अपना पूरा होश-हवास गवाँ चुके थे। उन्होंने दो चार बार तो इन्कार किया मगर मोतीजान ने एक न मानी और अपने सब शस्त्रों को एक बारगी ही उन पर चला कर आखिर उनके कमजोर दिल को एक दम बेकाबू ही कर दिया जिसका नतीजा यह निकला कि कुछ देर बाद राजा नानकचन्द उठ खड़े हुए और मोतीजान के गले में हाथ डाल लड़खड़ाते पैरों से बँगले के बाहर निकले। रामू नौकर मौजूद था। सहारा देकर उसने उन्हें बग्घी पर चढ़ाया और खेकर झील के किनारे पहुँचाया। वहाँ से मोटर में सवार हो वे अपने पुश्तैनी मकान में पहुँचे जहाँ अपने खास कमरे में जाकर उन्होंने गले में सोने की जंजीर के सहारे लटकती हुई चाभी से लोहे की आलमारी खोल चाबियों का एक गुच्छा निकाला। ये उनके खजाने की चाबियाँ थीं और इनकी मदद से/कितने ही दरवाजे खोलते और बन्द करते हुए वे महल के सब से नीचे की मंजिल में पहुँचे जहाँ एक तहखाने के अन्दर उनका खजाना रहता था। इस तहखाने के दरवाजे के ऊपर मोटे हरफों में लिखा हुआ था :—

"सिवाय इस घराने के मालिक के और कोई अगर इसके अन्दर जायगा तो तीन दिन के अन्दर अपनी जान से हाथ धोयेगा। घराने के मालिक को भी सिवाय लक्ष्मी-पूजा वाले दिन के और किसी दिन इसमें जाने की इजाजत नहीं है।"

इसके लिए बड़ी बड़ी भयानक कसमें भी दी गई थीं पर इश्क के नशे में चूर नानकचन्द को किसी बात का ध्यान न रहा। उन्होंने ताला खोला और मोती-जान को अपने बगल में दबाये हुए अन्दर जाकर भीतर से फिर बन्द कर लिया।

किसी जगह से सामान निकाल कर नानकचन्द ने रोशनी की जिसकी मदद से मोतीजान ने देखा कि वह एक लम्बी चौड़ी कोठरी में है जिसके बीचोबीच में एक तहखाना दिखाई पड़ रहा था। मोतीजान को लिए पतली पतली तंग सीढ़ियों की राह नानकचन्द इस तहखाने में उतर गये। सीढ़ियां उतरने बाद लोहे का दरवाजा मिला जिसके खोलने पर एक सुरंग सी दिखाई पड़ी। इसमें कुछ दूर चलने पर पुनः दरवाजा मिला और उसे भी खोलने पर इन दोनों ने अपने को खजाने के अन्दर पाया।

एक लम्बा चौड़ा कमरा था जिसमें चारो तरफ थैलियों में रुपये और अशर्फियां गँजी हुई थीं। मोटे मोटे काठ के सन्दूकों में एक से एक कीमती हीरे मोती पन्ने आदि तथा दूसरे में जवाहिरातों की माला, भुजबन्द और जनाने तथा मर्दाने गहने भरे हुए थे। बहुत सी कीमती पोशाकें जिनमें जवाहिरात का काम था दीवारों और खूंटियों से लटक रही थीं और राजों और महाराजाओं के लिए भी मूल्य कितने ही सरपेंच कलगी और मुकुट एक शीशे की आलमारी में रक्खे हुए थे।

पर इन सभों से होती हुई जिस चीज के ऊपर मोतीजान की निगाहें जा रुकीं वह सोने की बनी बड़ी लक्ष्मीजी की मूर्ति थी जो सोने ही के एक उल्लू पर सवार थीं। उनके गले और बदन पर बड़े ही कीमती जेवर लटक रहे थे जिनकी चमक आँखों में चकाचौंध पैदा करती थी, और उल्लू की दोनों आँखों में दो कीमती पन्ने लगे हुए थे जिन पर रोशनी पड़ने से इतनी चमक निकलती थी मानों दो बिजली इधर से उधर दौड़ रही हो।

इस बेशुमार दौलत को देख कर कुछ देर तक तो मोतीजान की यह हालत हो गई कि सकते की सी हालत में होकर सिवाय इधर उधर देखने के वह और कुछ न कर सकी। अपने घराने की इस दौलत को देख कर थोड़ी देर के लिए राजा नानकचन्द की गर्दन भी घमण्ड से तन गई और नशे की झोंक में वह

बहुत देर के बाद मोतीजान ने मुंह खोला और नानकचन्द की तरफ देख कर पूछा, "यह सब दौलत आपके पुरखों की कमाई हुई है?"

नानकचन्द ने घमण्ड के साथ कहा, "हाँ और सब तो मेरे पुरखों का ही है और यह सोने की मूर्ति भी पुरानी है, मगर यह उल्लू और मूर्ति के बदन पर पड़े कुल जेवर मेरे कमाये हुए हैं और इन्हें मैंने लाकर यहाँ रक्खा है। यह उल्लू ठोस सोने का है और वजन में तीन मन है तथा मूर्ति पर के जवाहिरात दो करोड़ रुपये से कम के नहीं हैं।"

मोती०। (ताज्जुब से) दो करोड़ रुपये!!

नानक०। हाँ।

मोती०। और आप ही ने इन्हें कमाया!! क्या रोजगार से? या जमींदारी से?

नानक०। (हँस कर) जिस तरह समझो!

मोती०। फिर भी, मुझे जल्दी बताइये?

नानक०। अब यह सब पूछ कर तुम क्या करोगी?

मोती०। (नानकचन्द से लिपट कर) नहीं मैं सुनूंगी!

नानक०। अच्छा तो सुनो मगर खबरदार किसी से जिक्र न करना! बहुत दिनों की बात है कि नैपाल के राजघराने की एक शाख वहाँ से भाग कर इस शहर में आई। उसके साथ बहुत कुछ धन दौलत और जेवर जवाहिरात थे। ये जेवरात जो मूर्ति के बदन पर तुम देखती हो उन्हीं लोगों के थे। खैर, यहाँ रहने के कुछ बरस बाद उनके खजानची के भाई की नीयत खराब हो गई। एक दिन मौका पा कर उसने भाई की तालियों की मदद से अपने मालिकों के यहाँ चोरी की तथा एक डिब्बा जिसमें ये सब जेवर तथा और बहुत से अन्य जवाहिरात थे लेकर भाग निकला। बहुत जगह से घूमता फिरता वह मेरे पास पहुंचा और कुछ दिन के लिए यह सब चीजें अमानत के तौर पर रखने को कह कर मुझे भी इनमें से कुछ देने का उसने वादा किया। इतनी बड़ी दौलत देख पहिले तो मैं दहल गया और रखने से इनकार किया पर उसके बहुत गिड़गिड़ाने पर रखना मंजूर कर लिया और जेवरों का डिब्बा मेरे सुपुर्द कर तथा मुझसे कुछ रुपये लेकर वह कहीं चला गया। उसके जाने के कुछ ही दिन बाद उसका भाई यानी असली खजानची पता लगाता मेरे पास पहुंचा। उसकी बातचीत से मुझे मालूम हुआ कि

ये सब चीजें चोरी की थीं। पहिले तो मैंने उससे इनकार कर दिया मगर जब वह बहुत पीछे पड़ा और उसने पुलिस की धमकी दी तो मैंने उससे कहा कि तुम्हारा भाई ये गहने मेरे यहाँ चालीस लाख रुपये पर गिरवी रख गया है, इतना रुपया दे दो तो मैं इन्हें वापस कर सकता हूँ। उस कम्बख्त के पास इतना रुपया कहाँ था जो देता ? बहुत देर तक बकता झकता रहा और अन्त में जब कोसने और गाली गलौज देने पर उतारू हुआ तो मैंने उसे नौकरों से निकलवा दिया—बस तभी से ये जेवरात मेरे पास हैं।

मोतीजान ताज्जुब से यह किस्सा सुनती रही और अन्त में बोली, "तो क्या वह आदमी अर्थात उस खजानची का भाई जो इन्हें आपके पास रख गया था फिर वापस नहीं आया ?"

नानक०। नहीं, उसका फिर कुछ पता न लगा, न मालूम मर गया या क्या हुआ।

मोती०। और उस खजानची ने भी फिर कुछ न किया ?

नानक०। कुछ भी नहीं, मगर उड़ती हुई कुछ खबर उसकी मुझको लगी थी। मैंने सुना कि उसका मालिक बड़ा कट्टर आदमी था। उसे शक हो गया कि चोरी उसके खजानची ने ही की है अस्तु उसने उसके दोनों पञ्जे कटवा डाले और मकान से निकाल दिया। अपनी स्त्री और छोटे लड़के को लेकर वह अभागा बहुत दिनों तक इधर उधर मारा मारा फिरा और अन्त में शायद नैपाल जाकर मर गया—खैर वह सब जो कुछ भी हो, कम से कम मुझे उसने फिर कभी तंग न किया।

मोती०। और इन जेवरों के असली मालिकों ने भी आपसे कभी कुछ न कहा ?

नानक०। नहीं नहीं, कहा क्यों नहीं। बहुत कुछ बातचीत और सिर खपाई करते रहे मगर मैं हाथ में आई रकम क्यों देने लगा था भला !! हाकिमों को घूस ऊस दे कर मामला मैंने वहीं दबा दिया और कुछ दिन के बाद वह नेपाली खुद भी मर गया जिससे बात ही खतम हो गई। हाँ इधर उसकी नतिनी ने फिर सिर उठाया है और नैपाल सरकार से लिखा पढ़ी करके अपने जेवर वापस मांगे हैं.....

मोती०। वह नतिनी कौन ? वही कामिनी रानी तो नहीं जिसका जिक्र आप कर रहे थे ?

नानक०। (हँस कर) हाँ वही, अच्छा अब तुम्हें सब हाल मालूम हो गया

और लक्ष्मीजी के दर्शन भी तुमने कर लिए, अब चलो लौटो।

मोती०। बस मैं अभी चली, पर जरा इन गहनों को एक दफे अच्छी तरह देख लूँ।

इतना कह वह मूर्ति के पास जा पहुंची और हर एक गहने को बड़े गौर से ललचौंही निगाहों के साथ देखने लगी। उसके इश्क में अन्धे नानकचन्द भी मस्त आँखों से उसके रूप की छटा देखने में मग्न हो गये।

देखती और हर एक गहनों को रश्क के साथ छूती हुई अचानक मोतीजान ने बड़े बड़े मोतियों की एक माला मूर्ति के गले से निकाल ली और अपने गले में डाल ली। खुली हुई अँगिया पर से अपनी साड़ी का पल्ला उसने नखरे के साथ गिरा दिया और वक्षस्थल के उभार पर उस माला को नचाती और तिरछी निगाहों से नानकचन्द की तरफ देखती हुई वह बोली, "क्यों प्यारे, तुम्हारी लक्ष्मीजी से मैं किस बात में कम हूँ ?"

इश्क में अन्धे नानकचन्द ने बेतहाशा उसे लिपटा लिया और मुंह पास ले जाते हुए कहा, "किसी तरह नहीं !" मगर मोतीजान उनके हाथों से छटक कर निकल गई और मूर्ति के पास पहुंच उसने मोतियों की पाँच लड़ की एक कर-धनी निकाल कर और अपनी साड़ी को और भी नीचे खसका कर अपनी पतली कमर में पहिन लिया। इसके बाद नानकचन्द की तरफ घूम कर और अपनी कमर को एक लचका देकर उसने कहा, "क्यों प्यारे, तुम्हारी करधनी ज्यादे खूबसूरत है कि मेरी कमर !!"

मोतीजान की एक एक अदा पर राजा नानकचन्द लट्टू हो रहे थे। उनका दिल उनके काबू में न था। मोती की आधी विवस्त्रावस्था उन्हें और भी आपे से बाहर कर रही थी। उन्हें अपने तनोबदन की सुध न थी।

धीरे धीरे एक एक करके मोती ने मूर्ति पर के सब जेवर उतार कर अपने शरीर पर पहिन लिए और तब उन्हें चमकाती और अपनी मारू आँखों से राजा साहब को घायल करती हुई बोली, "प्यारे, अब तुम मुझे ही अपनी लक्ष्मी समझो और मेरी ही पूजा किया करो !"

राजा नानकचन्द अपनी सुध बुध खो कर दोनों हाथ फैला मोतीजान की तरफ लपके जिसकी चोली खुली हुई थी, बदन पर से साड़ी कभी की गिर चुकी थी और जो अब लगभग पूर्ण विवस्त्रावस्था में थी। उसके शरीर की लज्जा इस

समय सिर्फ उसके काले बाल ही मुख्य रूप से रख रहे थे, मगर यकायक राजा साहब रुक गये। उन्होंने देखा कि मोतीजान के चेहरे की हँसी अचानक ही गुम हो गई। ताज्जुब से उन्होंने उसके आँखों की सीध पर पीछे घूम कर देखा और स्वयं भी चौंक पड़े। दम के दम में तो उनकी वह हालत हो गई कि काटो तो लहू न निकले।

उन्होंने देखा कि पीछे की तरफ दीवार में एक काला छेद दिखाई पड़ रहा है जिसमें कोई शक्ल खड़ी है। शक्ल का तमाम बदन काले कपड़ों से ढका हुआ है सिर्फ दोनों पञ्जे खाली हैं मगर वे इस तरह पर लाल हैं मानों अभी अभी खून में डुबा कर निकाले गये हों। काले नकाब के अन्दर से दो डरावनी चमकदार आँखें उनकी तरफ देख रही हैं और वे दोनों लाल पञ्जे उनकी तरफ बढ़ रहे हैं। काँप कर राजा साहब एक बगल हट गये।

धीरे धीरे बढ़ते हुए वे भयानक पञ्जे मोतीजान के पास पहुंच गये। उन्होंने उसकी कलाई पकड़ ली और खींचते हुए पीछे को लौटने लगे। इसके साथ ही एक भयानक हँसी उस तहखाने में गूंज उठी, ऐसा मालूम हुआ मानों कोई भयानक दैत्य ठठा कर हँस पड़ा हो!

राजा नानकचन्द पहिले ही से बदहवास हो रहे थे। इस खौफनाक हँसी ने उनके बचे खुचे होश भी गायब कर दिये। उनके सिर में जोर से चक्कर आया और वे बेहोश हो कर उसी जगह गिर पड़े।

* *

कितनी ही देर के बाद जब नानकचन्द को होश आया तो वे उठ कर बैठ गये। सामने की दीवार में उस छेद का तो कहीं पता न था पर वहाँ एक खिड़की अवश्य नजर आ रही थी। वे भयानक लाल पञ्जे या वह काली शक्ल अब कहीं न थी, मोतीजान का भी कहीं पता न था, सिर्फ वह लालटेन बगल में पड़ी अभी तक जल रही थी।

इधर उधर देखने पर एक कागज का लपेटा हुआ टुकड़ा नजर आया। नानकचन्द ने उसे उठा लिया और काँपते हाथों से खोल कर पढ़ा। यह लिखा हुआ था :—

"नमकहराम!

"बेईमानी और खून करके तूने जो गहने छीने थे उन्हें मैं ले चला। जिसकी वे अमानत हैं उसे ही लौटा दिये जायेंगे।

"तेरी बदौलत जिसके दोनों पञ्जे काट डाले गये उसके मालिक की नतिनी का एक हितायती आज जाते जाते तुझसे कहता जाता है कि दो घन्टे बाद तेरे दोनों हाथ और दोनों पैर भी काट डाले जायेंगे और तेरा वह मकान जिसमें बैठ कर तूने यह फसाद बर्पा किया था जड़ बुनियाद से उड़ा दिया जायगा। अगर तुझमें कुछ कुदरत और हिम्मत है तो इस दो घंटे की मोहलत को काम में ला और अपने बचाव की फिक्र कर।"

इसके नीचे दो लाल पञ्जों का निशान बना हुआ था।

———

[१०]

दैव से टक्कर

(१)

रात आधी के लगभग जा चुकी है। चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ है। कहीं से एक पत्ते के भी खड़कने की आवाज नहीं आती।

आगरा शहर के एक बाग के अन्दर हम अपने पाठकों को ले चलते हैं। यद्यपि यह बाग बड़ा नहीं है मगर शहर के बीचोबीच में है और यहाँ बाग कर इस महल्ले में इतनी जगह भी मिल जाना बहुत बड़े खर्च या हिम्मत से ही मुमकिन है। फिर इस बाग में पेड़ पौधों का हिस्सा भी बहुत ही कम है, केवल हरी हरी दूब के रमने ही सब तरफ दिखाई देते हैं। कहीं कहीं ही कुछ पौधे खूबसूरती के खयाल से लगाये हुए हैं और उन्हीं के सबब से हम इसे बाग कह भी सकते हैं।

बाग के बीचोबीच एक आलीशान मगर पुराने जमाने की इमारत है। यद्यपि इसकी खुली खिड़कियों की राह कहीं कहीं से कुछ रोशनी आ रही है मगर रंग ढंग से यही मालूम होता है कि इस मकान के सभी बाशिन्दे रात की पहली नींद में मस्त हैं। सिर्फ अहाते के अन्दर घुसने वाले फाटक के बगल में बनी हुई गुमटियों में से एक में एक सिपाही बैठा ऊंघ रहा है। यह कभी कभी उठ कर चारों तरफ देख भी लेता है मगर तब फिर बैठ कर ऊंघने लगता है। उसकी दुनाली बन्दूक दीवार के कोने में खड़ी है और कमरपेटी के साथ लगी हुई तलवार पेटी सहित जमीन पर पड़ी हुई है।

अचानक इस गुमटी के बाहर की तरफ बने हुए एक मोखे में से किसी आदमी ने झांक कर गुमटी के भीतर देखा और पहरेदार की हालत पर गौर कर फिर अपना सिर हटा लिया। थोड़ी देर बाद उसी छेद की राह रबर की एक नली

नली गुमटी के अन्दर घुसती दिखाई पड़ी। इधर उधर घूमती फिरती वह नली उस लम्प के ऊपर पड़ी जो पत्थर की चौकी पर जल रहा था। किसी तरह का पीले रंग का धूआँ उस नली में से निकला जिसके लबर के साथ लगते ही वह लम्प एक बार भभक कर बुझ गया और गुमटी में अंधेरा हो गया।

लम्प बुझने की आहट पर पहरेदार की नींद उचट गई। उसने चारों तरफ देखा और अंधेरा पा नींद भरी आवाज में कहा, "कम्बख्त लम्प को भी इसी वक्त बुझना था!" वह अपनी जगह से उठा और किसी जगह से खोज कर उसने दियासलाई की एक डिब्बी निकाली, एक तीली बाली और लम्प की तरफ बढ़ा। इस समय वह नली कहीं दिखाई नहीं पड़ती थी जो लम्प के बुझने का कारण थी परन्तु पहरेदार अगर गौर करता तो यह जरूर देख सकता था कि एक प्रकार का पीला धूआँ उस गुमटी में हिलोरें ले रहा है।

बलती सलाई लिए पहरेदार लम्प की तरफ बढ़ा मगर उसी समय धूएँ की एक लपट सलाई में लगी और वह बुझ गई। अब उस पहरेदार का भी ध्यान इस धूएँ की तरफ गया और उसने धीरे से कहा, "यह धूआँ कैसा यहाँ भर गया है?" मगर बस इससे ज्यादा उसके मुँह से और कुछ न निकला। नाक की राह कुछ धूआँ उसके पेट में गया और फेफड़े में पहुंचा, साथ ही उसके सिर में जोर का चक्कर आया और वह अपना गला दबाता हुआ उसी जगह गिर कर बेहोश हो गया।

इसके कोई पाँच मिनट के बाद काले कपड़े से बिल्कुल ढंकी एक शक्ल फाटक के पास पहुंची। दम के दम में वह लोहे के उस ऊंचे फाटक पर चढ़ गई और उसे पार कर अहाते के अन्दर हो गई। उस काली शक्ल के हाथ में बिजली की टार्च थी। गुमटी के पास पहुँच उसने एक सायत के लिए उसे बाला और बेहोश पहरेदार की हालत देख तुरन्त बुझा दिया। अब वह एक जगह खड़ा हो आहट लेने लगा।

यकायक पास की किसी घड़ी ने ग्यारह बजाये। साथ ही बीच वाली इमारत की ऊपरी मंजिल की एक खुली खिड़की में हरी रोशनी दिखाई पड़ी जो तुरन्त ही गुल हो गई। काली शक्ल ने अपने हाथ की बत्ती का कोई खटका दबाया जिससे उसमें से लाल रोशनी पैदा होने लगी। इसे उसने उस खिड़की की तरफ किया और दो बार जल्दी जल्दी बाल कर बुझाया। जवाब में हरी रोशनी भी दो बार उस खिड़की में दिखाई पड़ी और तब फिर अंधेरा हो गया।

काली शक्ल घूम कर गुमटी की आड़ में हो गई और किसी के आने की राह देखने लगी।

थोड़ी ही देर बाद पैरों की आहट ने बताया कि कोई आदमी उस तरफ आ रहा है। यद्यपि अन्धकार बहुत ज्यादा था फिर भी अन्दाज से पता लगा कि वह एक औरत है। गुमटी के पास पहुंच इस औरत ने तीन बार चुटकी बजाई जिसे सुनते ही काली शक्ल आड़ से निकल कर सामने आ गई और धीरे से बोली, "गोमती, क्या हाल है?"

वह औरत (गोमती) बोली, "सब ठीक है। घर भर नींद में गाफिल है। कहीं कोई मिनक नहीं रहा है, पहरेदार का क्या हाल है?"

काली शक्ल०। वह बेहोश है, और कहीं कोई पहरेदार तो नहीं है?

औरत०। दो जगह और पहरा पड़ता है मगर दोनों ही जगहों के पहरेदार नींद में मस्त हैं।

काली शक्ल०। तब तुम मुझे सहज ही में वहाँ पहुंचा सकती हो?

औरत०। हाँ, मेरे पीछे आइये।

गोमती के पीछे पीछे वह काली शक्ल रवाना हुई और उस समय हमने देखा कि उसके हाथ में काले ही कपड़े में बंधी एक गठरी भी लटक रही है। दोनों चुपचाप मकान की तरफ चले और शीघ्र ही किसी गुप्त राह से उसके अन्दर हो गये।

(२)

आगरे के पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट मिस्टर केमिल भोजन करके अभी अभी उठे थे और सिगार पीने की नीयत से एक आराम-कुर्सी पर जा बैठे थे।

कीमती सिगार का ठण्डा धूआँ खींचते खींचते उनकी आँखें कुछ ही देर के लिए बन्द हुई थीं कि यकायक किसी चीज के गिरने की आवाज सुन पुनः खुल गईं। उन्होंने देखा कि सामने के छोटे टेबुल पर एक छुरी आकर धँसी हुई इस प्रकार काँप रही है कि उसकी बेंट जो हाथीदाँत की है जरा जरा हिल रही है। बेंट के साथ लाल रस्सी बँधी हुई थी जिसके एक सिरे पर एक टुकड़ा काग़ज और दूसरे सिरे पर एक छोटा गेंद बंधा हुआ इधर उधर हिल रहा था।

ताज्जुब के साथ आँखें मल मल कर कई बार केमिल साहब ने उस चीज की तरफ देखा और जब विश्वास हो गया कि उनकी आँखें उन्हें धोखा नहीं दे

रही हैं तो हाथ बढ़ा छुरी लकड़ी में से निकाल ली। पहिले तो कुछ देर तक उसको गौर से देखते रहे और लोहे को कई बार नाखून से ठोंका, इसके बाद "बहुत उम्दा लोहा है!" कह कर उसकी बेंट के साथ बँधे कागज को खोला। लाल स्याही से कुछ लिखा हुआ था जिसे उन्होंने गौर से पढ़ा। यह लिखा था:—

"केमिल साहब,

बन्दगी! यह मेरी आपकी आखिरी साहब सलामत है। आपको यह सुन शायद खुशी होगी कि आज से आपके शहर को हमेशा के लिए छोड़ रहा हूं। अपनी दोस्ती की याददाश्त के तौर पर मैं एक गेंद आपके पास भेजता हूं। उम्मीद है कि आप खूनी दोस्त की इस यादगार को हमेशा अपने पास रक्खेंगे।

"आखिरी सलाम के तौर पर और जिसमें आपका दिमाग कुछ दिनों तक बेकारी के चंगुल से बचा रहे—आपको खबर देता हूं कि आधे घण्टे के अन्दर आगरे के मुख्य रईस राजा नानकचन्द को मय उनके तमाम रिश्तेदारों के मैं जड़ मूल से नाश कर दूंगा। आपमें अगर कुछ कुदरत हो तो अपने दोस्त को बचाइये!!"

बस यही उस चीठी का मजमून था और इसके नीचे दो लाल-पञ्जों का खूनी निशान बना हुआ था।

चीठी पढ़ कर केमिल साहब की अजीब कैफियत हो गई। एक दम सकते की सी हालत में हो वे कभी उस चीठी को, कभी उस छुरी को, और कभी उस गेंद को देखने लगे, मगर बहुत जल्द ही उन्होंने अपने को सम्हाला और झपट कर कमरे की दीवाल के पास लटकते हुए टेलीफोन के पास पहुंचे, घोंगा उतारा और बोले—"नम्बर १८८७—राजा नानकचन्द।" कुछ देर तक खड़े रहे, मगर कोई भी आवाज न आई। उन्होंने एक्सचेंज को फिर घन्टी दी और राजा साहब के मकान से कनेक्शन करने को कहा मगर जवाब नदारद। घबड़ा कर सोचने लगे कि यह क्या मामला है, मगर उन्हें ज्यादा सिर खप्पन करने की जरूरत न पड़ी। ऊपर निगाह उठाते ही देखा कि टेलीफोन की तार किसी तेज औजार से काट दी गई है और इसलिए टेलीफोन द्वारा किसी से कुछ बात करना एक दम असम्भव है।

लाल-पञ्जे के लिए एक बुरा शब्द केमिल के मुँह से निकल गया। उन्होंने घोंगा पटक दिया और टेबुल के पास आ उस पर रक्खी नौकरों को

बुलाने वाली घण्टी को ज़ोर से बजाया।

उम्मीद थी कि घण्टी की आवाज़ के साथ ही उनका बेयरा भीतर आवेगा मगर किसी को न आते देख केमिल साहब ने पुनः घण्टी बजाई। फिर भी कोई नतीजा न निकला और गुस्से में भरे हुए केमिल खुद कमरे के बाहर निकले। चारो तरफ घूम आये मगर कहीं कोई नौकर दिखाई न पड़ा। अन्त में जब अस्तबल में पहुंचे तो देखा कि बीच में एक अँगीठी में आग धधक रही है और उसी के चारो तरफ उनके सभी नौकर चाकर तथा खानसामा बेयरा गाफिल पड़े हुए हैं। उन्होंने आवाज दे देकर उनको जगाना चाहा मगर कोई भी न हिला, यहाँ तक कि गुस्से में भर कर उन्होंने कइयों को ठोकरें भी मारीं पर वे सब लोग कुछ इस तरह मुर्दों' से बाजी लगा कर पड़े थे कि कोई भी अपनी जगह से न हिला न किसी ने आँखें ही खोलीं।

लाचार हो केमिल साहब मोटरघर में गये। दस्तूर के खिलाफ उन्होंने देखा कि दरवाजा खुला हुआ है और शॉफर का कहीं पता नहीं है। कई आवाजें "शंकर, शंकर!" करके दीं मगर जब मोटर हाँकने वाला कहीं से न बोला तो खुद ही अन्दर घुसे। दरवाजा पूरा खोला, सीट पर बैठ गये, और मोटर को चलाने वाला बटन दबाया। एक दफे घड़ घड़ की आवाज हुई और फिर सब शान्त हो गया। कितनी बार कोशिश की मगर मोटर ने जुम्बिश न खाई। आखिर लाल-पञ्जे को कोसते हुए मोटर के नीचे उतरे क्योंकि उन्हें मालूम हो चुका था कि मोटर का इञ्जिन कुछ इस तरह पर बिगाड़ दिया गया है कि जल्दी उसके चलने की कोई आशा नहीं है।

लपकते हुए वे पुनः अपने कमरे में पहुंचे जहाँ इस समय उनकी लड़की रोज खड़ी थी जो उनका बार बार नौकरों को पुकारना सुन ऊपर से नीचे आ गई थी। रोज ने पूछा, "क्या है पापा?" केमिल साहब बोले, "[illegible] को न जाने क्या हो गया है कि सब के सब अस्तबल में मुर्दों' से बाजी लगा कर पड़े हैं। खैर मैं इसी समय एक बहुत जरूरी काम से जा रहा हूं, न जाने कितनी देर तक बाहर रहना पड़े, तुम सब दर्वाजे बन्द कर लो और होशियारी से घर के अन्दर रहो।"

बेचारी रोज ने कितना ही पूछा कि 'पापा बात क्या है? तुम इतना घबड़ाये हुए क्यों हो, और इस तरह रात के समय कहाँ जा रहे हो'? पर केमिल

ने कुछ भी जवाब न दिया और टेबुल में से एक पिस्तौल और कुछ कारतूस निकाल जेब में रखते और रोज से यह कहते हुए कि 'खूब होशियारी से रहना'! बाहर निकल गये। आहट से रोज ने समझा कि वे दौड़ते हुए कहीं जा रहे हैं।

बड़ी देर तक रोज उसी जगह खड़ी सोचती रही कि पापा को क्या हो गया है मगर उसकी समझ में कुछ न आया। आखिर वह अपने पिता की आज्ञानुसार दरवाजा बन्द करने के लिए घूमी ही थी कि उसकी निगाह टेबुल पर पड़ी छुरी और चीठी पर पड़ी। वह ताज्जुब करती हुई उस तरफ बढ़ी मगर उसी समय बाहर से किसी के पैरों की आहट सुनाई पड़ी और तुरन्त ही उसने एक लंबे कद के आदमी को कमरे के अन्दर आते हुए देखा।

इस आदमी को रोज अच्छी तरह पहिचानती थी। ये प्रसिद्ध वैज्ञानिक और विद्वान पण्डित गोपालशंकर थे जिनके साथ इधर कुछ ही दिनों में उसके पिता की बहुत गहरी दोस्ती हो गई थी। गोपालशंकर ने रोज को देखते ही उससे हाथ मिलाया और कहा, "मिस रोज, आपके पिता कहाँ हैं?"

रोज ने बेचैनी के साथ कहा, "वे अभी अभी पैदल ही और भागते हुए कहीं गये हैं, मगर मैं कुछ नहीं जानती कि कहाँ या किस लिए!"

रोज को कुछ जवाब देने के पहिले ही पण्डित गोपालशंकर की तेज निगाहों ने टेबुल पर पड़ी छुरी चीठी गेंद आदि को देख लिया था। वे लपक कर उसके पास पहुंचे और चीठी खोल कर पढ़ा। मजमून पढ़ कर उनके माथे पर कई बल पड़ गये और उनके मुँह से बेचैनी के साथ निकला, "वही हुआ जो मैं सोचता था!"

गोपालशंकर लपकते हुए टेलीफोन के पास पहुंचे मगर घन्टी बजाने के पहले ही उन्होंने कटी हुई तारों को देख कर समझ लिया कि टेलीफोन बेकार है। वे ठुड्डी पर हाथ रख कर कुछ सोचने लगे। रोज जो अपने पिता तथा इनका रंग ढंग देख बहुत घबरा गई थी आखिर अपने को रोक न सकी और गोपालशंकर का हाथ पकड़ कर बोली, "पण्डितजी, आखिर कुछ मुझे भी तो बताइये कि क्या मामला है और इस चीठी में क्या लिखा है?"

गोपालशंकर ने रोज की तरफ एक गहरी निगाह डाली और धीरे धीरे कहा, "लाल-पञ्जा राजा नानकचन्द के महल को मय उनके सब रिश्तेदारों नौकरों और सामानों के उड़ा देना चाहता है। केमिल साहब इस दुर्घटना को रोकने गये हैं पर मुझे डर है कि कहीं खुद भी किसी गहरी मुसीबत में न पड़ जायें!"

(३)

गोमती के पीछे पीछे चल कर काली शक्ल उस बड़े मकान के अन्दर पहुंच गई और कितने ही कोठरी दालानों तथा दरवाजों को लांघते हुए दोनों एक सूनसान अंधेरी कोठरी में पहुंचे जो किसी तरह के सामान से बिल्कुल खाली थी। यहाँ पहुंच गोमती रुक गई और उसकी कोई बात सुन काली शक्ल ने चारो तरफ की आहट लेने बाद अपनी जेब से बिजली की बत्ती निकाल कर बाली। सरसरी निगाह चारो तरफ डालते ही उसने देखा कि वह एक छोटी सी कोठरी में है जिसमें सिर्फ दो दरवाजे दिखाई पड़ रहे हैं, एक तो वही जिसकी राह से दोनों अभी अभी यहाँ पहुंचे थे और दूसरा उसके ठीक सामने की दीवार में जिसके कुन्डे में मोटा ताला लगा हुआ था। यह देखने बाद उसने टार्च बुझा दी और गोमती से पूछा "राजा साहब कहाँ हैं ?"

गोमती०। वे अभी बाग से नहीं लौटे है।

अगर वहाँ रोशनी होती तो हम देखते कि गोमती की बात सुन काली शक्ल के चेहरे पर खुशी की निशानी दौड़ गई जिसको उसने तुरन्त दबाया और फिर पूछा।

काली शक्ल०। तहखाने में जाने का पिछला रास्ता यही है ?

गोमती०। हां, सामने वाला वह दरवाजा खोलने से नीचे जाने की सीढ़ियां मिलेंगी मगर परला बहुत मजबूत है और इस ताले को भी मैं बहुत कोशिश करने पर भी किसी तरह खोल न सकी।

काली०। इसका इन्तजाम मैं कर लूंगा, तुम यह बताओ कि इस वक्त कहीं पहरा तो नहीं पड़ता ?

गोमती०। कहीं नहीं, महल का यह हिस्सा बिल्कुल सूनसान है और इस तरफ कोई रहता भी नहीं।

काली०। तब तो मैं अपना काम करके इसी राह से बखूबी लौट भी आ सकता हूं ?

गोमती०। हाँ अच्छी तरह।

काली०। अच्छा इस तरफ कहीं बिजली का कोई कनेक्शन है ?

गोमती०। मैं ठीक नहीं कह सकती क्योंकि इस तरफ आने की जरूरत न होने के सबब मैं यहाँ सिर्फ एक ही दफे आई हूं।

"अच्छा मैं देखे लेता हूं।" यह कह कर काली शक्ल ने अपनी बिजली [illegible]

पुनः बाली और चारो तरफ की दीवारों पर रोशनी दौड़ाई। सामने ही बिजली की रोशनी का स्विच दिखाई पड़ा। वह उसके पास पहुंचा और ढकना खोल कर अपने जेब से दो तारें निकालीं जिन्हें स्विच के अन्दर वाली तारों के संग सटा कर लपेट दिया। इस समय उसके हाथ में लाल रबर के मोटे दस्ताने थे जिन पर बिजली का कोई असर नहीं हो सकता था।

अब काली शक्ल उस दरवाजे के पास पहुंची जो तहखाने में जाने के लिये था। अपनी गठरी खोल उसने एक विचित्र यन्त्र निकाला जिसमें कुछ कल पुरजे और तारें लगी हुई थीं। इसके ऊपरी हिस्से में दो छोटे मुट्ठे लगे हुए थे जिन्हें उसने ताले के कुंडे के संग सटा दिया और तब बिजली की तारों को उस यन्त्र के साथ जोड़ दिया, साथ ही एक हलकी आवाज उस यंत्र में से आने लगी और देखते देखते वह कुंडा गर्म होने लगा। कुछ ही मिनटों में गर्मी यहाँ तक बढ़ी कि ताला एकदम लाल हो गया और उसके कुन्डे का लोहा मुलायम पड़ गया। एक औजार की मदद से काली शक्ल ने उसे सहज ही में खोल कर दरवाजे से अलग कर दिया।

अब काली शक्ल ने दरवाजा खोला। बिजली बत्ती की रोशनी में देखने से नीचे उतरने के लिए सीढ़ियाँ दिखाई पड़ीं। उसने गोमती से कहा, "मैं तहखाने में जाता हूं, जब तक लौट कर न आऊं तुम बहुत होशियारी के साथ यहीं रहना।" कह कर वह दर्वाजे के अन्दर घुस गया और गोमती को वहीं छोड़ता गया। वह यन्त्र अभी तक उसके हाथ में था। भीतर जाकर उसने कोठरी का दरवाजा बन्द कर लिया और चोरबत्ती की मदद से बेखौफ सीढ़ियाँ उतरने लगा।

कई दरवाजे और कोठरियाँ लांघने तथा सीढ़ियाँ उतरने के बाद वह एक-दम निचली मंजिल में पहुँच गया। रास्ते में जितने ताले मिले सभों को उसने उसी यन्त्र की मदद से खोल डाला और कोई भी उसके रास्ते में बाधा न पहुंचा सका। यन्त्र के साथ की तारें बहुत लम्बी थीं जिससे रास्ते भर उसे काम में लाने में कहीं कोई तरद्दुद न हुआ।

यह तहखाना जिसमें काली शक्ल ने अब अपने को पाया लगभग तीस गज लम्बा और इससे कुछ कम चौड़ा था। बीच में कई लकीरें खम्भों की थीं जिनके ऊपर उसकी भारी छत टंगी हुई थी। काली शक्ल ने एक सरसरी निगाह चारो तरफ डाली और तब पूरब वाली दीवार के पास पहुंचा। यहाँ एक छोटी खिड़की

बनी हुई थी जिसमें लोहे का बहुत ही मजबूत दोहरा पल्ला लगा हुआ था। अपने यन्त्र की मदद से काली शक्ल ने उसे भी खोला और तब बहुत धीरे धीरे पल्ला खोला। जरा देर के लिए अन्दर सिर डाल कर कुछ देखा और तब अपने हाथ का यन्त्र जमीन पर रख अंदर घुस गया।

(४)

गोपालशंकर की बात सुनते ही रोज घबड़ा गई और उनका हाथ पकड़ कर बेचैनी के साथ बोली, "पण्डितजी, किसी तरह मेरे पिता को बचाइये!"

गोपालशंकर ने सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि रोज के खूबसूरत चेहरे पर डाली और तब बोले, "मैं उसी की फिक्र कर रहा हूं मिस रोज, आप बिल्कुल न घबरायें!"

मगर रोज की बेचैनी इस बात को सुन कर कम न हुई। उसकी आंखें डबडबा आईं और उसने भर्राए गले से कहा, "पण्डितजी, मैं खूब जानती हूं कि 'लाल-पञ्जा' बड़ा ही भयानक और खूनी आदमी है। अपने काम के लिए वह किसी के जान की तो जरा भी परवाह नहीं करता। मेरे पिता अगर उसके रास्ते में पड़ेंगे तो वह उन्हें भी.....!"

कहते कहते नाजुक रोज का गला भर आया और वह रो उठी।

गोपालशंकर के दिल पर रोज के आंसुओं ने बड़ा गहरा असर किया और उन्होंने उसका हाथ पकड़ कर दिलासा देते हुए कहा, "मिस रोज, तुम मेरी बात पर विश्वास करो। मैं कसम खाकर कहता हूं कि 'लाल-पञ्जा' चाहे कैसा भी भयानक और खूनी आदमी क्यों न हो पर मैं उसकी आज की इच्छा को कभी भी सफल न होने दूंगा। तुम विश्वास रक्खो कि अगर जरूरत पड़ी तो मैं अपनी जान पर खेल जाऊंगा मगर तुम्हारे पिता पर आंच न आने दूंगा!"

गोपालशंकर की बातों में दृढ़ता थी और उनकी आकृति विश्वास पैदा करती थी। रोज को उनकी बात सुन बहुत कुछ ढाढ़स हुई। उसने अपने को सम्हाला और आंखों के आंसू पोंछ कर कहा, "मुझे आपकी बातों पर विश्वास होता है। आप निश्चय जानिये कि आज अगर आपने मेरे पिता को लाल-पञ्जे के चंगुल से बचा लिया तो मैं जन्म भर के लिए आपकी गुलाम हो जाऊंगी!"

जोश में आकर रोज यह कह तो गई मगर न जाने क्यों आखिरी बात कहते कहते उसका चेहरा लाल हो गया। उसकी बड़ी बड़ी आंखें जो अब तक एकटक गोपालशंकर को ही देख रही थीं यकायक नीचे की तरफ झुक गईं।

बदन में एक हलकी कँपकँपी आ गई। गोपालशंकर पर भी उसकी बातों का अद्भुत असर हुआ मगर उन्होंने अपने भावों को खूब ही सम्हाला और कहा, "जो कुछ थोड़ा बहुत वक्त बचा है वह बातों में बरबाद करने योग्य नहीं है। आप अब सब दर्वाजे बन्द करके भीतर बैठ रहें और मुझे इजाजत दें कि जाऊं और जो कुछ बन सके करूं।"

नीची ही नजर किये हुए रोज बोली, "क्या मैं आप के साथ चल कर कुछ मदद नहीं कर सकती?" जवाब में गोपालशंकर बोले, "कुछ भी नहीं, बल्कि आपके रहने से मेरे काम में रुकावट ही पड़ेगी। आपका यहां रहना ही मुनासिब है क्योंकि मैं बाहर से देखता आया हूं कि आपके सब नौकर चाकर बेहोश पड़े हैं। आप यहीं रह कर अपनी मां की हिफाजत करें और मुझे जाने दें।"

रोज ने आगे जिद न की। एक साबत के लिये उसकी आंखें उठीं और गोपालशंकर के चेहरे पर पड़ीं मगर उनसे निगाह मिलते ही फिर नीचे झुक गईं। गोपालशंकर ने भी एक गहरी निगाह रोज पर डाली और तब उससे हाथ मिला कर बाहर चले गये।

उनके पीछे पीछे रोज दर्वाजे तक आई। जब उनकी झलक अंधेरे में बिल्कुल मिट गई तो एक ठंडी सांस ले वह भीतर लौटी और दर्वाजे बन्द करती हुई ऊपर अपने कमरे में चली गई। खुली हुई खिड़की के पास आकर वह खड़ी हुई और उसी समय कुछ दूर पर 'फट् फट्' की आवाज सुन कर समझ गई कि गोपालशंकर अपनी मोटर साइकिल पर चढ़ कर चले गये।

(५)

दौड़ते हुए केमिल साहब अपने बाग के बाहर निकले और उस सड़क पर चले जो शहर के अन्दर जाती थी।

उन्हें विश्वास था कि सामने की चौमुहानी पर वे पुलिस के सिपाही को जरूर देखेंगे मगर कहीं किसी की शक्ल न दिखाई पड़ी, हां उस जगह एक किराये की गाड़ी जरूर मिल गई जिसका कोचवान कोचबक्स पर बैठा बैठा ऊंघ रहा था। केमिल साहब की आवाज सुन उसकी नींद खुली और उसने उन्हें सलाम करके पूछा, "हुजूर गाड़ी चाहिये?" जवाब में केमिल साहब ने कहा, "जल्दी राजा नानकचन्द के मकान पर चलो—कोतवाली के रास्ते से होकर चलना" और अन्दर जा बैठे। चाबुकों के जोर से गाड़ीवान ने घोड़ों को भगाया और

घड़घड़ करती हुई गाड़ी रवाना हुई। केमिल साहब ने घड़ी निकाल कर देखा—आधे घन्टे के कीमती समय में से पन्द्रह मिनट बीत चुके थे।

थोड़ी देर में गाड़ी कोतवाली के फाटक पर आकर रुकी। केमिल गाड़ी से कूदे और फाटक पर खड़े सिपाही के पास पहुंचे जिसने उन्हें इस तरह बेमौके आते देख ताज्जुब के साथ फौजी सलाम किया। केमिल साहब जल्दी जल्दी बोले, "कोतवाल साहब को मेरा सलाम बोलो और कहो कि दस मिनट के अन्दर बीस सिपाही लिये राजा नानकचन्द के महल पर मुझसे मिलें।"

सिपाही यह सुन बोला, "हुजूर, कोतवाल साहब तो यहाँ हैं नहीं, वे हुजूर का टेलीफोन पा अभी कुछ देर हुई पचास सिपाही लेकर बारकपुर गये हैं।"

केमिल०। (ताज्जुब से) बारकपुर! सो क्यों?

सिपाही०। हुजूर ही ने तो टेलीफोन पर हुक्म दिया था कि 'लाल-पञ्जा' वहाँ गया है, तुम तुरन्त जितने सिपाही मिलें लेकर वहाँ पहुंचो।

घबरा कर केमिल साहब बोले, "मैंने तो कोई..... !" पर तुरन्त ही रुक गये क्योंकि उन्हें ख्याल आ गया कि जरूर यह भी लाल-पञ्जे की ही शैतानी है जो इस तरह कोतवाल को मय मौजूदा सिपाहियों के हटा कर अपना काम बनाया चाहता है। वे बोले, "अच्छा नायब से बोलो कि जो कुछ आदमी अभी हों उनको लेकर तुरन्त राजा नानकचन्द के घर पहुंचे। पास के थानों में भी खबर करता आवे कि जहाँ जितने भी फाजिल सिपाही हों सब जल्दी से वहीं के लिए रवाना हो जायें।"

सिपाही "जो हुक्म" कह कर भीतर चला गया और केमिल साहब ने गाड़ी में बैठ कर पुकारा, "चलो जल्दी, जल्दी हाँको!" गाड़ी पुनः घड़घड़ करती और पेंगें खाती हुई रवाना हुई मगर गाड़ी से कहीं तेज उस लँगड़े भिखारी की चाल थी जो रात काटने के लिए कोतवाली के बगल ही कहीं आड़ में पड़ा हुआ था और जिसने केमिल साहब की बातें बखूबी सुन ली थीं। सिपाही के आते और केमिल साहब के रवाना होते ही वह लँगड़ा भी अपनी जगह से उठा और बेतहाशा एक तरफ को भागा। इस समय उसका लँगड़ापन न जाने कहाँ दूर हो गया था।

थोड़ी ही देर में केमिल साहब की गाड़ी नानकचन्द के महल के फाटक पर

पहुंच गई। केमिल साहब गाड़ी से नीचे उतरे और फाटक के पास पहुंच उसका कुण्डा खटखटाने लगे। बगल की गुमटी से एक आदमी बाहर निकला जिसने साहब को खड़ा देख तुरन्त दरवाजा खोल दिया और लम्बी सलाम की। केमिल साहब ने पूछा, "राजा साहब भीतर हैं?" उसने अदब से जवाब दिया, "हुजूर वे तो अभी बाग से नहीं लौटे।" केमिल साहब बोले, "अच्छा यहाँ और जो कोई सब से जिम्मेदार आदमी मौजूद हो मुझे फौरन उसके पास ले चलो।" वह आदमी बोला, "जो हुक्म हुजूर" और महल की तरफ चल पड़ा। आगे आगे वह आदमी और पीछे पीछे केमिल साहब रवाना हुए।

आधी रात की अँधियारी चारो तरफ फैली हुई थी। उसमें केमिल साहब ने बिल्कुल न देखा कि उनके पीछे एक और आदमी भी आ रहा है जिसके हाथ में बालू से भरा हुआ एक लम्बा थैला है। जिस समय केमिल साहब फाटक और महल के बीच के रास्ते को आधा तय करके एक लतामण्डप के पास पहुंचे उसी समय वह पीछे वाला आदमी आगे बढ़ आया और धोखे में पड़े केमिल साहब के सिर पर उसने बड़ी जोर से वह थैला मारा। बालू की चोट कुछ ऐसी पहुंची कि केमिल साहब के मुँह से एक आह भी न निकली और वे बेहोश होकर उसी जगह गिर पड़े। वह आगे जाने वाला आदमी भी अब पलट पड़ा, उसने पीछे वाले की मदद की, दोनों ने मिल कर केमिल साहब को उठा लिया और महल के पिछवाड़े की तरफ ले जाकर एक झाड़ी में डाल दिया।

(६)

राजा नानकचन्द के महल के कुछ इधर ही गोपालशंकर ने अपनी मोटर साइकिल रोक दी और उसे एक पेड़ के साथ खड़ा कर पैदल बाग की तरफ बढ़े। जब वे पूरब तरफ के कोने के पास पहुंचे उनके कानों में सीटी की हलकी आवाज पहुंची और वे तुरन्त ही रुक गये। देखा कि पास के पेड़ की आड़ में कोई आदमी खड़ा है जिसके बगल में एक काला जानवर, जो कुत्ते सा मालूम हुआ, बैठा दिखाई पड़ता है। गोपालशंकर उधर ही को बढ़े और इनको आते देख वह आदमी भी कुछ आगे बढ़ आया।

गोपालशंकर ने उससे पूछा, "कौन है, मुरारी!" उसने जवाब दिया, "जी हाँ, मैं ही हूँ।" गोपालशंकर ने पूछा, "हबशी भी है?" जवाब मिला, "जी हाँ।"

जल्दी जल्दी गोपालशंकर ने मुरारी से कुछ बातें कीं और तब उस रस्सी

को पकड़ लिया जो मुरारी के हाथ में थी। मुरारी उस तरफ चला गया जिधर पंडितजी अपनी मोटर साइकिल छोड़ आये थे और गोपालशंकर बाग की चार-दीवारी की तरफ बढ़े। वह काला जानवर भी उनके पीछे पीछे रवाना हुआ और लम्प की रोशनी पड़ने से अब हमें मालूम हुआ कि वह कुत्ता नहीं है बल्कि भयानक और खूँखार एक काला चीता है।

चारदीवारी के पास पहुंच गोपालशंकर ने चीते के गले की रस्सी खोल दी और तब बड़ी होशियारी से चारदीवारी पार कर बाग के अन्दर हो गये। एक सीटी बजाते ही वह चीता भी एक उछाल में दीवार पार कर उनके बगल में आ पहुंचा। आहिस्ते चलते हुए गोपालशंकर उस गुमटी के पास पहुंचे जिसके अन्दर पहरेदार अभी भी बेहोश पड़ा था। यहाँ पहुंच कर गोपालशंकर ने बिजली की बत्ती निकाली और उसकी रोशनी में चारों तरफ की जमीन को गौर से देखा। ओस से ढकी हरी हरी घास पर आदमियों के पैरों के निशान साफ मालूम हो रहे थे। गोपालशंकर ने चीते से कहा, "हबशी, इधर !" और तब उसका सिर झुका कर उन निशानों के साथ लगाने बाद कान में भी धीरे से कुछ कहा।

मालूम होता है कि काले चीते 'हबशी' ने गोपालशंकर का मतलब बखूबी समझ लिया। उसने जमीन से नाक लगा कर उस निशान को अच्छी तरह सूँघा और तब उसके गले से गुर्राहट की आवाज निकली। वह जमीन सूँघता हुआ तेजी के साथ महल के पिछवाड़े की तरफ रवाना हुआ और उसके पीछे पीछे गोपालशंकर जाने लगे। इस समय उन्होंने जेब से निकाल कर एक पिस्तौल हाथ में ले ली थी।

पैरों के निशान सूँघता हुआ 'हबशी' ठीक उसी रास्ते पर चलने लगा जिस पर कुछ ही पहिले गोमती के साथ साथ वह काली शक्ल गई थी। कुछ ही देर में वह महल के पिछवाड़े वाले हिस्से में जा पहुंचा। यहाँ पहुंच उसने एक बार सिर उठा अपने मालिक की तरफ देखा। गोपालशंकर ने कुछ इशारा किया जिसे समझ 'हबशी' मकान के अन्दर घुसा।

कोठरी दालान और कमरों को लाँघता हुआ मौत की तरह 'हबशी' ठीक उस कोठरी के दर्वाजे पर पहुंच गया जिसमें गोमती के साथ काली शक्ल गई थी। हबशी के गद्दीदार पैरों की कुछ भी आहट नहीं होती थी और गोपालशंकर ने भी अपने जूते उतार दिये थे अस्तु इनके चलने की भी कोई आवाज नहीं हो

रही थी। यही सबब था कि उस कोठरी के दरवाजे पर पहुँचने के पहिले ही गोपालशंकर के तेज कानों में कोठरी के अन्दर कुछ आदमियों के बात करने की आहट पहुंच गई। वे उसी जगह रुक गये और किसी इशारे से हबशी को भी वहीं रोका। अब वे बड़े गौर से सुनने लगे कि भीतर से क्या आवाज आती है। पहिले तो कुछ समझ में न आया पर कुछ देर बाद साफ सुनाई पड़ने लगा।

एक०। कैमिल को तुम लोगों ने कहाँ छोड़ा ?

दूसरा०। हम लोग पीछे की झाड़ी में छोड़ आए हैं, अगर हुक्म हो तो...

पहिला०। नहीं उसे मेरे अड्डे पर पहुंचा दो, अभी उसका खातमा करने की जरूरत नहीं है, और तुम सुनो, गोमती !

तीसरा०। (जो आवाज से औरत मालूम हुआ) कहिए ?

दूसरा०। मेरे जाने के पाँच मिनट बाद तुम इस बारूद की बत्ती में आग लगा देना और तब अपने सभी साथियों को बटोर कर जहाँ तक दूर हो सके भाग जाना। जितना बने फुर्ती करना क्योंकि पाँच मिनट के अन्दर ही तहखाने में रक्खा हुआ बम फटेगा और उस वक्त इस कम्बख्त मकान की एक एक ईंट अलग हो जायगी जिसमें एक सीधे सादे आदमी का खून किया गया और दूसरे को मौत से बढ़ कर तकलीफें पहुँचाई गईं। अगर नम्बर सतहत्तर ने अपना काम पूरा किया होगा तो नानकचन्द के हाथ और पैर भी उसके धड़ से अलग हो गये होंगे। अच्छा, अब मैं जाता हूँ, तुम लोग बड़ी होशियारी से काम करना।

कह कर वह आदमी दर्वाजे की तरफ बढ़ा मगर उसी समय उछल कर गोपालशंकर उस कोठरी के दर्वाजे पर जा पहुंचे और बोले, "बस खबरदार जो एक कदम भी आगे बढ़ाया होगा !" हबशी भी उछल कर उनके बगल में जा पहुंचा और उसके गले से कलेजा दहला देने वाली भयानक गर्राहट निकली।

एक सायत के लिए सन्नाटा हो गया और उसके बाद एक साथ ही दो खटकों की आवाज आई। गोपालशंकर और लाल-पञ्जा दोनों ही के हाथों के बिजली के टार्च चमक उठे और दोनों ही के हाथों की पिस्तौल सीधी हो गईं। तेज रोशनी से वह जगह भर गई और दोनों ने एक दूसरे की तरफ देखा। लाल-पञ्जे के मुँह से ताज्जुब के साथ निकला, "हैं, पण्डित गोपालशंकर !" और गोपालशंकर के मुँह से निकला, "हैं, मिस्टर प्रमानिक !" बदकिस्मती से उनके सामने उस समय 'आगरा कूरियर' के सम्पादक मिस्टर एम० ए० बसर

निक खड़े थे। दोनों के मन में इस समय दो बातें घूम रही थीं। लाल-पञ्जा सोच रहा था—"गोपालशंकर मेरा भेद जान गया !" और गोपालशंकर सोच रहे थे—"क्या प्रमानिक ही लाल-पञ्जे के भेष में यह सब गजब कर रहा था !!"

एक सायत के लिए पुनः सन्नाटा हो गया जिसमें दोनों ही ने अपने अपने को काबू में किया। इसके बाद लाल-पञ्जा बोला, "गोपालशंकर, इसमें शक नहीं कि तुम बड़े ही बुद्धिमान आदमी हो। आज तुम्हीं पहिले आदमी हो जिसे यह मालूम हो पाया है कि लाल-पञ्जा और प्रमानिक एक ही व्यक्ति हैं। मैं तुम्हारी बुद्धि की कद्र करता हूं और इसी से कहता हूं कि इस भेद को अपने ही दिल में छिपा रक्खो और मुझे जाने दो, मेरा रास्ता रोक कर व्यर्थ अपनी जान के ग्राहक न बनो !"

गोपालशंकर ने यह सुन कहा, "प्रमानिक, और मैं तुम्हारी तारीफ करूंगा ! तुम्हारी सी हिम्मत और जीवट का आदमी मैंने आज तक कहीं नहीं देखा। और कोई वक्त होता तो मैं तुम्हारी बहादुरी का ख्याल कर तुम्हें छोड़ देता, मगर इस समय मैं कानून और इन्साफ की तरफ से तुम्हें पकड़ने पर मुकर्रर किया गया हूं, इससे तुम्हें छोड़ नहीं सकता। अब तुम भी बुद्धिमानी दिखलाओ और चुपचाप मेरे कैदी बन जाओ। अगर तुम भागना चाहोगे तो ख्याल रखना कि मेरी पिस्तौल का निशाना अचूक है और हबशी के दाँतों में दब कर कोई हड्डी साबूत नहीं बचती !"

लाल-पञ्जे ने एक भीषण हँसी हँस कर कहा, "मेरे तीन तक गिनने के पहिले अगर तुम मेरा रास्ता नहीं छोड़ दोगे तो तुम्हारी खोपड़ी टुकड़े टुकड़े हो जायगी !"

इतना कहते ही लाल-पञ्जे ने अपने हाथ की बिजली की बत्ती बुझा दी और उसके हाथ वाले पिस्तौल की गोली ने गोपालशंकर के हाथ की बत्ती के टुकड़े टुकड़े कर डाले। गोपालशंकर ने बत्ती हाथ से फेंक दी और चीते की सलकार कर कहा, "हबशी, लेना, जाने न पावे !!"

अंधेरे में 'लाल-पञ्जे' की आवाज आई, "एक !" गोपालशंकर ने अपने हाथ की पिस्तौल सम्हाली और कहा, "प्रमानिक, होशियार !!" भीतर से आवाज आई, "दो !" और कुछ ही देर बाद 'तीन' की आवाज के साथ ही एक गोली सनसनाती हुई गोपालशंकर की कनपटी के पास से निकल गई। जवाब में इन्होंने भी पिस्तौल चलाई और तब रात के उस सन्नाटे में दनादन पिस्तौलों की आवाजें गूंज उठीं जिनके साथ 'हबशी' की भयंकर गुर्राहट मिली हुई थी।

भीतर से कोई आदमी बाहर निकला और साथ ही हबशी उसके ऊपर उछला। 'हाय' की आवाज के साथ वह आदमी जमीन पर गिरा। उसी समय एक और आदमी बाहर निकला। हबशी ने उसके पैर की नली पकड़ उसे भी जमीन पर गिरा दिया। गोपालशंकर इस समय बाएँ हाथ से पिस्तौल चला रहे थे क्योंकि उनके दाहिने हाथ को एक गोली ने बेकार कर दिया था, फिर भी वे हिम्मत नहीं हार रहे थे क्योंकि उन्हें विश्वास था कि लाल-पञ्जा अभी तक कोठरी के बाहर नहीं निकला है।

सूनसान और सन्नाटे मकान में इन गोलियों की आवाजों, चीते की गुर्राहट, और जख्मियों की चिल्लाहट ने नर्क का दृश्य उपस्थित कर दिया था जिसने बात की बात में घर भर को जगा दिया। पचीसों आदमी घबड़ा कर उठ खड़े हुए और पहरेदार लालटेनें और बन्दूकें लिए उधर ही को दौड़े जिधर से ये आवाजें आ रही थीं। गोपालशंकर का ध्यान उस तरफ जरा सा बँटा ही था कि लाल-पञ्जे की एक गोली उनके घुटने में लगी जिसके साथ ही वे गिर पड़े। उनकी आँखों के आगे अंधेरा छा गया और उन्होंने बेहोश होते होते सुना, "गोपालशंकर, मुझसे लड़ कर तुमने दैव से टक्कर ली है, होशियार रहना !" जिस समय हबशी एक तीसरे आदमी को अपने नीचे दबोच रहा था कोई व्यक्ति उसके बगल से इस आहिस्तगी से निकल गया कि उसको आहट तक न लगी। इस समय गोपालशंकर बेहोश हो चुके थे।

* * *

होश में आने पर गोपालशंकर ने अपने को मुलायम बिस्तरे पर लेटा हुआ पाया। उनके बदन पर जगह जगह पट्टियाँ बँधी हुई थीं और पलंग के सिरहाने की तरफ मिस्टर केमिल बैठे हुए थे जिनके माथे में भी एक मोटी पट्टी बँधी हुई थी। पैताने की ओर रोज बैठी हुई एकटक गोपालशंकर की तरफ देख रही थी।

गोपालशंकर ने हँस कर दोनों की तरफ देखा और कहा, "केमिल साहब, क्या मैं ज्यादा देर तक बेहोश रहा ?"

केमिल साहब बोले, "जी हाँ, पूरे चार घण्टों के बाद आपको होश आया है।"

गोपाल०। और लाल-पञ्जा ? क्या वह पकड़ा गया ?

केमिल०। नहीं, फिर भी मुझे आशा है कि जरूर पकड़ आयगा, क्योंकि भागती समय उसके बदन से टपकते हुए खून के दाग बहुत दूर तक पाये गये हैं

जिनके पीछे शिकारी कुत्ते लेकर कई जासूस गए हैं। उसके दो साथी मारे गये और गोमती नामक औरत बुरी तरह से जख्मी हुई है, मगर मुझे अफसोस है कि आपका प्यारा 'हबशी' इस लड़ाई को पार न कर सका। गोलियों से उसका बदन छलनी हो गया था और उसने उसी जगह जान दे दी।

गोपाल०। और राजा नानकचन्द ?

केमिल०। अफसोस, आपके नौकर मुरारी ने जिस समय उनका पता लगाया उस समय हत्यारे उनका खून करने ही वाले थे। यद्यपि मुरारी की बदौलत उनकी जान बच गई मगर दोनों हाथ बेकार हो गये जिन्हें शायद काट देना पड़ेगा। फिर भी इतना जरूर हुआ कि उनका महल और रिश्तेदार बच गये क्योंकि बम में आग नहीं लगाई जा सकी। खैर मुझे सब से ज्यादा खुशी आपको खतरे के बाहर पा कर हो रही है। डाक्टरों का कहना है कि आपके जख्म बहुत जल्दी ही भर जायेंगे।

गोपाल०। (हँस कर) पर मुझे इसकी इतनी खुशी नहीं जितनी लाल-पञ्जे के निकल जाने का अफसोस है!

केमिल०। अगर वह पकड़ा न भी गया तो भी फिर इधर आने का नाम कदापि न लेगा। आपने उसे जो सबक सिखा दिया है वह उसे जन्म भर न भूलेगा।

गोपालशंकर ने इसका कोई जवाब न दिया क्योंकि उनके कानों में लाल-पञ्जे के वे शब्द गूँज रहे थे जो उन्होंने बेहोश होते हुए सुने थे—"गोपालशंकर, मुझसे लड़ कर तुमने दैव से टक्कर ली है! होशियार रहना!!" वे कुछ देर तक चुप रहे, इसके बाद बोले—

गोपाल०। खैर जो होगा देखा जायेगा, बहुत बड़ी खुशी तो मुझे आपको सही सलामत देख कर होती है क्योंकि मैं मिस रोज से वादा कर चुका था कि चाहे जैसे भी होगा आपके ऊपर जरब न आने दूंगा।"

केमिल०। जी हाँ रोज ने वह बात मुझसे कही थी, मगर मुझे ताज्जुब इस बात का है कि आप को यह सब हाल क्योंकर मालूम हुआ और आप क्यों कर ऐसे ठीक मौके पर वहाँ जा पहुंचे?

गोपाल०। आपने लाल-पञ्जे की नोट बुक के कुछ पन्नों के जो फोटो मुझे दिये थे उनसे मैंने बहुत कुछ मतलब लगा लिया और उन्हीं से मुझे लाल-पञ्जे का कच्चा चिट्ठा भी मालूम हो गया। मैं आपको वे कागजात दिखाऊँगा जिन

संयोग यह कि उनसे प्रकट होता था कि उन कामिनीदेवी के नाना के किसी रिश्तेदार के दोनों हाथ राजा नानकचन्द की बदौलत काट डाले गये थे और उस खानदान के बहुत से जेवर नानकचन्द ने हजम कर लिये थे। इसीलिए लाल-पञ्जे ने निश्चय किया था कि वह नानकचन्द के हाथ और पैर दोनों काट डालेगा और उनके मकान और रिश्तेदारों को जड़ मूल से नाश कर देगा तथा यह कार्रवाई आज ही के दिन होगी भी जिस दिन वह पहली घटना हुई थी। बस यही हाल जान मैंने इस उपद्रव को रोकने की कोशिश की मगर अफसोस कामयाब न हो सका।

केमिल०। आपने जो कुछ कामयाबी पाई वह मैं और इस सूबे क्या देश की तमाम पुलिस और जासूस भी न पा सके। आपकी कार्रवाई का हाल लाट साहब तक पहुंच चुका है जो आपसे खुद तो मिलेंगे मगर मैं उनकी आज्ञानुसार उनकी तरफ से आपको धन्यवाद और बधाई देता हूं। अच्छा अब मैं जाता हूँ क्योंकि डाक्टरों ने ज्यादा बातचीत कर आपको थकाने से मना किया है। रोज, तुम इनके पास बैठना और सब तरह से ख्याल रखना।

गोपालशंकर से हाथ मिला केमिल साहब चले गये। उस समय रोज और गोपालशंकर की चार आँखें हुईं। रोज की आँखों से इस समय प्रेम और सहानुभूति का कुछ ऐसा भाव टपक रहा था कि उसने गोपालशंकर के हृदय में आशा की एक नई लहर पैदा कर दी।

॥ समाप्त ॥

लाल-पञ्जा और गोपालशंकर की आगे की नोक-झोंकों का हाल जानने के लिये हरी बुक डिपो द्वारा प्रकाशित 'रक्त-मण्डल' नामक उपन्यास पढ़िये।

—: कालजयी उपन्यास :—

अनेक दशक एवं अनगिनत संस्करणों के साथ निरन्तर बढ़ती लोकप्रियता के अनछुए सोपान—

बाबू देवकीनन्दन खत्री रचित—

चन्द्रकान्ता
चन्द्रकान्ता सन्तति (६ खण्डों में)
भूतनाथ (७ खण्डों में)
रोहतासमठ (२ खण्डों में)
(सजिल्द तथा बिना जिल्द दो संस्करणों में)
कुसुमकुमारी
नरेन्द्र मोहिनी
काजर की कोठरी
वीरेन्द्रवीर
गुप्तगोदना

देवकीनन्दन खत्री
बाबू देवकीनन्दन खत्री स्मृति-ग्रन्थ
अपने बेगाने
पी के घर

श्री दुर्गाप्रसाद खत्री लिखित—

प्रतिशोध
लाल-पञ्जा
रक्त मण्डल
सुफेद शैतान
सुवर्ण-रेखा
स्वर्गपुरी
सागर-सम्राट
साकेत
काला चोर
बलिदान
कलंक-कालिमा
संसार चक्र
माया (२ भाग)
आकृति विज्ञान

तथा अन्य रोचक हिन्दी पुस्तकें हमसे मँगाइये ।

सन् १८८८ में बाबू देवकीनन्दन खत्री द्वारा संस्थापित—

लहरी बुक डिपो

श्री दुर्गाप्रसाद खत्री मार्ग, वाराणसी ।

॥ श्रीः ॥

लाल पञ्जा

(वैज्ञानिक क्रान्तिकारी उपन्यास)

श्री दुर्गाप्रसाद खत्री लिखित

लहरी बुक डिपो
श्री दुर्गाप्रसाद खत्री मार्ग, रामकटोरा
वाराणसी